



# जैन-व्रत-विधानं संग्रह

[ व्रतोपयोगी आरग्यरु अनेक विषयों सहित ]

लेखक

चिकित्सा चूडामणि प० रामलाल जैन राजवैद्य  
सचालक—श्री म्याह्लाद जैन प्रौद्योगिक,  
मु० पटा पो० टीकमगढ़ ( विन्ध्यप्रदेश )



प्रकाशक

श्री वैद्य रामलाल राजे ड्रमुमाज जैन  
मु० पटा, पो० टीकमगढ़ ( विन्ध्यप्रदेश )

श्री बीमनिर्वाण समस्त ०४७८

फरवरी १९५२

प्रथमावृत्ति  
१०००

}



मूल्य  
दो रुपये

\*\*\*\*\*

आपने यह समूह महान् परिश्रम से किया । एक ही पुस्तक से व्रत-विधान सरलता से मिल सकता है । आपका परिश्रम प्रशंसनीय है ।

पौप घदि नयमी  
स० २००८

•

ग्रा० शु० चि०  
गणेश वर्मा

\*\*\*\*\*

श्री प्रभरजेन ग्रन्थालय ।

ना० । काजुवाइ

वीरानेर,

रुम्पण्ड

प्रात स्मरणीय, पूज्यपाद, विश्वकी अनुपम स्मृति, आदरा महापुण्य,  
सिद्धांत चाया नार शम्भुपारजत, चारिभ्रमूर्ति, आर्षमागोपदेष्टा,  
ज्ञाननिधि न्यायाचार्य पूज्य श्री १०५ सुल्लक गणेश  
प्रसादनी वर्णी न नरनमलो म उहा न प्रवचनो  
द्वारा प्रबोधित होकर वह 'जेन नल विधान  
सग्रह' लेखन द्वारा नदा और भक्ति  
न साथ सादर समर्पित है



सुल्लक  
विश्वप्रसाद  
वर्णी

## दो शब्द

इस पुस्तक के प्रकाश में आने पर थामिक अनुष्ठान सम्प्रदायी एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक की कमी की पूर्ति होगी, ऐसा मैं निश्चयपूर्वक कहता हूँ। पुस्तक के लेखक ज्योतिपरब्र, प्रतिष्ठाचार्य, राजनैय भिषग्वर प० बाल्लाल जी समाज के एक सुयोग्य अनुभवी विद्वान् हैं। यदि ये प्रकाशपूर्ण क्षेत्र में होते तो मैं समझता हूँ कि इनके द्वारा इससे भी अधिक समाज, धर्म और साहित्य की सेवा होती। ये एक छिपे हुए प्रतिभाशाली विद्वत्वरब्र हैं।

भावना है कि समाज इनकी इस पुस्तक से मूब लाभ उठाये।

२३ १२ ५१

दरबारीलाल जैन कोटिया

यायाचार्य

मुख्याध्यापक—श्री समन्तमद्र निगालय, देहली

## आय वक्तव्य

चतुर्गति रूप सगर में एक मनुष्य पयाय ही जीव को मुग्न होनेवाली है। अच्छे से अच्छे को कुछ भी बान यह जीव करना चाहे एसा पयाय में कर सकता है। सगर में जितने भी श्रेष्ठ व्यक्ति हुए ह, बिन्होंन लोकातिशानी काय किए ह, कर रहे ह और भाग्य में करेंगे वे सब मनुष्य व ही ह। मनुष्य-एट रिना कोड भी जीव अपना भला नहीं कर सकता। एसा मदान् एकर पयाय का प्राण कर मत मयमाप्तिपूजक यन्धि भमसाधन नहीं किया तो मनुष्य पयाय का पाना नहीं पाने के समर है।

“व्रतेन यो रिना प्राणी, पगुरेव न मशय ।”

बीजना अनास्थान रिगो गति है, जहाँ एक श्वास में १८ सर १८ और मरण करना पड़ता है, एर अदार क अनन्तों भाग जहाँ शान शेष रता है, जहाँ अन्त काल तक निवास करना पड़ता है। किसी मगन् पुण्यम व एय मे यन्धि बाल-लाघ प्राप्त हो जाय तो एमें मे निरलकर पर स्थानों में अना है मा वगै भी उम अनन्त काल तक निवास करना पड़ता है। कनाचिन् और किमा रिशेष पुण्योदयनशात् प्रस पयाय प्राप्त हा जाय और हीरिद्राति पचेन्द्रियतियेच तक पहुँच जाय फिर भी उसे आमरल्याण करगे का का योग्य साधन नहीं मिलता। यन्धि किसी मदान् पुण्य मे मनुष्य पयाय प्राप्त हा जाय और हीनकुलादि (जगै रि घम साधन योग्य सामग्रा १ हो) में १८ हुआ तो भी आमरल्याण करन से वचित ही रहता है।

निगो पयाय मे निरलकर इनर पयायों में निवास करने का का सिध मे हजार सागर और ६६ काति पूवमा का ही है, जिममे १००० सागर ता द्रु और नरक पयाय में नीत करता है तथा १००० सागर निरलकरतियेच मे। और ४८ काति पूव पचेन्द्रियतियेच पयाय में नीत करता है। शेष ४८ काति पूव मनुष्य गति का सो उसमें १६ काति पूव

नपुंसक पदार्थ, और २६ भाग पृथ प्रमाण स्त्री पक्ष में वर्गीकृत करता है।  
अत्र रह गिरा २६ भाग पुरुषों का अर्थात् प्रमाण मनुष्य पक्ष में वर्गीकृत  
है। कर्मात्तु वामान पक्ष ही जगत अर्थात् मनुष्य पक्ष में वर्गीकृत  
गतात्मनः किं परं न कर्मात्तु राशि म आकर यदौ अनन्तकाल तक  
निवास करता महत्ता।

“यह माणुष पक्षीय सुकुल सुन यो जिग्यवाली,  
इहि विधि गये न मिल सु‘मणि’ ज्यो उन्धि समानी ॥”

इसलिए इस मनुष्यपक्ष का एक क्षण भी उपेक्षा नहीं करना चाहिए।

श्री भगवती पुण्या का जीवन सत्य अधिक ऊँचा होता है। एक  
निर्गमि। वना भगवती का पुत्र स्वर्गात्तु और हर्षो न द्वाग वर्नीय दान  
है। श्री भगवती पुण्या के नरक और निधन गति का ज्ञान हो जाता है  
इसलिए वह वन सत्य के प्रभावपर मन्त्रिक पक्ष को प्राप्त करता हुआ  
अन्न में निर्गमालत हो अक्षय सुन (मोक्ष) का प्राप्ति कर लेता  
है। अतः वन सत्य प्रामाण्यस्य रूप नगर उद्दि में प्रभाव कारण है।  
मनुष्यपक्ष वा ता श्री होता निदान आश्चर्य है।

इसी उद्देश को लक्ष्य में रखते हुए मा इग वत निदान तामक प्रथ  
का संकलन किया है। धनुष पक्ष करने पर भी हमें १६४ प्रजा का ही  
सम्बन्ध हो सकता है। जैसे हम संकलन जग समाज का लाभ पहुँचा तो मे  
अपने इस परिश्रम को फल समझेंगा। तथा भविष्य में भी श्रेष्ठ अनुपम  
सामग्रियों में विन्यास ‘वृत्त’ योतिपरश्चर और ‘प्रतिज्ञा’ जैसे आश्चर्यक  
प्रथा को समाज के कर्ममार्गों में उदरित करने का शीघ्र प्रयत्न करेंगे।

—चारसाल जैन राजवैद्य

# विषयानुक्रमणिका

	पृष्ठ
आद्य ब्रह्मण्य	७, ८
विषय-सूची	८ से १६
मंगलाचरण	१७
१-ध्यातक का लक्षण	१८
२-ध्यातक के अष्टमूलगुण	१८
३-ध्यातक में मुख्य आठ चिह्न	१८
४-ध्यातक में चार भावनाएँ	१८
५-ध्यातक के दैनिक पट्टकम	१८
६-ध्यातक के मुख्य बाह्यचिह्न	१९
७-ध्यातक के गार्स अभिनय	१९
८-ध्यातक के दैनिक सत्रह नियम	१९
९-ध्यातक के सत्रह यम	१९
१०-ध्यातक के इमीस गुण	१९
११-व्रत की आवश्यकता	२०
१२-व्रत का लक्षण	२०
१३-यथाशक्ति पालना आवश्यक है	२०
१४-व्रत अनशन तप का भेद है	२०
१५-व्रत निरतिचारपूर्वक हा पाले	२१
१६-व्रतों में शिथिलता ही अतिचार है	२१
१७-व्रत की रक्षा यत्नपूर्वक करे	२२
१८-व्रत भंग होनेपर प्रायश्चित्त लेवे	२२
१९-व्रत के दिनों में अनिवाय कर्तव्य	२२
२०-व्रत का उद्यापन	२३
२१-उद्यापन विधि	२३
२२-भाद्रपद में व्रतों की प्रधानता	२४
२३-व्रत करने का फल	२५



1-व्रती के भोजन के अंतराय	२५
2-व्रतोपयोगी आग्रह्यक विधियाँ	२६
3-प्रोषध और उपवास	२६
4-उपवास के भेद	२६
5-उपवास का लक्षण	२७
6-उपवास के दिन त्रिनेत्र पूजन	२७
7-स्त्रियों की व्रताचरणान्तिका उल्लेख	२७
8-व्रतों की दो तरह की मर्यादें	२९
9-व्रत शीलसहित पाला करे	३०
10-शील का नय चाहे	३०
11-आयक के नय चदोरा के म्यान	३०
12-प्रासुक द्रव्य	३०
13-नल के छगा का प्रमाण	३०
14-नल की मयादा	३१
15-चलगालन के अतिचार	३१
16-जल के एक बिन्दु में जीव सरया	३१
17-पान पान के पदार्थों की मयादा	३१
18-द्विदल विचार	३३
19-द्विदल के भेद	३४
20-वही जमाने हेतु शुद्ध जामन	३४
21-व्रत में विशेष	३४
22-अष्टादिका व्रत	३५
23-पोडश कारण व्रत	३५
24-दशतक्षण व्रत	३७
25-रत्नत्रय व्रत	५०
26-पुष्पाजलि व्रत	४१
27-मुष्टिप्रधान व्रत	४२

५१-मकटहरण व्रत	४२
५२-नित्यरसो व्रत	४३
५३-पट्टरसी व्रत	४३
✓ ५४-त्येष्ट जिनचर व्रत	४३
✓ -रथिवार व्रत	४४
५५-गुणोकार पतीसी व्रत	४५
५६-त्रेपण त्रिया व्रत	४६
५७-नवमार व्रत	४७
५८-चौबीस तीर्थंकर व्रत	४८
✓ ५९-करमचूर व्रत	४८
६०-समकित चौबीसी व्रत	४९
✓ ६१-भायनापत्रीसी व्रत	४९
६२- " अन्य प्रकार	५०
६३-लघु पल्लविधान व्रत	५०
६४-शुद्ध पल्लविधान व्रत	५०
६५-नक्षत्रमाता व्रत	५३
६६- " अन्य प्रकार	५४
✓ ६७-लघिविधान व्रत	५४
६८-सप्तशुभ व्रत	५६
✓ ६९-तर्पुसिंहनिष्पीडित व्रत	५६
७०-शुद्धनिष्पीडित व्रत	५७
७१-भाद्रघनासिंहनिष्पीडित व्रत	५८
७२-त्रिगुणमार व्रत	५९
✓ ७३-चारित्रशुद्धि ( याचहसी चोताम व्रत )	९
७४-सयतोमद्र व्रत	६०
७५-महानपनोमद्र व्रत	६१
७६-दुसहरण व्रत	६२

७८-जिनपूजापुरदर व्रत	६२
७९-लघु धमचक्र व्रत	६३
८०-बृहद् धमचक्र व्रत	६३
८१-बृहद् जिनगुणसपत्ति व्रत	६४
८२-मध्यम जिनगुणसपत्ति व्रत	६५
८३-लघु जिनगुणसपत्ति व्रत	६६
८४-बृहत्सुखसपत्ति व्रत	६६
८५-मध्यम सुखसपत्ति व्रत	६७
८६-लघु सुखसपत्ति व्रत	६७
८७-रुद्रवसत व्रत	६७
८८-शालकल्याणक व्रत	६८
८९-श्रुतिकल्याणक व्रत	६९
९०-चन्द्रकल्याणक व्रत	६९
९१-लघुकल्याणक व्रत	६९
९२-मध्यकल्याणक व्रत	७०
९३-श्रुतस्त्रय व्रत	७०
९४-          "  अन्य विधि	७१
९५-श्रुतदान व्रत	७१
९६-पंच श्रुतदान व्रत	७२
९७-ज्ञानपञ्चामी व्रत	७३
९८-बृहद् रत्नावलि व्रत	७३
९९-मध्यम रत्नावलि व्रत	७३
१००-          "  अन्य प्रकार	७४
१०१-लघु रत्नावलि व्रत	७४
१०२-बृहद् मुक्तावलि व्रत	७५
१०३-मध्यम मुक्तावलि व्रत	७
१०४-लघु मुक्तावलि व्रत	७५

- १०५-एकावलि व्रत  
 ✓ १०६-लघु एकावलि व्रत  
 ✓ १०७-द्विकावलि व्रत  
 १०८-लघु द्विकावलि व्रत  
 १०९-बृहत् षनकावलि व्रत  
 ११०-लघु षनकावलि व्रत  
 १११-लघु मृदगमध्य व्रत  
 ११२-बृहद् मृदगमध्य व्रत  
 ११३-मुरजमध्य व्रत  
 ११४-वज्रमध्य व्रत  
 ११५-भेदपक्ति व्रत  
 ✓ ११६-अक्षयनिधि व्रत  
 ✓ ११७-मेघमाता व्रत  
 ११८-सुराकारण व्रत  
 ११९-समवशरण व्रत  
 ✓ १२०-आफाशुपचमी व्रत  
 १२१-अक्षयफलदशमी व्रत  
 १२२-निर्दोषसप्तमी व्रत  
 १२३-चन्दनपष्टी व्रत  
 १२४-सुगंधदशमी व्रत  
 ✓ १२५-अनंतचतुर्दशी व्रत  
 ✓ १२६-धयणद्वादशी व्रत  
 १२७-श्रेतपचमा व्रत  
 १२८-शील व्रत  
 १२९-सर्वाथसिद्धि व्रत  
 १३०-तीनचौथीमा व्रत  
 ✓ १३१-जिनमुराचलोकन व्रत

१२१-मुकुटसप्तमी व्रत	९१
१२२-निनरानि व्रत	९१
१२४-नवनिधि व्रत	९३
१३ -अशोकरोहिणी व्रत	९३
१६-बोमिलापचमी व्रत	९३
१३७-रन्मिणी व्रत	९६
१३८-कमनिजरा व्रत	९६
१३९-परमचूर व्रत	९६
१४०-ग्रनस्तमा व्रत	९६
१४१-निर्जरपचमी व्रत	९७
१४२-त्रयलचद्रायण व्रत	९७
१४३-वारह विजोरा व्रत	९९
१४४-पेसानय व्रत	९९
१४ -पेसोदग व्रत	१००
१४६-मनिक व्रत	१००
१४७-श्रुतिपचमी व्रत	१०१
१४८-वृष्णापचमा व्रत	१०१
१४९-नि शत्य अष्टमी व्रत	१०१
१५०-लक्ष्मणपक्षि व्रत	१०२
१५१-दुग्धरसा व्रत	१०२
१५२-वनदकलश व्रत	१०२
१५३-कलीचतुदशी व्रत	१०३
१५४-मोक्षसप्तमी व्रत	१०३
१५५-रोटतीज व्रत	१०३
१५६-शीलसप्तमी व्रत	१०४
१५७-वीरशासनजयती व्रत	१०४
१५८-त्री वीरजयती व्रत	१०४

१५९- श्री आदिनाथजयती व्रत	१००
१६०- आदिनाथशासनजयती त्रत	१०१
१६१- आदिनाथनिर्वाणोत्सव त्रत	१०१
१६२- नदसप्तमी व्रत	१०५
१६३- बाजी धारम व्रत	१०६
१६४- ऋषिपंचमी व्रत	१०६
१६५- त्रिलोकी त्रत	१०६
१६६- आचारवर्धन व्रत	१०७
१६७- सुदर्शन व्रत	१०७
१६८- रक्षावधन व्रत	१०८
१६९- लमावणी त्रत	१०८
१७०- दापमालिका त्रत	१०८
१७१- चातीस अतिशय व्रत	१०९
१७२- गव अष्टमी व्रत	११०
१७३- तार्थवर बेला व्रत	११०
१७४- शिवकुमार वला त्रत	१११
१७५- मोन त्रत	११२
१७६- विमानपत्ति व्रत	११४
१७७- वीरह तप व्रत	११५
१७८- नदाश्वरपत्ति व्रत	११७
१७९- परमेष्ठिगुण व्रत	११८
१८०- श्रुतज्ञान व्रत	१२०
१८१- कमल्य व्रत	१२१
१८२- गरुडपंचमी व्रत	१२०
१८३- पृष्ठी व्रत	१२२
१८४- द्वादशी व्रत	१२२
१८५- बेला व्रत	१२३

१८६-षष्ठम वेला व्रत	१८७	२०६-फलदशमी व्रत	१३
१८७-तेला व्रत	१८८	२०७-दौपदशमी व्रत	१३
१८८-अष्टमी व्रत	१८९	२०८-धृपदशमी व्रत	१३
१८९-चतुर्दशी व्रत	१९०	२०९-भावदशमी व्रत	१३
१९०-निवाणकल्याणक तेला व्रत	१९१	२१०-व्योनदशमी व्रत	१३
१९१-लघुपचक्रत्याणक व्रत	१९२	२११-उडडदशमी व्रत	१३
१९२-बृहत्पचक्रत्याणक व्रत	१९३	२१२-वारादशमी व्रत	१३
१९३-पचक्रत्याणक तिथिचक्र	१९४	२१३-भटारदशमा व्रत २१४-मृतकप्रमाण	१३ १३२ से १४
१९४-पचपोरिया व्रत	१९५	२१५-सक्षिप्तप्रायश्चित्त	१४
१९५-चदनपष्टी व्रत	१९६	२१६-आयोत्सर्ग विधि	१४
१९६-कौमारसप्तमी व्रत	१९७	२१७-स्वामायिक विधि	१४
१९७-मनचिती अष्टमा व्रत	१९८	२१८-मेरी भावना	१४
१९८-सुगन्धदशमी व्रत	१९९	२१९-इष्ट कामना	१४
१९९-दशमिनिमानी व्रत	२००	२२०-यह ग्रन्थ चिरकाल तक रह	१४
२००-सौभाग्यदशमी व्रत	२०१	२२१-ज्ञान-याचना	१४
२०१-चमकदशमी व्रत	२०२	२२२-श्रुतिम मंगल कामना	१४
२०२-चहारदशमी व्रत	२०३	२२३-वारह भावना	१४
२०३-तमोरदशमी व्रत	२०४	२२४-प्रकाशकीय परिचय	१४
२०४-पानदशमी व्रत	२०५	२२५-ग्रन्थकता का परिचय	१४
२०५-फलदशमी व्रत	२०६		

श्री शक्तिनाथाय नमः

# जैन-व्रत-विधान संग्रह



मंगलाचरण

दोहा-पद्य परमगुरुकी प्रणमि, जिणवाणी उर धार ।  
व्रत विधान भाषा सहित, लिखतैं स्वर पर हितकार ॥

छन्द—

एक शतक अथ साठ तीन व्रत, व्रतविधानकी क्रिया महान ।  
सबके मन्त्र विशद उच्चारण, दर्शाये आगम परमान ॥  
साध-साधमें पृथक् रूपसे, सबही मर्यादा सुखकार ।  
तिनके फलमे जिन भवि जाने, पाया स्वर्ग मोक्षका द्वार ॥  
ऐसे 'व्रत विधान संग्रह' की लिखतैं अनेक शास्त्र अनुसार ।  
अल्पबुद्धि अरु विषय गहन है यह प्रयास मेरा हितकार ॥  
होगा भगवत शक्तिनाथके सत्प्रसादसे पूरण ग्रन्थ ।  
तथा भय जनके अग्रहसे होगा यह ५५ ५५



## व्रतयोग्य पात्रके आवश्यक चिह्न-

### श्रावक का लक्षण

श्रद्धा और विवेक पुन निया सहित जो होय ।

श्रावक वह कहलात है तीनों बिन नहीं कोय ॥

मासम—श्र ( श्रद्धा ) व ( विवेक ) क ( निया ) अर्थात् विवेक और निया इन तीन गुणा स चो युक्त न तस श्रावक कते ह भी गुण न्यून ही तो ही ।

### श्रावकके अष्टमूल गुण

प्रथमहिं पचउदम्यर'फल या मद्य' मास' मधु' तीन मक्का प्रस जायोंका सक रपीवध बिन'द्याना जल निशि आहार इनका त्याग करो जिनदर्शन' यही मूलगुण अष्टप्रकार धारण कर श्रावक कहलाता, इन बिन जैनीके धिक्कार

### श्रावकके मुख्य आठ चिह्न

सत्र अयाय' अमन्य त्यागकर तजो अहितकारी मिथ्यात निशिका' भोजन बिन द्याता' जरा हरो व्यसन' दुखकारी स जीर्णोष्ठी करणा' मन धारो कर 'जिनदर्शन सध्या प्रा मुख्य चिह्न यह जैनीके हैं निश्चय मानो मेरे धात

### श्रावककी चार भावनाएँ

मेत्री' अरु प्रमोद' करुणामय' भाव करो 'माध्यस्थ विचार इन भावोंके होने पर ही होता है निज आत्म सुधार

### श्रावकके दैनिक पट्ठम

जितवरपूजा' गुरुकी भङ्गी' शास्त्र'ध्वण सयम' तप' दान पट्ठ आवश्यक कम प्रतिदिन भक्ति भावसे करो सुजान

### श्रावकके मुख्य पाप चिह्न

निशि'का भोजन विनछाना जल' गहँ नहीं सम्यक् मतिमान् ।  
करँ नित्य श्री 'जिनके दर्शन गह्यचिह्न जैनीरे जान ॥

### श्रावकके पाईस अभक्ष्य

श्रोला' घोरवटा' निशिभोजन' बहुवीजक' वंगन' सधान' ।  
रठ पीपल' ऊमर' कठऊमर' पाकरफल'' जो होय अज्ञान' ॥  
फदमूल'' माटी'' जिप' आमिय'' मधु' माखा'' अरु मदिरापान'' ।  
फल अतितुच्छ'' तुपार'' चलितरस'' जिनमत ये पाईस अज्ञान ।

### श्रावकके सत्रह दैनिक नियम

भोजन' बाहन शयन' विलेपन' आसन' भूपण' अरु स्नान ।  
ब्रह्मचय ताम्बूल' पेय' सत्र सचित्तघस्तृका'' परिमान ॥  
पुष्प'' नृत्यगीतादिक पट्टरस'' वस्त्र'' देशान्त'' गायन' जान ।  
नियम सतदश ये प्रतिदिन सब धारण करो सदा मतिमान ॥

### श्रावकके सत्रह यम

कुगुरु' कुदेव' कुचृप'की सेवा अनर्थदण्ड' अघमय व्यापार ।  
घृत' मास मधु'वेश्या'चोरी' परतिय'' हिंसादान'' शिकार'' ॥  
त्रसकी 'हिंसा स्थूल असत्य' रु विन छाना'' जल निशिआहार''  
ये सत्रह अनर्थ जगमाहीं यावज्जीव करो परिहार ॥

### श्रावकके इक्कीस गुण

लज्जा' दया' प्रसन्न' रु थड्ढा' पर औगुण ढक पर 'उपकार ।  
सौम्य' दृष्टि गुणव्राही' प्रेमी' 'श्रेष्ठविचारी नायीसार'' ॥  
मृदुवचनी'' क्षाता'' अरु धर्मी'' निर अभिमानी'' तत्थो'' जान ।  
सममाची' विनयी'' रु छतशी'' निर्लोभी' सद्'व्रत्ती मान् ॥

## व्रतकी आश्रयता

व्रतेन यो विना प्राणी पशुरेव न सशय ।

योग्यायोग्य न जानाति भेदस्तत्र कुतो भवेत् ॥

भावार्थ—व्रत रहित प्राणी नि.स.ह पशुके समान ही है। जिकके योग्यायोग्यता शन नहीं है एसे मनुष्य और पशुमें क्या भेद है ? कुछ नहीं ।

## व्रतका लक्षण

सकल्पपूर्वक सेव्ये नियमोऽशुभकमण ।

निवृत्तिर्वा व्रत स्याद्वा प्रवृत्ति शुभकमणि ॥

भावार्थ—सेवन करने योग्य विषयोंमें सकल्पपूर्वक नियम करना, अथवा हिंसादि अशुभ कर्मोंसे सकल्पपूर्वक निरत होना, अथवा पाप दानादि अशुभ कर्मोंमें सकल्पपूर्वक प्रवृत्त करना, व्रत कहलाता है ।

यथाशक्ति व्रत पालन करना आवश्यक है

पचम्यादि विधि कृत्वा शिवा ताभ्युदयप्रदम् ।

उद्योतयेद्यथासम्पनिमित्ते प्रोत्सहे मन ॥

भावार्थ—मोक्ष पयन्त इन्द्र, चक्रवर्ती आदि पत्नी के अभ्युदय को देनेवाले, पचमी, पुष्पाकुलि, मुतापली, खडपादि व्रतों को शान्वा अनुष्ठान करके अपनी शक्ति और सम्पत्ति के अनुष्ठान उनका उपासन कराने, क्योंकि तैनिक ( नित्य ) क्रियाओं की अपेक्षा नैमित्तिक क्रियाओं के करने में मन अधिक उत्साह को प्राप्त होता है ।

व्रत अनशन का ही भेद है

साकार सर्वतोभद्र सिंहनिष्ठीड़ितादय ।

साकाक्षस्योपवासस्य भेदाश्चैकातरादय ॥

—आचारसार

भावार्थ—साकार, सर्वतोभद्र, सिंहनिष्ठीड़ित, उपवास और एकाक्ष नादि ये सभी व्रत अनशन के भेद हैं ।

व्रत निरतिचार पूर्वक ही पालन करना चाहिये

व्रतानि पुण्याय भवन्ति जन्तो  
 न सातिचाराणि निषेधितानि ।  
 शस्यानि किं वापि फलन्ति लोके,  
 मलोपलीढानि कदाचनापि ॥

—मा घ

भाषार्थ—जीवोंको व्रत पुण्यफल होते हैं। परन्तु अतिचार सन्ति व्रत पुण्यजनक नहीं होते। जैसे घातें यदि नीची गोड़ा न जायें, वे मल युक्त नहीं रहें ता कमी भी वे फलप्रता नशु होती। उनमें पैग हा जान चले फाचनू घास जगौर को नीच गाड़कर साफ करन स ही वे फलप्रती होती ह। इसी प्रकार निरतिचार व्रतों में हा पुण्य प्राप्त होना है, सातिचार व्रतों में नहीं।

व्रतों के आचरण में शिथिलता होना अतिचार है

अतित्रमो मानसगुद्धिहानि,  
 व्यतित्रमो यो विख्याभिलाष ।  
 तथातिचार धरणात्सत्य  
 भगो हानाचारमिह नतानाम् ॥

—पु मि

भाषार्थ—मन की शुद्धि में हानि होना जो अतित्रम, विषयों की अभिलाषा से व्यतित्रम, इन्द्रियों की अग्रगधानी अथात् व्रत के आचरण में शिथिलता से प्रानचार, और व्रत का सबथा भंग होना से अनाचार है। जैसे रेत के माहर एक जेल बैग था, उसने विचार कि निरुक्तों रेत को चरना से अतित्रम, गड़ा होकर चलना से व्यतित्रम, चारी (माह) मोड़ना से अतिचार, और रेत चरना से अनाचार

लिये हुए व्रत की रक्षा पूरे यत्नपूर्वक करनी चाहिये

प्राणातेऽपि न भङ्गव्य गुरुसाक्षिचित व्रतम् ।

प्राणान्तस्तत्क्षणे दुःख व्रतभङ्गो भवे भवे ॥

—सा ध ७-५२

भावार्थ—गुरु अर्थात् पंचपरमेष्ठी, अथवा व्रतगता इनकी साक्षी पूजक लिये हुए किसी भी व्रत को अपने प्राण भी नष्ट हो जायें तो भी नहीं छोड़ना चाहिये। क्योंकि प्राणनाश केवल मरण के समय में ही दुःख का कारण है, परन्तु व्रत का भङ्ग भर भर में दुःख का कारण है।

प्रमाद वा अज्ञानता से व्रतभङ्ग हो जाय तो प्रायश्चित्त  
लेकर उसे पुन धारण करे

समौन्ध्य व्रतमोदय मात्त पाल्य प्रयत्नत ।

द्विध्न दर्पात् प्रमादाद्वा प्रत्यवस्थाप्यमजसा ॥

—सा ध २-७९

भावार्थ—कल्याण चाहनेवाले गृहस्थको ८१ कालात्मिक वा अच्छी तरह विचार करके व्रत का ग्रहण करना चाहिये। और ग्रहण किये व्रत को यत्नपूर्वक पालन करना चाहिये। तथा मत् के आदेश में अथवा प्रमाद से व्रत का सखिटत हो जाने पर सम्यक् राति से शीघ्र ही प्रायश्चित्त लेकर उस फिर से ग्रहण करना चाहिये।

व्रत के दिनों में श्रावक का अनिवार्य कर्त्तव्य

प्रातः सामायिक धुर्यात्ततः तात्कालिकीं क्रियाम् ।

धौताम्बरधरो धीमान् जिनध्यानपरायण ॥

भावार्थ—त्रिनेकी व्रती नागर प्रातःकाल ब्राह्म मुहूर्त में उठकर सामायिक करे। और बाद में शौचादिक संनिवृत्त होकर शुद्ध साफ वस्त्र धारण कर श्री जिनेन्द्र के ध्यान में नग्गर रहे।

महाभिषेकमद्भुत्यैजिनागारे प्रतापितै ।  
कर्त्तव्य सह संघेन महापूजादिफोत्सवम् ॥

भावाथ—श्री मन्त्रिजा म जकर सको आशय करनगला ऐमा मश  
अभिरव कर । निर अपन सघ के साथ समारोहप्रर महापूजन करे ।

ततो रजगृहमागत्य दान दद्यान् मुनीशिने ।  
निर्दोष प्राशुम् शुद्ध मधुर वृत्तिकारणम् ॥

भावाथ—पशान् अपन र आरर मुनीशो को निर्दोष प्राशुम्, शुद्ध,  
मधुर और तृप्ति कगनगला आगर रर शेष श्वे दृष् आहार सामग्री को  
अपने जुटुम् क साथ मान रर आहार करे ।

प्रत्याख्यानोद्यतो भूना ततो गत्वा जिनालयम् ।  
त्रि परीन्य तत्र कार्यास्तद्विध्युत्तजिनालयम् ॥

भावाथ—निर मन्त्रिगी में जकर प्रदक्षिणा रवे और प्रतनिधा में  
कदे गये मनों का ज्ञान करे ।

### प्रत ना उग्रापन

सपूर्णे ह्यनु कर्त्तव्य स्वशक्त्योद्यापन युधै ।  
सवया येऽप्यशक्त्यादिप्रतोद्यापनसद्विधौ ॥

भावाथ—प्रत की मयाण पूण हो जाने पर स्वशक्ति के अनुसार  
उग्रापन कर, यदि उग्रापन ना शक्ति न होने तो प्रत का जो विधान  
(मयाण) है उससे दूना करे ।

### उग्रापनविधि

कनध्य जिनागारे महाभिषेकमद्भुतम् ।  
सत्रैश्चतुर्विधै सार्धं महापूजादिफोत्सवम् ॥  
घण्टाचामरचन्द्रोपक मृगार्यार्तिकवादय ।  
धर्मोपकरणान्येव देय भक्त्या स्वशक्तित ॥

पुस्तकादिमहादान भक्त्या देय घृषाकरम् ।  
 महोत्सव विधेय सुवाद्यगीतादिनर्तन ॥  
 चतुर्विधाय सघायाहारदानादिक मुदा ।  
 आमय परया भक्त्या देय सम्मानपूर्वकम् ॥  
 प्रभाजना जिनेन्द्राणां शासन चैत्यधामनि ।  
 कुवतु यथाशक्त्या स्तोक चोद्यापन मुदा ॥

भाषा—गुरु ऊँचे ऊँचे विशाल जिनमन्दिर बनवाने और उनमें बड़े गमारोहपूर्वक प्रतिष्ठा कराकर जिनप्रतिमा निर्गजमान करे। पश्चात् चतुर्विध संघ के साथ प्रभाजनापूर्वक मंगल अभिषेक कर महापूजा करे। पश्चात् घण्टा, भङ्गलर, चमर, छत्र, सिंगमन, चेंगेरा, भङ्गरी, भृङ्गागी, आरली आदि अनेक धर्मोपकरण शक्ति के अनुसार भक्तिपूर्वक देवे। आन्वायासि मंगलपुष्पों को धमवृद्धि तथा जानवृद्धि हेतु शास्त्र प्रदान करे। और उत्तमोत्तम गान, गीत और नृत्य आदिक अत्यन्त आयोजन में मन्दिर में मंगल उतार करे। चतुर्विध संघ को निरिच्छ सम्मान के साथ भक्तिपूर्वक बुलाकर अत्यन्त प्रमात्से आह्वयसि चतुर्विध संघ दान करे। भगवान् जिनेंद्र ३ शासन का मांगम्य प्रकट कर सूत्र प्रभाजना करे। इस प्रकार अपनी शक्ति के अनुसार उद्यापन कर मत विमपन करे।

### भाद्रपद मास में ऋतों की प्रधानता

अहो भाद्रपदाख्योऽथ मासोऽनेनप्रताकर ।

धर्महेतुपरो मध्येऽन्यमास्ताना नरेद्रवत् ॥

—मण्डिकपुराणे

भाषा—जिस प्रकार मनुष्यों में ऋत राजा माना जाता है, उसी प्रकार समस्त मासों में भाद्रपद मास भी श्रेष्ठ है। क्योंकि वह अनक प्रसरक ऋतों का रगन-स्वरूप है और धर्म का प्रधान कारण है।

## व्रत करने का फल

अनेकपुण्यसतानकारण स्वनिवधनम् ।  
पापघ्न च व्रमादेतत् व्रत मुक्तिवशीकरम् ॥  
यो विधत्ते व्रत सारमेतत्सर्वसुखावहम् ।  
प्राप्य षोडशभ नान स गच्छेत्कमश शिखम् ॥

भाषा—व्रत अनेक पुण्य की सतान का कारण है, स्वर्ग का कारण है, ससार के समस्त पापों का नाश करनेवाला है एव मुक्ति लक्ष्मी को वश में करनेवाला है, जो महानुभाव सनसुगोपायक श्रेष्ठ व्रत धारण करते हैं वे खोलदरें स्वर्ग के सुखा का अनुभव कर अनुक्रम से यमिनाशी मोक्ष सुख को प्राप्त करते हैं ।

## प्रती श्रावक के भाजन के अन्तराय

दृष्ट्वाऽऽर्द्रचर्मास्थिसुरामासास्रक्पूयपूर्वकम् ।  
नृपृष्ठा रजस्वलागुप्फचर्मास्थिगुनकादिकम् ॥  
श्रुत्वातिक्कशानन्द विडघरप्राय निस्वनम् ।  
भुक्त्या नियमितं यस्तु भो-येऽशन्यविवेचनै ॥  
संखृष्टे सति जीवद्भिर्जीवया बहुभिर्मृते ।  
इद मासमिति दृष्ट सकरये चाशन त्यजेत् ॥

भाषा—व्रता का पालन करनेवाला शूद्र—गीला चमड़ा, हड्डी, मदिरा, मास, लोह तथा पीप आदि पदार्थों को खूब करके तथा रजस्वला स्रा, सूना चमड़ा, हड्डी, कुत्ता, बिल्ली और चाण्डालादि को स्पर्श करने, तथा इसका मस्तक कागे, दन्त्यादि रूप अत्यन्त कठोर रूप (सेने के) शान का, तथा परचक्र के आगमनादि विषयक विडघरप्राय शब्दों को सुन करके, तथा त्यागी हुई वस्तु को खा करने और खाने योग्य पदार्थ से अशक्य है अलग करना पिनका ऐसे नीते हुए अथवा मरे हुए दो इन्द्रियादि जीवों के भोजन में मिल जान पर तथा



यह गाने योग्य पन्नाथ भात के समान है इस प्रकार गाता योग्य पन्नाथ मन के द्वारा सकल होने पर भोक्ता को छोड़ दे।

### उत्तोपयोगी आवश्यक विधियाँ

(१) काँजी—मिठ पानी और भात मिलाकर खाता, अथवा चारना का धोवन या मण्ड पीना।

(२) आरली—छ्म रक्षा के बिना मिठ नारंग एक अन्न पात्र साथ लेना।

(३) बेतड़ी—पानी, भात और मिठ मिलाकर खाना।

(४) एरलनागा—मात्र एक बार का परागा हुआ भोजन म पत्रक लेना।

### प्रोषध और उपवास

चतुराहारविसर्जनमुपवास प्रोषध मरुद्भुक्ति ।

स प्रोषधोपवासो बहुपाप्यारम्भमाचारति ॥

मातर्य—सर्व प्रकार के आहार का त्याग करना तो उपवास एक बार भोजन करता तो प्रोषध (एकाशन) है। और उपवास धारणे के दिन १६ प्रहर बाद आरम्भ अर्थात् एक बार भोजन लेना प्रोषधोपवास है।

### उपवास के तीन भेद

(१) उत्तम उपवास—धारणे के दिन दो प्रहर उपवास की धारण कर १६ प्रहर धमप्यान में व्यतीत करना।

(२) मध्यम उपवास—धारणे के दिन २ घड़ा दिन रोप रहे उपवास धारण कर १२ प्रहर धमप्यान में व्यतीत करना।

(३) अधः उपवास—उपवास के दिन प्रातः काल प्रतिज्ञा कर उपवास में व्यतीत करना।

## उपवास का लक्षण

कषायविषयारम्भत्यागो यत्र विधायते ।

उपवास स विज्ञेयो जेष लघनक विदुः ॥

भावार्थ—कषाय विषय और आरम्भ का सक्लपप्रक त्याग तो उपवास है, रोप को लघन समझना चाहिये ।

विशेष—रज, क्षय, वात, भार के अनुसार अपनी शक्ति देखकर न्युम, मध्यम अथवा जल्प अंग उचित समझे ना कर ।

उपवास के दिन भी श्री जिनैन्द्र पूजन करने की आज्ञा

प्रातः प्रोत्थाय सततं कृत्वा तात्कालिकं त्रियाम् यम् ।

निर्वस्येद्यथोक्तं जिनापूजां प्राप्सुर्वैश्वदेव्यै ॥

भावार्थ—प्रभात ही उठकर तात्कालिक शौचनिरति आदि सत्र क्रियाओं को करके प्राशुक अथवा अनखदित शुद्ध अक्षर्यों से आपस्रथा में पड़ी हुई विधि व आङ्गार श्री जिनैन्द्र का पूजन करे ।

स्त्रियों को भी पूजन व प्रताचरणादि करने का उल्लेख

विपत्काले गते कन्या आनाद्य जिनमदिरम् ।

सपर्यां महतीं चक्रुर्मनोवाक्यशुद्धित ॥

आवकप्रतसयुक्ता यभूयुस्ताश्च कन्यकाः ।

जमादिप्रतसकीर्णा शीलागपरिभूयिता ॥

—शौतमचरित्रे

भावार्थ—जिन तीना कन्याओं ने आजक प्रत धारण करके क्षमात्रि-  
श घम और शील बन धारण किना, कुछ समय बाद उन्होंने जिनमदिर  
में आकर मन वचन काय की शुद्धि पूरक श्री जिनैन्द्र भगवान् की स्त्री  
पूजा की ।

गृहीतगंधपुष्पादिमार्थना सपरिच्छदा ।

अथैकदा अगामैषा प्रातरेण जिनालयम् ॥

## व्रत शील सहित ही पालन करना चाहिये

शील सहित व्रत पुण्य उपाय, बिना शील व्रत निष्फल थाय ।

भावाथ—शील सहित व्रत ही पुण्योत्पादन होते हैं ।

## शील की नव बातें

तियथल' वास प्रेमरुचि निरयन' दे पराज भाषण' मधुबैन ।

पूरयमोग केलरस' चितन, गध' श्रहार लेत चित चैन ॥

वरशुचितन शृ गार वनारत' तिय परथक मध्य सुख सैर ।

ममथ' कथा उदर भर भोजन' ए नव वाढ शील मत जैन ॥

## श्रावण के चढोवा के नव स्थान

प्रथम रसोइ के स्थान' चक्री' उखरी' द्वय प्रय जान ।

चोयो श्रनाज सोधने' काज जीमन चौका' पचम माढ़ ॥

छठम श्राटा' छनने सोय सप्तम' थान सयन का होय ।

पानी थान सु' श्रष्टम जान सामायिक का नवमों' थान ॥

## पामुन द्रव्य

सुकरु पक्क तत्त श्रविल तवणेण मिस्सिय दव्य ।

ज ज तण य छिन्न त सव्य फामुय मणिय ॥

भावाथ—जो द्रव्य सूना हा, पगिपकर हो, तत हो, श्राम्लरस तथा लपण-मिश्रित हो, बोल्ड, रसों, चक्री, हुरी आदि यों से द्विज हुआ तथा मशोधित हो वह सब पामुन है ।

## प्राती की जल छानने के लिये छाना का प्रमाण

पट्त्रिंशदगुल वस चतुर्विंशतिविस्वृतम् ।

तद्वस्न द्विगुणी शृत्य तोय तेन तु गालयेत् ॥

भावाथ—छत्तीस अगुल लम्बा और २४ अगुल चौड़ा टेमा एक गाढ़ा बन्ध लेकर द्विगुणित ( दुहरा ) कर उससे जल छानने योग्य है ।

जल प्राशुक करने की विधि व मर्यादा  
मुहुत गालित तोय प्राशुक प्रह्वरद्वयम् ।  
उष्णोदकमहोरात्रमगालितमिद्योच्यते ॥

भावार्थ—छ्दना हुआ जल तो घड़ी तक पीने योग्य रहता है। इलायची, लज्जगि प्राशुक द्रव्या का चूर्ण मिलाये से ( निम्ने जल का रस, रूप, रसल ताप ) तो प्रह्व तक प्राशुक रहता है। उमाला हुआ जल एक दिन-रात्रि अर्थात् २४ घण्टे प्राशुक रहता है। पश्चात् वृत्रिना छ्दने हुए जल व सरार हो जाता है।

जल गालने व्रत के अतीचार  
मुहुतमेकोऽर्धमगालन वा  
दुर्वासमा गालनमभ्युनो वा ।  
अथवा वा गालितशोषितस्य  
न्यासो निपानऽस्य न तद् व्रतेऽच्य ॥

भावार्थ—१—छ्दना हुआ पानी को एक मुहुत अर्थात् दो घड़ी के बाद न पानना, २—अथवा ५२, मीले, पुगन, छोटे छेत्तले कपड़े में धानना, ३—अथवा धाननम शप वने हुए जीवानी के जल को निम स्थान का जल है उगमे न डालकर अन्य प्लाशय में छोड़ना, ये तान जल धानन व्रत के अतीचार है।

जल के एक विन्दु में जीवों की सरया  
एषविन्दुश्चा जीवा पारायतसमा यदि ।  
भूचोच्चरति चेज्जम्बूद्वीपोऽपि पूयते च तै ॥

भावार्थ—जल की एक बूँट में नितने जान हैं वे कबूतर सरार हान्ग यदि उन्हें तो यह जम्बू द्वीप लज्जलन भर जाय।

व्रती के खान पान के पदार्थों की मर्यादा

(१) दूरा—का मया शत ऋतु में १ मास, ग्रीष्म ऋतु में १५ दिन और वस ऋतु में ७ दिन की होती है।

(२) दूध—गेहने के बाद जिना गरम किये हुए की मयादा १० घड़ी की है, तुल्य गूब गम मिश्र की मयादा ८ प्रहर की है। यदि बीच में म्याद निगड़ जाय तो बीच में ही परिल्याग कर देय। यदि गेहने के बाद तुल्य गम न मिश्र जाय तो जिम पशु का दूध है उमा आकरगले गन्बूच्छन असख्य जीन भेग हो जाते हैं।

(२) आटा—आटा, म्मा, मंग आदि चून की मयादा यथा में ३ दिन, गर्मी में ५ दिन और शीत ऋतु में ७ दिन की है।

(४) दही—गम दूध में शुद्ध आमन स्फुर जमाये हुए दही की मयादा ८ प्रहर की है।

(५) छोट—खिलोते समय ही पानी गला जाय तो मयादा ४ प्रहर की और खिलाने के बाद डाला जाय तो २ घड़ी की मयादा होती है। पानी पक्का लेने।

६—पी, गुड़, तेल की मयादा म्याद न निगड़ने तक।

७—पिसे हुए सेंधा नमक की मयादा २ घड़ी की है यदि हल्की या मिर्च पीसते समय मिला ही जाय तो २ घण्टे की होती है, पश्चात् अभ्य है।

८—विचवी, कनी, रायता, तरकारी आदि की मयादा दो प्रहर की है।

९—पुस, फरी, शीरा, रोगी, बग आदि जिनमें पानी का अंश अधिक रहता है उनकी मयादा ४ प्रहर की है।

१०—मौनवाली पृथ्वी, परिया, राजा, लड्डू, घेवर आदि जिनमें पानी का अंश कम रहता है उनकी मयादा ८ प्रहर की होती है।

११—जिम भोजन में पानी नहीं पड़ा हो जैसे मगानेसन, चूरमा आदि की मयादा आटे के बराबर होती है।

१२—पिसे हुए हल्की, धनिया, मिर्च आदि मसाले की मयादा आटे के बराबर है।

१८—धृग, मिथी, गग, स्वारक शक्ति मिष्ट द्रव्य मिले हुए स्त्री छौंड़ की भसना ग घटा का है ।

१९—गुड़ मिला स्त्री, छौंड़ मरना अभ्यस्य है ।

नाट—गामान्यत श्रुतु ना परिगान अणद्विसा न अणद्विसा तत्र ४५ भाषों म होता है ।

### द्विदल विचार

योऽपक्वतत्र द्विदलानमिध्र भुक्त विधत्ते मुग्गसापमगे ।  
तस्यास्य मध्ये मरण प्रपना समून्निउका जीवगणा भवति ॥

भाषा—कच्च २२, स्त्री, मग म द्विदल (त्रिमरी ग गले हा) पगथा न मिलान मे श्री मुग्ग जी लार वा मम सत्रय नां म यमव्य सन्नु छन म आगशि ग होता है इमर मनण म मगन् रिमा होती है । अत य संवथा अभय है ।

पक गौरम में भी इस प्रकार बताया है

चऊ ए इन्दी ये छह, अट्टहतिणि भणति ।

दह चऊरिदियजीवडा धारह पत्र भणति ॥

चोपाई—जत्र चार महरत जाहीं, एकेन्द्रिय जिय उपजाहीं ।  
वाराघटिका जत्र जाय, येइंती तामें थाय ॥  
पोडशघटिका हैं जवहीं, ते इन्द्रिय उपजें तयहीं ।  
जय धीस घड़ी गत जानी, उपजें चौइन्द्रिय प्राणी ॥  
गमिया घटिका जत्र चौप्रिस, पचेंद्रिय जिय पूरित तिस ।  
हैंहं नहिं सशय आनी, यो भापं निणवर चाणी ॥  
पुधिजन लख पेसो दोप, तजिये ततट्टिन अघ कोप ।  
कोइ पेसे कहवाइ, गेहें इक थाम हि माही ॥  
मरयाद न सधिहै मूल, तजिहें जे वत अनुकूल ।  
साये में पाप अपार, छहें शुभ गति है सार ॥

—वि० सि० मि०

## द्विदल के भेद

पत्रद्विदल—मूग, भात, अरण, मगूर, गू, गन्ना, तुल्सी, आदि  
 अनाज। काष्ठद्विदल—चाराणी, रगम, किन्ता, जंग, धानसौ आदि।  
 हरीद्विदल—तोरद, भिरडी, पट्टुला, धीतोरद, परबुजा, ककड़ी, पग,  
 परनल, सेम, लौरी, करना, गीरा आदि या गीरा गुत्र पार्थ।  
 शिपरिन—की मया अन्तमूर्त मात्र की है। (इहा लौद्र में मीठा  
 पण्य)। जौना—सवया अभावे है। (इही लौद्र म गर लूण मिला  
 क रदा आदि मिलाना)।

## टही बनाने हेतु शुद्ध जामन

दही बाँचे फपडा माहीं, जय नीर न धूँद रदाहीं।  
 तिहिं फी दे वडा सुग्गाइ, राते अति जतन कराइ ?  
 प्रासुक् जल में घौलीने, पयमाहीं जामन दीने।  
 मर्यादा भापी जेह, यह जायन सौं लख लेह ॥  
 अथवा रुपया गरमाइ डारे पय में दधित्याइ।

## त्रत म विशेष

अतराय पालो भजिसार, मौन सहित करिये आहार।  
 त्रत में हरी जिरे नर साय, सवर तासु अकारथ जाय ॥

## १-अष्टाद्विंश प्रत

### चौपाह

तीन बार एक घर मभार, आपाड़ कार्त्तिक फाल्गुण धार ।  
जो उत्कृष्ट विरत को करे, आठ आठ उपवास जु धरे ॥  
दूजो भेद कोमली जान, जिनमारग में बरो बखान ।  
आठों के दिन कर उपवास, नौमी एकभुक्ति परवास ॥  
दशमी दिन काजी कर मार, पानी भात एक ही धार ।  
ग्यारसि अल्प अमन कीजिये, ढयघट तज इक्कघट लीजिये ॥  
मुग्न सोधो धारस विधि येह, त्रिभिध पात्र को भोजन देय ।  
अतराय गहिं तिनको धाय, तो यह प्रत धर असन लहाय ॥  
अतराय तिनको जो परे, तो उस दिन उपवासहि कर ।  
तेरम दिन आँत्रलि कीजिये, ताका विधि मयि मुन लीजिये ॥  
एक अन पट्टरस दिन जान, जल में मूक लेय इक्क ठान ।  
चौदश चित्तमेलबी धाय, भातनीरयुत मिरच लहाय ॥  
पूरणमासी को उपवास, बियेँ होय चिर को अघनाश ।  
यह कामली की विधि कही, जिन आगम में जैमी लही ॥  
आदि अत्र करिये एकत, दश दिन धरिये शील महत ।  
यह प्रत सत्र धर मन लाय, सत्रे हरी तजिये दुखदाय ॥  
धनु एकासन विधियुत करे, सोइ जयन विधि आदरे ।  
घर आरम्भ तने दुखदाय, शील सहित आरम्भ धराय ॥  
अत्र मरयादा मुन भविजीय, घरत्रिशुद्धतासों लग्न लीय ।  
सत्रह घरप शाख एक जान, करिये गान्न शाख प्रधान ॥  
अथवा आठ घरप लौं जान, थीस चार तसु शाख बग्यान ।  
पात्र घरप कर पट्टरह शाख घर मन बच तन शुभ अभिलाप ॥  
तीन घरप नव शाख प्रमान, एक घरप तिहुँ शाख सुजान ।  
जैसी सकति दइ अत्रकास, सो विधि आदर कर भघनाश ॥



सकति प्रमाण उद्यापन करे, नहीं तो दूनो व्रत आदरे ।  
 विधि माफक तें भविजन करो, सुर नर सुख लहि शिव तिय चरो ॥  
 जो नरनारी यह व्रत करे, निश्चय स्वर्ग मुक्ति पद चरे ।  
 सकट रोग शोक सब जाहि, दुख दरिद्रता दूर विलाहि ॥  
 —क्रियाकाण्ड

भावाथ—अग्निहोत्रा व्रत एक नर म तान पर आता है—आपाद,  
 नातिक और फाल्गुण । इन महीना के शुक्ल पक्ष की अष्टमी से प्रारम्भ  
 होकर पूणमासी को यह व्रत पूरा जाता है । यद्यपि इस व्रत का विधियाँ  
 अनेक तरह की पाद जाती हैं तथापि उन मर्मों तीन विधियाँ मुख्य हैं—

### १—उत्तम विधि

अष्टमी के दिन एकाशन करके उपवास की प्रतिज्ञा करे, अष्टमी से  
 पूणमास तक उपवास करे । पश्चात् एवम को पारणा करे । व्रतों  
 दिन धर्मध्यान में व्यतीत करे ।

### २—मध्यमविधि (कोमली विधि)

१—अष्टमी के दिन एकाशन कर उपवास की प्रतिज्ञा कर, अष्टमी  
 का उपवास करे, इस दिन की नगार मन्त्र है । 'श्रीं ह्रीं नन्दारुन  
 मन्त्राय नमः' इस मन्त्र का विशाल जाप्य करे । इस दिन का फल  
 (१ ००० ०) वर्ष लाग्य उपवास के उत्तर है ।

२—नवमी के दिन एकाशन करे । इस दिन का अष्ट महाविभूति मन्त्र  
 है । 'श्रीं ह्रीं अष्ट महाविभूतमन्त्राय नमः' इस मन्त्र का विशाल जाप्य  
 करे । इस दिन का फल (१०६००००) वर्ष लाग्य माठ हजार उपवास के  
 उत्तर है ।

३—दशमी के दिन भिन्न पानी और चावल का आहार करे । इस  
 दिन की त्रिलोकसार मन्त्र है । 'श्रीं ह्रीं त्रिलोकसारमन्त्राय नमः' इस मन्त्र  
 का विशाल जाप्य करे । इस दिन का फल (१००००००) वर्ष लाग्य  
 उपवास के उत्तर है ।

४—ज्यान्शी कं त्रिं पत्र धार अल्प आहार करे । इस त्रिं की रतुमुत्र गण है । 'आ हा रतुमुत्रगणाय नम' इम मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे । इस त्रिं का फल (५०००००) पौन लाग्य उपवास के प्रसार है ।

५—द्वान्शी कं त्रिं आहार करे । इस त्रिं की पत्र मंगललग्ण गण है । 'आ ही पत्र मंगललग्णाय नम' इम मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे । इस त्रिं का फल (८००००००) चौथी लाग्य उपवास के प्रसार है ।

६—त्रयान्शा कं त्रिं मित्रं तद कं साध तिस्र एक अन्न का आहार करे । इस त्रिं की स्वर्गोपान गण है । 'आ हा स्वर्गोपानमहाय नम' इम मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे । इस त्रिं का फल (४००००००) तालीस लाग्य उपवास के प्रसार है ।

७—चतुर्शी कं त्रिं तारल, मित्र और तद का आहार करे । इस त्रिं की तारगण्यति गण है । 'आ ही तारगण्यतिमहाय नम' इम मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे । इस त्रिं का फल (१० ०००) एर लाग्य उपवास के प्रसार है ।

८—पृथमाग्नी वा उपवास करे । इस त्रिं का इन्द्रपुत्र गण है । 'आ ही इन्द्रपुत्रमहाय नम' इम मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे । इस त्रिं का फल (३५००००००) तीस बगड़ पचास लाग्य उपवास के प्रसार है ।

### ३—अध्याय विधि

अष्टमी म पूर्णिमापरन्त एकवसन करे ।

विशेष—अष्टमी म एकम तक त्रिं घमप्यता म हो परीत करे । और पुन्य प्रकार शील फल । शन्नघन शूलकर मोन महिन आहार करे ।

प्राण १—सप्त पत्र १ शार (५० शाण) । २—आर त्रिं (२४ शाण) ।

३—पौन वर (१५ शाण) ४—ताल वर (६ शाण) ।

५—एक वर (३ शाण) ।

रत्रि के अनुगार मयाग धारण क प्रत पूण करे । त्रिं का प्रथम त्रिं जाप्य कर मर ता—'आ ही त्रिं' ।

विनालक्ष्मिभ्यो नमः' इस समुच्चयमंत्र का वाक्य विनालक्ष्मी । यदि उद्यापन की शक्ति न हो तो व्रत दूना करे । मंत्र के शिवाँ में प्रत्येक दिन अभिषेक पूर्वक महोत्सव सहित पूजन करना चाहिये ।

१—यह व्रत श्रयोध्या मंत्र पुनः श्रीयम, जयम और जयतीति ने किया, तिसके प्रसाद से श्रीमम शरिण्य चन्द्रतीति हुआ, और जयम तथा जयतीति शरिण्य और अभितिजय नाम के चारण्य मनि हुए । व्रत को ये तीनों ही मोद गये ।

२—इसी व्रत को मैनासुन्दरी ने किया जिन्हे प्रमाँ स कोनीम श्रीपाल राजा तथा उनसे ७०० वीरा न गलिन कुष्ठ दूर हुआ ।

३—यह व्रत सुलोचना ने भी किया सो वह उससे प्रभाव से सन्वास पूर्वक मरकर स्वयं गइ ।

४—यह व्रत अनन्तराम ने भी किया सो वह चन्द्रतीति हुआ ।

५—यह व्रत जरासिन्धु ने भी किया सो प्रतिगामुदेव हुआ ।

इस तरह श्रोकों ने इस व्रत को किया और अजर अमर पद प्राप्त किया । व्रत भी है—

यद्युक्त गर नारी व्रत कियो, तिन सब अजर अमर पद लियो ।

## २—पौडश फारण्य व्रत

सोलह फारण्य विधि सुन लेय, जिन आगम में भाषी तेह ।

मादौ माघ चैत्र तिहुँ मास, मध्य करे चित धर उह्मान ॥

याम इकातर विधियुक्त करे, बीच दोय जीमन नहि धरे ।

सोलह घरस करे भयि लोय, उद्यापन कर छाड़े सोय ॥

सकति नहीं उद्यापन तनी, करे दुगुन व्रत थी जिन भनी ।

मध्यम पाँच घरम विधि जान, जयन कही इक् वर्ष प्रमाण ॥

भाषण—यह व्रत एक वर्ष में भागें, भाग और चैत्र इन तीन मनीनों में आता है । कृष्णपक्ष की एकम से द्वितीय भाग की कृष्ण एकम तक

३२ दिन किया जाता है। उत्तम, मध्यम और जघन्य इस प्रकार तान विधि में होता है।

१-उत्तम विधि—अनीस तिन के ३२ उपवास।

२-मध्यम विधि—सोलह उपवास और सोलह पारणा।

३-जघन्य विधि—अतीत एकाशन।

मथान—उत्तम १६ उर्र। मध्यम पूवप। और जघन्य १ वप प्रमाण है। प्रत पूरा होने पर उद्यापन करे। उद्यापन की शक्ति न होय तो वा टूटा करे।

‘श्रौं ह्रीं श्रानिश्शुद्धयान्शिोशकारणेभ्यां नम’ इस मंत्र का त्रिकाल जाय करे।

यत् प्रत राजपुत्री नगरी में मन्थरमा ब्राह्मण की पुत्रा भैरवी कन्या ने किया तिमने प्रसात् से श्रीलिंग छेकर रंग म महर्द्धिकन्व होकर फिर पून रिन्द में भीमघर तीथकर दुया।

### ३-दशलक्षण त्रत

दश लक्षण याही परवार, उत्तमविधि दशपोपह धार।

दूजी विधि छहयासर तनी, करे इकातर भापै गली ॥

तीजी जघन विधि इस जान, करे इकातर दशदिन मान।

मर्यादा दश वरप प्रमाण, कही जिनागम माहिं सुजान ॥

—कि० को०

भावाथ—यद् वा एक वप म तीन बार थाता है अथात् माद्र व और माद्रपद। शुद्ध पन की पचमी में प्रारम्भ होकर चत्तरशा के होता है। इसकी तीन विधियाँ हैं—

१-उत्तम विधि—श तिन के श उपवास करना।

२-मध्यम विधि—पचमी, अम्मा, एकादर्श, चत्तर दिना में उपवास और शेष छ् तिनों में छद् एकाशन।

३-जघन्य विधि—दश तिन के दश एकाशन।

अर्हन्नुवन्मलमनुद्भूतोत्तमव्रतमाशिलक्षणेकधना न्द ॥

त्रिजाल का वक्र । दश उप पूर्ण होने पर उद्यापन करे । उद्यापन की शक्ति व ने तो नूना मत कर ।

य मन् धातुनीगण्ड के पृथक्विन्द विधे सीताग नगी के तीर विद्यालान्तापुरी क राजा प्रीतकर का पुत्री मृगाकरना, मातेशेगर मत्री की पुत्रा कामगना, मतितागर भेट का पुत्री मन्नेगा, श्रीर लजभग पुरोहित की पुत्री गेण्णी इन चार ने विधिपुत्र किया था निम्ने प्रभान से दशवें म्यग में अब हुइ, श्रीर वहाँ म चर कर उज्जयिना नगरी में स्थूलभद्र राजा के यहाँ प्रमश न्यग्रन, गुणचर, पद्मप्रभ श्रीर पद्मसाग्िणी नाम क चार पुत्र हुण, श्रीर वे चारों पुत्र गङ्गसुन भागकर वैराग्य धारण कर कम जय कर मान को प्राप्त हुए ।

### ४—रत्नत्रय मन्त्र

रत्नत्रय की विधि ये सहो, चरप मय तिहुँ धारहिं कही ।  
भादा माघ चत्र पर श्वेत, चारसि कर एकान्त सु हेत ॥  
पोषह मकनि प्रमाण जु धरे, अनि उच्छाह तें तेलो करै ।  
पडिमा दिनकर है एकत, पचदिवस धर शील महन्त ॥  
चरप तीन मर्यादा गह, उद्यापन कर फुनि निरवहै ।  
सन्तिहीन जो नर तिय होय, सवर दिवस न द्यौंहे सोय ॥

—क्रि० को०

भासाध—य मन्त्र वय में तान नार आता है, अथान् भार्ग, माघ श्रीर चैत्र । शुक्रा द्वाशी को मयाह भोजन के नार उपनाम की प्रतिपा कर धर्षाशा चन्द्रशी श्रीर पूर्णिमा, इन तीना िन उपवास करे श्रीर पडिमा क िन पारणा कर । द्वाशी स पडिमा तक पाँच दिन शील श्रीर सप्त पूरक व्यतीत करे । 'आ हा मय्यद्दशनानन्नाग्निभ्यो नम इस मंत्र का त्रिजाल जप्य करे । तीव वय पूण होने बाद उद्यापन कर मत समाप्त कर । शक्तिहान होनेपर उपवास क स्थान म एनाशन करे ।

यद मन् मुग्शन मेरु के त्रिण्ण िशा में विन्द क्षत्र के कच्छ्यापती

देश के मध्य तीरथोत्तपुर नगर में वैश्रवण राजा ने किया था जिसका प्रमाण से मराधमिदि म इद्र हुआ और वहाँ से चयकर मलिनाथ तार्यकर हुआ ।

### ५—पुष्पाञ्जलि व्रत

अटिह—भाद्रों माघ रु चैत्र मास त्रय मध्य ही,  
 तिनके सितपर में पुष्पाञ्जलि व्रत कही ।  
 पचमि तें उपवास पाँच नवमी लगे,  
 कियें पुण्य उपजाय पाप सगले गलें ॥  
 पचमि सातें नवमी वास त्रय ही करे,  
 छटि अरु अष्टमि के दिन फाजी व्रत धरे ।  
 छटि आठें अरु नवमि एकांत हि कीजिये,  
 दोयवास एकान्त तीन घर लीजिये ॥

दोहा—वरप पाच लों चरन यह, कर निशुद्धिता धार ।  
 ताको फल उत्कृष्ट है यामें फेर न सार ॥

भावाय— यह व्रत एक वर में तीन बार जाता है, भाद्रों, माघ और चैत्र । शुक्ल पचमी में प्रारंभ होकर ४ नवमी को समाप्त होता है । इस व्रत की उत्पत्ति, मध्यम और जन्म्य भेद ने तीन विधियाँ हैं—

१—उत्तम विधि—पचमा से नवमी तक पाँच उपवास कर ।

२—मध्यम विधि—पचमी, सप्तमी और नवमी के दिन उपवास कर, पत्नी और अग्रमा को प्रणाम करे ।

३—जन्म्य विधि—पचमा और नवमी का उपवास कर । पत्नी, सप्तमा और अग्रमी का प्रणाम करे ।

इस प्रकार पाँच तरह रहे । पश्चात् उपासन करे । प्रतिदिन व्रत के दिन में—‘आ हौं पचमस्य असीजिनालकेभ्यो नमः’ इस मंत्र का विशाल जाप्य करे ।

यह व्रत जम्बूद्वीप के पूर दिशे के मंगलान्ता तथा साता नदी के तटपर रत्नसचकपुर नगर में ब्राह्मण की पुत्री प्रमावती ने

विसात जाय कर। तब उप पूजा ही पर उपासन कर। उपासन की शक्ति न ग तो उना मत कर।

यं मा धानुसामण्यं कं पृथविन्दुं त्रिं सीतोत्त नदी के तीर  
 विरातागपुरी क राजा प्रातःक का पुत्री मृगाकखा, मतिशेखर मन्त्री की  
 पुत्रा काममना, मनिगागर मन्त्र का पुत्री मन्त्रांगा, श्रीर ललभद्रा पुत्रोदर  
 की पुत्री शक्तिगा इन चाराने विधिपूर्वक किया था त्रिमं प्रभाव से दशमें  
 स्वर्ग में गए हुए और यहाँ म चर कर उत्पत्तिनी नगरी में स्थूलभद्र राजा  
 क यहाँ मरना तब्रभ, गु तचद्र, पद्मप्रभ और पद्मगाग्निगी नाम क चार  
 पुत्र हुए और वे राजा पर गन्तुग भागकर संगम्य धारण क कम  
 लन कर मोल का प्रात हुए।

### ४—रत्नत्रय त्रत

रत्नत्रय की विधि ये सहा, वरप मध्य तिहुँ धारहिं कही।  
 भादा माघ चंद्र पर श्वेत, वाग्नि कर ण्कात सु हेत ॥  
 पोषह सप्तमि प्रमाण जु धरे, अति उच्छाह तें तेलो करै।  
 पडिमा दिनकर है एकत, पचदिवस धर शील महन्त ॥  
 वरप तान मरयादा गह, उद्यापन कर फुनि निरवहै।  
 सबतिहीन जो नर तिय होय, सवर दिवस न छाँडे सोय ॥

—त्रि० को

भाषा—यं मत त्र म तान वार आता है, अधात् भागें, माप  
 और चंद्र। शुद्धा द्वाशी को मज्जाह भाजा क बाद उपनाम की प्रतिभा  
 कर त्रयादशा, चतुशी और पूर्णिमा इन तीनां त्रिन उपनास करे और  
 पडिमा के त्रिन पारण कर। द्वाशी सं पडिमा तक पाँच दिन शील और  
 मयम पूजक व्यतात करे। 'आ हा मय्यग्शनशनचाग्नित्रेभ्यो तम' इस  
 मन्त्र का त्रिपाल जाप्य करे। तीन उप पूजा होने बाद उपासन कर मत  
 समाप्त कर। शक्तिहीन होकर उपनास के रान म ण्काशन करे।

यं मत मुग्शन मेरु वं दन्तिय त्रिशा मे त्रिन्दु क्षेत्र के कच्छानती

दश क मय श्रीश्रीश्रीपुर नगर म वैश्रवण रात्र न मित था क्लिष्टे प्रजादे  
 म सहायता में इन्द्र हुआ और यहाँ म चयनर माझनाथ तायकर हुआ ।

### ५—पुण्याञ्जलि व्रत

गदित्त—भादों माघ रु चंद्र मास प्रथम मध्य ह्य,  
 तिनके मितपख में पुण्याञ्जलि व्रत कही ।  
 पचमि तें उपवास पाँच नवमी लगे,  
 बियें पुण्य उपचार पाप सगले गों ॥  
 पचमि सातें नरमी वास प्रथम हा करे,  
 छटि अरु अणमि क दिन काजा वत धरे ।  
 छटि आठें अरु नवमि पक्षात् हि काजिये,  
 नेयवास एकान्त तान घर लाचिये ॥

नेहा—वरय पाच लों वरत यह, कर विशुद्धिता धार ।  
 तासो फल उत्कृष्ट है, यामें फेर न सार ॥

भावार्थ—य व्रत एक रा म लान कर जाना है, भागों, माघ और  
 चैत्र । पुस्तक पचमी म प्राग्म हाकि क नरमा को समाप्त हाता है । इस व्रत  
 का उद्देश्य, मज्जन और ब्रह्मण्य के स तान निश्चयों है—

१—रात्रि विधि—पचमी म नरमा तक पाँच उपवास करे ।  
 २—मयम विधि—पंचमा, सप्तमा और नरमी के दिन उपवास  
 करे, पत्नी और श्रामों का उपवास करे ।

३—व्रतन्य विधि—पचमा और नरमी का उपवास करे । पत्नी,  
 सखी और श्रामों का उपवास करे ।

४—व्रतन्य विधि—पचमा, सप्तमा और नरमी का उपवास करे । प्रतिदिन व्रत क  
 रना है—'जगद्गुरुपुत्राय नमः' इति मंत्र का विवाक  
 करे ।

५—व्रतन्य विधि—पचमा, सप्तमा और नरमी का उपवास करे । प्रतिदिन व्रत क  
 रना है—'जगद्गुरुपुत्राय नमः' इति मंत्र का विवाक करे ।



विमान जाय कर। त्यस वा फूल होने पर उद्यापन कर। उद्यापन की शक्ति न हो तो त्याग कर कर।

यह वा वातुनागण्ड के प्रविष्ट रिपे सीतोला नगी व तीर निशालागपुरी व गन्ध प्रीति कर की पुत्री भृगाकरवा, मतिशेखर मनी की पुत्री कामभना, मतिगागर मठ का पुत्री मन्मन्गा, और लक्ष्मण पुरोहित की पुत्री रोहिणी इन चारों ने विधिपूर्वक किया था निम्न प्रमाण से दर्शाते, रम्य मन्मन् इद, योग यज्ञे सं चय कर उद्यापना नगरी में स्थूलभद्र राजा व यज्ञे क्रमशः यज्ञभ, गुणचन्द्र, पद्मप्रभ और पद्मसखिणी नाम के चार पुत्र हुए, और वे चारों पुत्र राजसुग्य भोगकर वैराग्य धारण कर कमलय कर मातृ को प्राप्त हुए।

#### ४—रत्नत्रय व्रत

रत्नत्रय की विधि ये सहा, वरप मध्य तिहुँ धारहि कही।  
भादों माघ चैत्र पख श्रेत, धारसि कर एकांत सु हेत ॥  
पोपह सरति प्रमाण जु धरे, अति उच्छाह तें तेलो करै।  
पड़िमा दिनकर है एकत्त, पचदिवस धर शील महन्त ॥  
वरप तीन मरयादा गहै, उद्यापन कर फुनि निरघहै।  
सरतिहीन जो नर निय होय, सवर दिवस न छुँडे सोय ॥

—क्रि० को०

भावना—यह व्रत कर म तान नार आता है, अर्थात् भादों, माघ और चैत्र। शुद्ध द्वादशी को मव्याह भोजन के बाद उपवास की प्रतिज्ञा कर प्रयोदशी, चतुर्दशी और पूर्णिमा, इन तागा दिन उपवास करे और पड़िमा के दिन पारणा कर। द्वादशी से पड़िमा तक पाँच दिन शील और सयम पूत्रक व्यतीत करे। 'आ हां सम्यग्ज्ञानज्ञानचारित्र्येभ्यो नमः' इस मंत्र का विमान जाय करे। तीन वर पूर्ण होने बाद उद्यापन कर व्रत समाप्त कर। शक्तिदान होनेपर उपवास के स्थान में एकाशन करे।

यह व्रत मुद्रशन मरु के जिनसे शिवा में विष्ट क्षेत्र के कच्छावती



जिसमे १० स्त्रीलिंग मूर्तका सालहरों रसग मे १२ दूध, और बर्गों ग चप  
र उमन रनसेपर चरना होकर मोठ प्राप्त किया ।

### ६—मुष्टिविधान व्रत

मुष्टिविधान मासत्रय येद, भादों माघ रु चैत्र गणेश ।  
जिन वशन कर मुष्टि चढ़ाय, एक धार फिर अमन लहाय ।

—धर्ममानपुराण

भाषा—यह व्रत एक वर्ष में तीन बार आता है, भाद्र, माघ और  
चैत्र । दृष्ट्या एकमे से शुरू होकर पुष्पा पूर्णिमा को एक मास में समाप्त  
होता है । प्रति दिन एक मुष्टि प्रमाण शुभ द्रव्य आ जिनैत्र भगवान् के  
चरण कमलों व निरु चढ़ाने अभिषेकपूर्वक चतुःशक्ति जि महापूजन  
करे और 'ओं हां शृपभास्त्रिरीरान्नेभ्यो नमः' इम मन का विनाल जाप्य करे ।  
एक बार भोजन करे । मन एक वचनक करे । समस्त हाथ पर उद्यापन कर ।

### ७—संकटहरण व्रत

संकटहरण व्रत तीनों श्राव, तेरसि तें दिन तीनों भाव ।

—धर्ममानपुराण

भाषा—यह व्रत एक वर्ष में तीन बार आता है, भाद्र, माघ और  
चैत्र । शुद्धा प्रयात्शी से प्रारम्भ होकर पूर्णिमा को समाप्त होता है । प्रति दिन  
विनाल—'ओं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं आम आ उगा मयशान्तिं नमः नमः स्वाहा  
इम मन का विनाल जाप्य करे । तीन वर्ष पूरा होने पर उद्यापन करे ।

### ८—नित्यरसी व्रत

अडिल्ल—दूध दीत गशि हरी भौम मीठो हरे,

पूत दुध गुरुको दही दूध भृगु परिहरे ।

तैल तजं शनि यहै घरत पास्ता गहै

मरयादा जिमि नेम धरे निमि निरघहै ॥

—धर्ममानपुराण

भानाथ—रविवार को नमक, सोमवार को हरा, मंगलवार को मूत्र, बुधवार को घृत, गुरुवार को शनी, शुक्रवार को दूध, और शनिवार को तैल का त्याग करे। यह व्रत एक वर्ष में समाप्त होता है। शक्तिपूर्वक से पक्ष, मांस, दो मांस आदि रूप से किया जा सकता है। नव घर का अग्रधि पूजा होने पर उवाचन करे। 'श्रीं ह्रीं भा श्रद्धं नम' इत्यम्ब का विनाल जाप्य करे।

### ६—पट्टरसी व्रत

दूध दही घृत तैल लूण मीठी सही,  
 तजै पाख दोय दोय सफल सख्या करे।  
 करे अमन इफचार धती इम व्रत करे,  
 पय धारह मरयाद पट्टरसी इहनाई।

भानाथ—यह व्रत छह महाने में समाप्त होता है। इसमें दूध, दही, घृत, तैल, लूण, मीठी का त्याग करे। दुसर में दही, तासर में घृत, चौथे में तैल, छठवें में मीठा, इस प्रकार त्याग करे। 'या ह्रीं इत्यम्ब' इत्यम्ब का विनाल जाप्य करे। छह महाने समाप्त करने के बाद

### १०—ज्येष्ठ जिनवर व्रत

धरत जेष्ठ जिनवर भजिलोय, ज्येष्ठ मास में इदिं सोर।  
 कृष्णपक्ष पडिमा उपवास, एकासन चैतइ पूजे राम।  
 प्रोपथ शुक्ल प्रतिपदा करे, पुनि एकादश व्रतलि धरे।  
 ज्येष्ठमास के दिवस जु तीस, तामु सतिइ इह छे नगीण।  
 वृषभनाथ जिन पूजा रचे, गीत गृह्य इतिह दु सवे।  
 अति उच्छाह धर हिये मकार, करे कला अभिरुद्ध विचार।

भानाथ—यह व्रत वर्ष में एक बार करते। ज्येष्ठ शुक्ल पृथ्विमा तक। ज्येष्ठ शुक्ल, पडिमा का उवाचन करे, व

तिन के एकाशन करे । फिर 'येष्ट शुक्ल पड़िया का उपवास करे । फिर १४ दिन के १८ एकाशन करे । इस प्रकार एक महाने में २ उपवास और २८ एकाशन हरे । प्रतिदिन बड़े उल्हादपूर्वक अभिषेक करे और श्री शान्तिनाथ पूजन करे । 'ओं ह्रीं श्रीं नृपभक्तिनाथ नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप करे । इस व्रत की मर्यादा २४ वर्ष, मध्यम १२ वर्ष, और जन्म १ वर्ष की है । व्रत पूरा होने पर उद्यापन करे ।

यह व्रत गुजरात देश की रामपुरी नगरी में सोमशमा ब्राह्मण के वसन्त पुत्र की स्त्री सोमश्री ने किया था जिसके प्रभाव से धीधर राजा की पुत्री कुम्भश्री हुई । मुनिगण के उपदेश से इस भजन में भी यह व्रत धारण किया । प्रतिदिन अभिषेक करके शधान्तक लाकर अपनी पूजपाय की मासु के शगर को लगाकर कुछ गंगा दूध मिला । व्रत के प्रभाव से स्त्री लिंग छेड़कर दूसरे स्वर्ग में गयी और भवान्तर में मोक्ष प्राप्त करेगी ।

## ११—रविवार व्रत

प्रथम एक रविवार अषाढ, अष्टमि पूयो के विद्यमान ।  
 रात्रि माहिं करे पुनि चार, चार घाम भादों माहिं धार ॥  
 उत्तर एक माहीं नववार, करे पार्श्व जिन अर्चा सार ।  
 अक्षर घण नव हों निरधार, उद्यापन कर शक्ति मकार ॥  
 उत्तम प्रोपद्य की विधि जान, शामिल दूजी जगत बखान ।  
 तनिय प्रकार कहो इक ठान, एक भुक्ति विधि चौथी जान ॥  
 समय शील सहित निरधार, घरण जु नवको यह विस्तार ।  
 घरण एक में कीयो चहै, दीत आठ चालीश जु गहै ॥  
 विधि चाही चहुँवार बखान, करे पार्श्व अभिषेक विधान ।  
 कीजे उद्यापन तिहुँसार, पीढ़े तजिये व्रत निरधार ॥  
 उद्यापन की शक्ति न होय, दूनो व्रत करिये भविलोय ।  
 इह विधि लक्ष भविष्यत व्रत करो, ता फल तैं शिवतिय को करो ॥

भावाथ—यं व्रत आषाढ शुक्ल क अन्तिम रविवार स प्रारंभ होता है । आषाढ का रविवार १, भाद्रपद के ४, भाद्रपद क ४, इस प्रकार एक वर्ष म नौ (९) रविवार किया जाता है । इस प्रकार वी न्य म ८१ रविवार होते हैं ।

यदि चाहे ही समयमें करे का मान हा तो आषाढ क अन्तिम रविवार मे तरह महीनों क ४८ रविवार कर पूरा करे ।

### इस व्रत की विधियाँ चार ह

- १—उत्तम विधि—प्रात रविवार को प्राणोपवास करना ।
- २—दूसरी विधि—आमिल (इमला-चानल) का भोजना लेना ।
- ३—तीसरी विधि—एकलताना (एक शर का परोसा भोजन) करना ।
- ४—चतुर्थ विधि—एकाशन करना ।

इस प्रकार जिस विधी विधि म मन कर । मन क णिा में पाशनाथ अभिषेकपुत्रक पूजन करे । अरुधि समान हानस रक्षण कर । रक्षण की शास्त्र न ने तो मन दूना कर ।

‘ओं ह्रीं श्रीं अर्चं विन्तामाण्यपाशनाथाय नमः’ इस मन का निराल जल्प करे ।

यं व्रत आरम्भ नगरी में मतिगागर सप्त मी स्त्री गुणमाला ने किया था निगम प्रभाव म अनेक सुग्न सम्पत्तियों मन्त्रि विदुडे हुए माना पुन श्रां नृश्रा म पुन समागम हा गया था ।

### १०—एमोकारपैतीभी व्रत

अपराजित है मत्र एमोकार, अक्षर तमु पैतीम विचार ।  
कर उपवास वरण परिमाण, स्नाने सात करो बुधिदान ॥  
पुनि चौदा चौदश गण साँच, पाँचें तिथि के प्रोपध पाच ।  
नवमी नव करिगे मन्त्रि मन्त्र सच प्रोपध ”

पतासी एवकार जु येह, जाप्यमत्र नचकार जयेह ।  
मन वच तन नरनारी करे, सुरनर सुख सह शिवतिय करे ॥

—त्रियाद्येव

भाषा—य मंत्र दृढ़ धन अथात् एत यत्र शीघ्रं ह्य मन्त्र म समान दाता  
है, और इस उद्ध धन की धारि व भीतर निर पैंताग तिन हा मन व होतें हैं ।  
आपड शुक्र सतमी मे य मंत्र शुरू होता है । अती विधि निम्न प्रकार है—

१—प्रथम आपाद शुक्र सतमी का उपवास कर । फिर भाग्य की  
सतमी २, भाग्य की सतमी २, और आशिया की सतमी २, इस प्रकार  
सत उपवास करे । पचास वारिक कृष्णा पन्चमा स पौर कृष्णा पन्चमी तक  
थ गत् पाँच पंचमिया क पाँच उपवास कर । फिर पौर कृष्णा चतुर्शी स  
चैत्र कृष्णा चतुर्शी तक सात चतुर्शिया व सात उपवास कर । फिर चैत्र  
पुष्या चतुर्शी स आपाद शुक्रा चतुर्शी तक सात चतु शियों व सत  
उपवास कर । फिर भाद्रप कृष्णा नवमी स अमदा कृष्णा नवमी तक नव  
नवमिया व नव उपवास कर । इस प्रकार ३५ उपवास द्वाग मत पूरा कर ।  
प्रातः अभिवेक धुन नरनार मंत्र पूजन करे पश्चात् स्थापन कर ।

इस शमोसार मंत्र पतीसी मंत्र क प्रभन्व स गोपाल गाम्गा गाला चम्पा  
नगरी म वृषभदत्त संड के यहाँ मुन्शन नाम का पुत्र हुआ था और व  
निमित्त पात्र वैगम्य धाम्ग्य कर उमने कर्मों का नाश कर मोक्ष प्राप्त किया ।

### १३—त्रपण क्रिया त्रत

त्रपण त्रिरिया की विधि जिसी, सुनिये बुध भाषी जिन तिसी ।  
आठ आठमूल गुणतनी, पाँच पाँच अणुवत मनी ॥  
तीन तीज गुणवत फी धार, शिञ्जावत की चौथ जु चार ।  
सप धारह फी धारसि जान, तिसका प्रोपध धारह ठान ॥  
साम्य भात्र फी पडिमा एक, ग्यारस प्रतिमा की दश एक ।  
चौथ चार चहुँदानहि तनी, पडिमा एक जल गालन मनी ॥  
अनथमीय पडिमा अधरोध, तीनहु तीज चरख हग धोध ।

ये त्रेपण प्रोपध जो करे, शील सहित तप को अनुसरे ॥  
सो नर तिय सुर नृप सुख धाय, अनुक्रम ते शिव धान लहाय ।  
उद्यापन विधि करिये सार, सक्तीहीन दुगुण व्रत धार ॥

—क्रि० को०

भाषा—ए व्रत नो कर, नो मात्र और एक पक्ष में समाप्त होना है । इस का वर्ष, दो माह और एक पक्ष के अन्तर व्रत क तिन मिन ५२ ही होने हैं । विधि इस प्रकार है—

प्रथम—यात्र मूलगुण क आठ आठ क आठ उपवास कर ।

दूसरे—पाँच ग्रहब्रा के पाँच पक्षियों के पाँच उपवास कर ।

तामर—तीन गुणव्रत क तीन तीचा क तीन उपवास करे ।

चौथे—चार सिद्धाव्रत क चार चतुर्गिया क चार उपवास कर ।

पाँचवें—ब्रह्म तप क ब्रह्म ब्राह्मिणी क ब्रह्म उपवास कर ।

छठवें—समता भाव का एक पट्टिमा का एक उपवास कर ।

सातवें—ग्यारह प्रतिमा क ग्यारह ग्यारहवरा क ग्यारह उपवास करे ।

आठवें—चार तान क चार चतुर्गियों के चार उपवास करे ।

नवमं—जल गालन त्रिया का एक पट्टिमा का एक उपवास करे ।

दशवें—गन्धि भोजन त्याग का एक पट्टिमा का एक उपवास करे ।

ग्यारहवें—तान खनय क तीन तीजों क तीन उपवास करे ।

व्रत समाप्त होने पर उद्यापन करे । उद्यापन की शास्त्र न हो तो व्रत दूना कर । त्रिपाल गमोवार मन का जाप्य करे ।

## १४—नरनाग व्रत

नमोकार व्रत अब सुन राज, सत्तर दिन एकान्तर साज ।

—बधमानपुराण

भाषा—ए व्रत सत्तर दिन में समाप्त होता है । सत्तर एकान्तर करे, प्रतिदिन त्रिपाल गमोकार मन का जाप्य करे । पश्चात् ७५



## १५—चौबीस तीर्थहर व्रत

तीर्थहर चौबीसी सार, करं घाम चौबीस विचार ।

—वधमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत २४ दिन में ही समाप्त होता है, २४ तीर्थहरों का २४ उपवास करे। 'आ हा वृषभाक्षिचतुशतित्तीर्थहरैभ्यो नमः' इति मंत्र का विनाश वाच्य करे।

## १६—करमचर व्रत

अष्ट करम चूरण व्रत जान, चांसठ दिन को कही प्रमाण ।  
अष्टमि घसु केवल उपवास, अष्टमि आठ कजिका आस ।  
अष्टमि घसु इक तदुल खाय अष्टमि आठ आस इक पाय ।  
आठ अष्टमि कुर ड़ी भोजन, अष्टमि घसु इक रस इक अन्न ।  
एकलठानो अष्टमि आठ, वसु अष्टमि रुच्छाअ सु टाठ ।

दोहा—वरप दोय वसु मास में व्रत पूरा है येह ।

शील सहित व्रत कीजिये दायक मुर शिव गेह ॥

—वधमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत गे वर ष मास क भातर ६४ दिन में समाप्त होता है। निम्न निम्न प्रकार है—

१—प्रथम आठ अष्टमियाँ क आठ उपवास करे।

—दूसरे आठ अष्टमियाँ के आठ कजिका करे।

—तामरे आठ अष्टमियों को तिल तदुल भोजन करे।

४—चौथे आठ अष्टमियों का तिल एक एक आस भोजन करे।

५—पाँचवें आठ अष्टमियाँ को एक एक कुर ड़ी भोजन करे।

६—छठवें आठ अष्टमियाँ का एक रस और एक अन्न का भोजन करे।

७—सातवें आठ अष्टमियाँ का एकलठाना करे।

८—आठवें आठ अष्टमियों को रुच्छाअ का भोजन करे।

इस प्रकार मत पूरा करने उपासन करे। ~~...~~  
 मित्रपरमेष्ठिने नमः' इस मंत्र का विधान ~~...~~ करे।

### १७—समन्वित चौबीसो बने

इत समन्वित चौबीसी मनो, ~~...~~  
~~...~~

भासाथ—यह मत अर्द्धनर्त्तक उपासन ~~...~~  
 मत पूरा हान के बाद उपासन करे। ~~...~~  
 नमः' इस मंत्र का विधान जाय्य कर।

### १८—भासनापर्याया बने

अटिल—दशमी दश उपवास पवन ~~...~~  
 आठें वसु उपवास ~~...~~  
 सय प्रोपध पचीस शीलपुत ~~...~~  
 ये भासन पर्याया ~~...~~

~~...~~

भासाथ—यह मत पचीस उपवास ~~...~~  
 निग्र प्रसार है—

- १—प्रथम दश अर्धमियों के उपवास करे।
- २—दूसरे पाँच पचमियों के उपवास करे।
- ३—तीसरे आठ अर्धमियों के उपवास करे।
- ४—चौथे दो पचिमियों के उपवास करे।

उपवास पूरे होने पर उपासन ~~...~~  
 जाय्य कर।

## अन्य प्रकार—

भावनपञ्चीसी व्रत जान, एकान्तर पचाश प्रमाण ।

भाष्य—यह व्रत पचास दिन में पूरा होता है। उपरोक्त विधि के अनुसार उपासों के स्थान में नूने एकाशन कर। व्रत पूरा होने पर उपासन करे। अन्य उपरोक्त मंत्र का रू करे।

## १६—लघु पल्लविधान व्रत

पल्ल विधान तु चौतिस दिना, पञ्चिस प्रोपध नव पारणा ।  
एकहि ते पाँचहि लो चढे, फेर उतर पहिले लग अढे ।

—वर्षमानपुराण

भाष्य—यह व्रत चौतिस दिन में पूरा होता है। विधि निम्न प्रकार है—

१—प्रथम एक उपासन और एक पारणा ।

२—दूसरे दो उपासन और एक पारणा ।

—तीसरे तीन उपासन और एक पारणा ।

४—चौथे चार उपासन और एक पारणा ।

५—पाँचवें पाँच उपासन और एक पारणा ।

६—छठवें छह उपासन और एक पारणा ।

७—सातवें तीन उपासन और एक पारणा ।

८—आठवें १ उपासन और एक पारणा ।

९—नवमें एक उपासन और एक पारणा ।

इस प्रकार चौतिस दिन में २५ उपासन और ६ पारणा किये जाने ह। व्रत पूरा होने पर उपासन करे। प्रातः शमोकारभक्त का निकाल जान करे।

## २०—बृहद् पल्लविधान व्रत

सुनहु पल्लविधान व्रत, जिन आगम अनुसार ।

विरत यहत्तर कौनिये, पारह मास मम्वर ॥



ए वरप एक में चास, सत्तर द्वय आगम भाप ।

धारणे धारणे सत, धरिये एकांत महत्त ॥

धर शील विविध नर नारी प्रत करहु न दील लगायी,

सुर है अनुक्रम शिव जाइ, विधि पल तनी यह गाइ ।

—किं त्रि०

भाषा—यह मत एक वप म समाप्त होता है जिसमें ७२ दिन प्रत क होते हैं, अर्थात् ४८ उपवास, ४ तैला, ६ जला, इस प्रकार ७२ दिन होते हैं । क्रम निम्न प्रकार है—

१—आश्विन कृष्णा—परी तथा तेरवी का उपवास ।

„ गुवा—एकादशी, द्वादशी का जेला और चतुदशी का उपवास ।

२—कार्तिक कृष्णा—द्वादशी का उपवास ।

„ शुक्ल—तृतीया और द्वादशी का उपवास ।

३—मगशिर कृष्णा—एकादशी का उपवास ।

„ शुक्ल—तृतीया और द्वादशी का उपवास ।

४—पौष कृष्णा—द्वितीया और अमावस का उपवास ।

„ शुक्ल—पंचमी, सप्तमी और पूणमासी का उपवास ।

५—माघ कृष्णा—चौथ, नवमी और चतुदशी का उपवास ।

„ शुक्ल—सप्तमी अष्टमी का जेला और दशमी का उपवास ।

६—फाल्गुन कृष्णा—पंचमी और परी का जेला ।

„ शुक्ल—पड़िया और एकादशी का उपवास ।

७—चैत्र कृष्णा—पड़िया भोज का जेला, तथा चतुथा, परी, अष्टमी और एकादशी का उपवास ।

„ गुवा—सप्तमी और दशमी का उपवास ।

८—वैशाख कृष्णा—चतुर्थी और दशमी का उपवास ।

„ गुवा—द्वितीया तृतीया का जेला, तथा नवमी और अषाढशी का उपवास ।

६—ज्येष्ठ कृष्ण—अशमी का उपवास तथा नवोदशी, चतुदशी, अमावस्या का तेला ।

„ गुह्य—अशमी, अशमी और पूर्णिमा का उपवास ।

१०—आषाढ कृष्ण—अशमी का उपवास और नवोदशी, चतुदशी, मास का तेला ।

„ शुक्ल—अशमी, दशमी और पूर्णिमा का उपवास ।

११—भाद्रपद कृष्ण—चतुर्थी, पञ्ची, अशमी और चतुदशी का उपवास ।

„ शुक्ल—तृतीया का उपवास, द्वादशी नवोदशी का तेला और पूर्णिमा का उपवास ।

१२—भाद्रपद कृष्ण—द्वितीया का उपवास, षष्ठी और सप्तमी का तेला, तथा द्वादशी का उपवास ।

„ शुक्ल—पंचमी, षष्ठी, सप्तमी का तेला तथा नवमी का उपवास, एकादशी, द्वादशी, नवोदशी का तेला और पूर्णिमा का उपवास ।

प्रतिदिन त्रिकाल जाप्य नमस्कार मंत्र का दत्ता चाहिए ।  
मंत्र समाप्त होने पर उपासन करना चाहिए ।

## २१—नक्षत्रमाला मंत्र

### गीतिका छन्द

अग्निनी नक्षत्र थकी जु वासर चार अधिक पचास ही,  
तिहि मध्य एकामन सत्ताइस बीस सात उपासही ।  
युत शील मन पच तन त्रिगुहहि कर विनेकी चाय सौं,  
माला नक्षत्र सु नाम मततें छूटिये विधि दार सौं ॥

—कि० त्रि० को०

भावार्थ—यह मंत्र चौपन दिन में समाप्त होता है । प्रथम अग्निनी नक्षत्र के दिन में प्रारम्भ करे । प्रथम दिन उपवास, दूसरे दिन पारणा,

तीसरे दिन उपवास, चौथे दिन पारणा इन प्रथम मंत्रों उपवास और २७ पारणा करता हुआ क्रम से ५४ मंत्र पूरे करे। प्रतिदिन त्रिपाल गणो कार मंत्र का पाठ्य रहे। मन समाप्त होने पर उद्यापन कर।

श्राव्य प्रचार

उत्त नक्षत्रमाला उर धरे, मंत्र चौवन एकांतर धरे।

—वधमानपुराण

भावार्थ—यह उपवास की शक्ति न हो तो १४ एकारों कर मन समाप्त करे।

## २२—लघुविधान मंत्र

भादों माघ चैत्र विधि जान, यदि पंद्रस एकांतर ठान।  
पडिया द्योयज तीज प्रचारण, यापे तेला कर विधि मान ॥  
सकति प्रमाण जु पोषहि धरे, चौथे दिन एकासन धरे।  
पाचों दिवस शील को पाल, तीन चरण मंत्र करहि सम्हाल ॥

—त्रि० वि० क्रि०

भावार्थ—यह मंत्र भाद्रपद कृष्ण अमास्या से शुरू होता है, प्रथम अमास्या का एकाशन करे। फिर पडिया, द्योय और तीज का तेला करे। चतुर्थी को एकाशन करे। इस प्रकार प्रतिदिन भाद्रपद, माघ और चैत्र मंत्र करे। तीन वर्ष समाप्त होने पर उद्यापन कर। ओं ही था महापारम्बामिन नम इम मन्त्र का त्रिपाल जाय्य रहे। मन पूरा होने पर उद्यापन करे।

## दूसरी विधि

दूजी विधि आगम यह कहें, पडिया तीजहि प्रोषध रहै।  
द्योयज दिवस करे एकांतर, यह मर्याद चरण छह भन्त ॥

—क्रि० वि० क्रि०

भावार्थ—भादों, माघ और चैत्र मास में शुद्ध पडिया और तीज का उपवास करे। दायन तथा चतुर्थी का पारणा करे। इस प्रकार छह वर्ष पूराकर उद्यापन करे।

### तीसरी विधि

पढियाँ तीव्र एकांत करेय, दोषज को उपवास धरेय ।  
मर्यादा भाषी नव वष, कगिये भवि मनमें घर हर्ष ॥  
पाँच दिवस लौं पाले शील, स्वर्गादिक सुख पाये लील ।  
पुन उत्तम नर पदवी लहे, दीक्षा धर शिष्यतिय कर गह ।

—कि० सि० कि०

भावार्थ—भाषी, मात्र और चैत्र मास में शुद्ध पड़िसा और तीव्र का एकांत तथा दोषज का उपवास । और चौदह का एकांत । उस प्रकार नौ वष पूरे कर उपासन करे ।

वाराणसी नगरी में राजा विश्वसेन की रानी विशालाक्ष्या तथा उसकी चमरी श्रीर रंगा नाम की सखियाँ ने मनि निन्ता कर तीव्र पाप उपान्त किया था जिसके फलस्वरूप बहुत काल तक अज्ञान सुयोनिषों में भ्रमण करती हुई उज्जयिनी नगरी के पाग पलास नाम के ग्राम में एक शूद्र के घर तीनों पुत्रियाँ हुई जो बहुत ही कुरूप थीं । इनकी माता पिता जन्मे ही मरण को प्राप्त हो गये थे, इनकी कुलिन बन्धुवार के कारण ग्रामवासियों ने इन तीनों को ग्राम से निकाल दिया था । ये तीनों भ्रमण करती हुई पाण्डुलीपुर के उद्यान में पहुँचीं । वहाँ इन्हें मुनिराज के स्थान हुए । उनके उपदेशामृत से प्रभावित होकर तानों ने लब्धिविधान व्रत लिया, श्रीर बहुत श्रद्धा तथा भक्ति प्रदर्श उभर किया । अन्त में मरण कर व्रतके प्रभाव से पाँचों स्वर्ग में गए हुई । वहाँ वे चतुस्त्र विशालाक्ष्या का जीव तो मगध न्यक वाड्यनगर में काशवपुत्रीय सडिल्य ब्राह्मण की उल्लिख मंत्री के गौतम नाम का पुत्र हुआ । जो महाश्वर स्वामी के समग्रारण्य में प्रथम गणधर हुआ । कुछ काल बाद कालज्ञान प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त किया । तथा चमरी श्रीर रंगा के जीव स्वप्राय से मनुष्यवश प्राप्त कर तप द्वारा व्रतार्थ कर मोक्ष प्राप्त किया ।



## २३—सप्तकुम्भ व्रत

सप्तकुम्भ व्रत वासठदिता, प्रोपध धर पंतालिस दिना ।  
सत्रह पारने के दिन जान, सप्तकुम्भव्रत धर उर ठान ॥

—वधमानपुराण

भाषा—यह व्रत ६२ दिन में पूरा किया जाता है जिसमें ६५ उपवास और मन्त्र पारणा होने हैं । व्रत पूर्ण होने पर उत्थापन करें, गुमानागर मन का त्रिकाल जाप्य कर ।

## २४—सिंहनिष्क्रीडित व्रत

दोहा—सिंहनिष्क्रीडित व्रतननो, बहूँ विशप यखान ।

विधिमा कीने भावयुत, कर्मनिजरा टान ॥

चालउद—कर प्रथम एक उपवास, पुन दोय एक तिहु जास ।

दोय चार तीन पण कीजे, चव पाँच पाँच कर कीने ॥

चहुँ पाँच तीन चहुँ दोई, निहुँ एक दोय इफ होइ ।

सब घास साठ गण लीजे, तसु बीस पारणा कीजे ॥

अस्सी दिन में व्रत येह, कर बहो जिनागम येह ।

यह तप शिव सुख का दायक, कीनो पूरव मुनिनायक ॥

—हि० मि० कि०

यह व्रत ८० दिन में पूरा होता है जिसमें ६० उपवास और २० पारणाएँ होती हैं । यथा—

१—एक उपवास, एक पारणा,

—एक उपवास एक पारणा,

५—१ उपवास एक पारणा,

७—तीन उपवास एक पारणा,

९—चार उपवास एक पारणा,

११—पाँच उपवास एक पारणा,

२—दो उपवास एक पारणा,

४—तीन उपवास एक पारणा,

६—चार उपवास एक पारणा,

८—पाँच उपवास एक पारणा,

१०—पाँच उपवास एक पारणा,

१२—चार उपवास एक पारणा,

- १ —पाँच उपवास एक पारणा, १४—तीन उपवास एक पारणा,  
 १५—चार उपवास एक पारणा, १६—दो उपवास एक पारणा,  
 १७—तीन उपवास एक पारणा, १८—एक उपवास एक पारणा,  
 १९—दो उपवास एक पारणा, २०—एक उपवास एक पारणा,

इस प्रकार यह व्रत ८० दिन में समाप्त होता है। व्रत के दिनों में  
 विनाम नमस्कार मन्त्र का पाठ करना चाहिये।

### २५—बृहत्सिंहनिष्क्रीडित व्रत

बृहत्सिंहनिष्क्रीडित व्रत सुनो, इससे सतहत्तर दिन गनो ।  
 इससे पेंतालिन्य उपवास, करे पारणै वृत्तिस जास ।

भावार्थ—यह व्रत १७७ दिन में समाप्त होता है, जिसमें १४५  
 उपवास और २ पारणा होने हैं, यथा—

- |                         |                         |
|-------------------------|-------------------------|
| १—उपवास एक पारणा एक,    | २—उपवास दो पारणा एक,    |
| ३—उपवास एक पारणा एक,    | ४—उपवास तीन पारणा एक,   |
| ५—उपवास दो पारणा एक,    | ६—उपवास चार पारणा एक,   |
| ७—उपवास तीन पारणा एक,   | ८—उपवास पाँच पारणा एक,  |
| ९—उपवास चार पारणा एक,   | १०—उपवास छह पारणा एक,   |
| ११—उपवास पाँच पारणा एक, | १२—उपवास सात पारणा एक,  |
| १३—उपवास छह पारणा एक,   | १४—उपवास आठ पारणा एक,   |
| १५—उपवास सात पारणा एक,  | १६—उपवास नौ पारणा एक,   |
| १७—उपवास आठ पारणा एक,   | १८—उपवास दस पारणा एक,   |
| १९—उपवास आठ पारणा एक,   | २०—उपवास छह पारणा एक    |
| २१—उपवास सात पारणा एक,  | २१—उपवास पाँच पारणा एक, |
| २२—उपवास छह पारणा एक,   | २४—उपवास चार पारणा एक,  |
| २३—उपवास छह पारणा एक,   | २६—उपवास तीन पारणा      |
| २४—उपवास पाँच पारणा एक, | २८—उपवास दो पारणा ।     |
| २७—उपवास चार पारणा एक,  |                         |

- २६—उपवास तीन पारणा एक, ३०—उपवास षड् पारणा एक,  
 ३१—उपवास दो पारणा एक, ३ —उपवास एक पारणा एक,

इस प्रकार यद्वा मा १७७ दिन में समाप्त होता है। मा ५ दिनों में  
 त्रिकाल नमस्कार मन्त्र वा जाप्य करना चाहिये। मा ३३३ के मा  
 उपासना करना चाहिये।

### २६—भाद्रपदसिंहनिष्ठीडित व्रत

भाद्रपदसिंहनिष्ठीडित जान, छय शत दिन ताको परिमाण ।  
 इकराँ पगहसर उपवास, करे पाण्य पचिस जास ॥

भाद्रपद—५ मा २०० दिन में समाप्त होता है दिन २७५ उपा-  
 सना और ५५ पारणा होने हैं। यथा—

- |                           |                           |
|---------------------------|---------------------------|
| १—उपवास एक पारणा एक,      | २—उपवास दो पारणा एक,      |
| ३—उपवास तीन पारणा एक,     | ४—उपवास चार पारणा एक      |
| ५—उपवास पाँच पारणा एक,    | ६—उपवास षड् पारणा एक,     |
| ७—उपवास सात पारणा एक,     | ८—उपवास आठ पारणा एक,      |
| ९—उपवास नौ पारणा एक       | १०—उपवास दश पारणा एक,     |
| ११—उपवास ग्यारह पारणा एक, | ११—उपवास बारह पारणा एक    |
| १२—उपवास तेरह पारणा एक    | १२—उपवास तेरह पारणा एक    |
| १३—उपवास बारह पारणा एक    | १६—उपवास ग्यारह पारणा एक, |
| १७—उपवास दश पारणा एक,     | १८—उपवास नौ पारणा एक,     |
| १९—उपवास आठ पारणा एक,     | २०—उपवास छह पारणा एक,     |
| २१—उपवास पाँच पारणा एक,   | २२—उपवास चार पारणा एक,    |
| २३—उपवास तीन पारणा एक,    | २४—उपवास दो पारणा एक,     |
| २५—उपवास एक पारणा एक ।    |                           |

इस प्रकार २०० दिन में व्रत समाप्त कर । त्रिकाल नमस्कार मन्त्र वा  
 ५५ करे। व्रत पूर्ण होने पर उपासना करे ।

## २७—त्रिगुणसार व्रत

त्रिगुणसार व्रत इकतालीस, ग्यारा जेवा प्रोपध तीस ।

—वधमानपुराण

भाषाथ—य<sup>२</sup> व्रत ४१ तिनो म पूरा हाता ई तिमम २० उपवास  
और ११ पारणा होते है । यथा—

- |                       |                        |
|-----------------------|------------------------|
| १—एक उपवास एक पारणा,  | २—एक उपवास एक पारणा,   |
| २—दो उपवास एक पारणा,  | ४—तीन उपवास एक पारणा,  |
| ५—चार उपवास एक पारणा, | ६—पाँच उपवास एक पारणा, |
| ७—चार उपवास एक पारणा, | ८—चार उपवास एक पारणा,  |
| ९—तीन उपवास एक पारणा, | १०—दो उपवास एक पारणा,  |
| ११—एक उपवास एक पारणा, |                        |

इम प्रकार ४१ दिन में व्रत समाप्त कर, प्रतिदिन त्रिसाल तन्त्रकार  
मन्त्र का जाप्य कर । व्रत पूरा होने पर उन्नाशन कर ।

## २८—गारा मो चौतीसा ( चारित्रशुद्धि) व्रत

अद्विजल छन्द—

दोपज पाँचों आठों धारस चौदशी,  
इनके प्रोपध करे सरुल अथ जो नशी ।  
दश प्रोपध इक मास में द्वय पत्र के भये,  
एक धरप के इक से धीस मिल सब ठये ।  
पूरण हे दश वर्ष सार्ध त्रय मास में,  
हैं चारसती चाँतिस प्रोपध जास में ।  
सम्यक चारित तनी भावना चित गहै,  
धारह सी चौतीसा व्रत मुनिजन कहै ।

—कि० सि० त्रि०

भासाथ—यत् व्रत १० वष, ३ माह और १५ ति में समाप्त होता है जिसमें १२३४ उपवास होने हैं। अर्थात् प्रत्येक माह की दस पोषण, नौ पचमा, नौ अष्टमी, नौ एकादशी और दो चतुर्दशी, इस प्रकार एक माह में १० उपवास किये जाने हैं, इस व्रत का प्रारम्भ भाद्रपद शुक्ल पक्षिमा में होता है। व्रत के दिनों में विनाश जाय 'ओं हीं अग्नि ध्या उसा चारित्रशुद्धिप्रतेम्या नम मय का दना चान्ये। व्रत पूरा होने पर उत्थापन करना चाहिये।

यत् व्रत उज्जैन नगरी के राजा हेमदमा ने किया था जिसके प्रमाण से तीर्थरे भद्र म विष्णु क्षेत्र की विजयापुरी नगरी में धनजय राजा के चन्द्रभानु नाम का तीर्थरेर पुत्र हुआ और पचकल्याण प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त किया।

## २६—सर्वतोभद्र व्रत

व्रत जो सर्वतोभद्र विचार, सौ दिन की मर्यादा धार।  
प्रोषध पचहत्तर परवान, अरु पच्चीस पारने जान।

—वधमानपुराण

भासाथ—यह व्रत एकसौ ति म पूरा होता है, जिसमें ७३ उपवास और २५ पारणा होते हैं। यथा—

- |                        |                         |
|------------------------|-------------------------|
| १—एक उपवास एक पारणा,   | २—१ उपवास एक पारणा,     |
| २—दोन उपवास एक पारणा,  | ४—चार उपवास एक पारणा,   |
| ५—पाँच उपवास एक पारणा, | ६—चार उपवास एक पारणा,   |
| ७—पाँच उपवास एक पारणा, | ८—एक उपवास एक पारणा,    |
| ९—नौ उपवास एक पारणा,   | १०—तीन उपवास एक पारणा,  |
| ११—नौ उपवास एक पारणा   | १२—तीन उपवास एक पारणा,  |
| १३—चार उपवास एक पारणा, | १४—पाँच उपवास एक पारणा, |
| १५—एक उपवास एक पारणा,  | १६—पाँच उपवास एक पारणा, |
| १७—एक उपवास एक पारणा,  | १८—दो उपवास एक पारणा,   |

- |                         |                        |
|-------------------------|------------------------|
| १६—तीन उपवास एक पारणा,  | २०—चार उपवास एक पारणा, |
| २१—तीन उपवास एक पारणा,  | २१—चार उपवास एक पारणा, |
| २२—पाँच उपवास एक पारणा, | २४—एक उपवास एक पारणा,  |
| २५—तीन उपवास एक पारणा । |                        |

इस प्रकार व्रत समाप्त करे । त्रिशाल नमस्कार मंत्र का पाठ्य करे ।  
व्रत पूर्ण होने पर उपासन करे ।

### ३०—महासर्वतोभद्र व्रत

महा सचतोभद्र व्रत ज्ञान, दोसो पेंतालिस दिन मान ।  
इकसी छथानवे दिन उपवास, करे पारणे सब उनचास ॥

—सुष्णि-तरंगिणा

भासाथ—एक व्रत गे नौ पेंतालीस दिन म पूरा हाता है जिनम एक म  
छथानवे उपवास और उनचास पारणे होने हैं—

- |                         |                         |
|-------------------------|-------------------------|
| १—एक उपवास एक पारणा,    | २—तीन उपवास एक पारणा,   |
| २—तीन उपवास एक पारणा,   | ४—चार उपवास एक पारणा,   |
| ५—पाँच उपवास एक पारणा,  | ६—छठ उपवास एक पारणा,    |
| ७—सात उपवास एक पारणा,   | ८—एक उपवास एक पारणा,    |
| ९—दो उपवास एक पारणा,    | १०—तीन उपवास एक पारणा,  |
| ११—चार उपवास एक पारणा,  | १२—पाँच उपवास एक पारणा, |
| १३—छठ उपवास एक पारणा,   | १४—सात उपवास एक पारणा,  |
| १५—एक उपवास एक पारणा,   | १६—दो उपवास एक पारणा,   |
| १७—तीन उपवास एक पारणा,  | १८—चार उपवास एक पारणा,  |
| १९—पाँच उपवास एक पारणा, | २०—छठ उपवास एक पारणा,   |
| २१—सात उपवास एक पारणा,  | २२—एक उपवास एक पारणा,   |
| २३—दो उपवास एक पारणा,   | २४—तीन उपवास एक पारणा,  |
| २५—चार उपवास एक पारणा,  | २६—पाँच उपवास एक        |

## ३५—वृन्द जिनगुणसम्पत्ति व्रत

चालखद

जिनगुण सम्पत्ति व्रत धार, सुनिये तिनको अग्रधार,  
 दश अतिशय जिन जन मत ही, लीये उपजे ह्यस सत ही ।  
 उपजो जब केवलज्ञान, दश अतिशय प्रगटे जाम,  
 इम अतिशय बीस जु केरी, कर बीस दसैं सुख घेरी ।  
 देवन वृत अतिशय जानो, चौदश चौदह तिहिं टानो,  
 वसु प्रातिहाय जिनदेव, वसु आठे करिये एव ।  
 भावन सोलह कारण की, पडिमा सोलह धरनी की,  
 पाचों कल्याणक जाकी, पाँच पाँचों कर ताकी ।  
 प्रोपघ ये प्रेसठ जानो, युत शील भविक जन ठानो  
 उत्तम सुर नर सुख पाये, अनु क्रमतें शिवपुर जाये ।

—कि० सि० क्रि०

भावार्थ—य व्रत १० मास में समाप्त होता है, जिसमें व्रत उपवास होते हैं। यथा—

- १—प्रथम जम क दश अतिशयों के दश दशमी क उपवास कर ।
- २—दूसरे केवलज्ञान क दश अतिशयों के दश दशमी क उपवास कर ।
- ३—तीसरें वैद्यव्रत चौदह अतिशयों के चौदह चतुशियों क उपवास कर ।
- ४—चाथे आठ प्रातिहारों के आठ अष्टमिया क उपवास कर ।
- ५—पाँचों दौदश कारण भावना क सोलह पडिमा क उपवास कर ।
- ६—हठवें पाँचा कल्याणकों क पाँच पचमिया के उपवास कर ।

७म प्रकार ६३ उपवास द्वाग व्रत पृथक् करे । त्रिकाल नमस्कार मात्र का वाप्य करे । व्रत पूरा होने पर उत्रापन करे ।

यह व्रत पाटलीपुर नगर में नागात्त सेन की स्त्री सुमति सेगनी ने किया था जिसके प्रभाव से अनेक मुक्त भोगनर अनुक्रम में इम्तिनागपुर में

धेरस नाम का राजा हुआ था और भगवान् श्राद्धिनाथ का श्राद्धर तन दस सवार ने सिद्ध हाकर तप द्वारा कमनाश कर कर्तव्यजन प्रत क्रिया और मोक्ष को प्राप्त हुए ।

### ३६—मध्यम जिनगुणसम्पत्ति त्रत

जिनगुण सप्त द्वासासठ दीस, प्रोपध छत्तिस पारणा तीस ।

—वधमानपुराण

भाषा १—य त्रत ६६ दिन म समान जना २ जिनम २६ उपनाम और २० पारणा होने ० । क्या—

१—जे उपनाम एक पारणा	१—एक उपनाम एक पारणा
३—एक उपनाम एक पारणा	६—एक उपनाम एक पारणा
५—एक उपनाम एक पारणा	६—एक उपनाम एक पारणा
७—एक उपनाम एक पारणा	८—एक उपनाम एक पारणा
९—एक उपनाम एक पारणा	१०—एक उपनाम एक पारणा
११—एक उपनाम एक पारणा	१२—एक उपनाम एक पारणा
१३—एक उपनाम एक पारणा	१६—एक उपनाम एक पारणा
१५—एक उपनाम एक पारणा	१६—एक उपनाम एक पारणा
१७—एक उपनाम एक पारणा	१६—एक उपनाम एक पारणा
१९—एक उपनाम एक पारणा	१८—एक उपनाम एक पारणा
२१—एक उपनाम एक पारणा	२०—एक उपनाम एक पारणा
२३—एक उपनाम एक पारणा	२०—एक उपनाम एक पारणा
२५—एक उपनाम एक पारणा	२४—एक उपनाम एक पारणा
२७—एक उपनाम एक पारणा	२६—एक उपनाम एक पारणा
२९—एक उपनाम एक पारणा	२८—एक उपनाम एक पारणा
३१—एक उपनाम एक पारणा	३०—एक उपनाम एक पारणा

इस प्रकार त्रत पूरा कर उपासन करे । 'श्रीं ही शहन्त परमेष्ठिन नम ' उस मंत्र का विनाश नाथ्य करे ।



## ३७—लघु जिनगुण सपत्ति व्रत

लघुजिन गुण सपत्ति त्रेसट्टि, कर एकांतर पूय प्रमेट्टि ।

भाषा—यह व्रत त्रेसठ दिन में पूरा किया जाता है, इसमें ६३ एनाशन होते हैं। व्रत समाप्त होने पर उद्यापन करे। त्रिकाल तन्त्रकार मंत्र का जाप करे।

## ३८—वृद्धसुखसपत्ति व्रत

पडिमा इव दोयज दोइ, तिहुँ तीज चौथ चहुँ जोई ।

पाचें पण छटि छह थानो, सानें पुनि सात वखानो ॥

आठें के प्रोपध आठ, नवमी नव आगम पाठ ।

दशमी दश शारस घारे, बारस के प्रोपध वारे ॥

तेरस के नेरा लीने, चौदशि के चौदह पीजे ।

पद्रसि पद्रह शिवकारी, धीस रुसौ प्रोपध धारी ॥

यह सुख सपत्ति व्रत नीको, भव भव सुखदायक जी को ।

मन वच वाया शुद्ध कीजे, भविजन नरभव फल लीजे ॥

—कि० सि० कि०

यह व्रत १२० दिन में पूरा किया जाता है जिसमें १२० उपवास होते हैं, यथा—

१—एक पडिमा का एक उपवास,

२—दो त्रयज के दो उपवास,

३—तीन तीन के तीन उपवास,

४—चार चौथ के चार उपवास,

५—पाँच पंचमियों के पाँच उपवास,

६—छह पडिया के छह उपवास,

७—सात सप्तमियों के सात उपवास,

८—आठ अष्टमियों के आठ उपवास,

९—नौ नवमियों के नौ उपवास,

१०—दश दशमियों के दस उपवास,

११—बारह द्वादशियों के बारह उपवास, १२—बारह द्वादशियों के बारह उपवास

१३—तेरह त्रयोदशियों के तेरह उपवास, १४—चौदह चतुर्दशियों के चौदह

१५—पंद्रह पंचमियों के पंद्रह उपवास । उपवास,

इस प्रकार व्रत पूरा कर उद्यापन करे। त्रिकाल श्लोकान्तर मन का जाप करे।

### ३६—मध्यम सुखसपत्ति व्रत

सुख सपत्ति दिन इकसोबीस, पूयो मावस प्रोपध कीस ।

—कि० सि० त्रि०

भासाध—यद् व्रत पाँच वर म पूरा होना है, तिमम १२० उपवास होते हैं । यथा—प्रत्येक मास की पूर्णिमा और अमावास्या के दिन उपवास कर । इस प्रकार २५ वर म १२० उपवास द्वारा व्रत पूरा कर उत्थापन कर । नमस्कार मात्र का त्रिकाल जाप्य कर ।

### ४०—लघु सुखसपत्ति व्रत

षोडश तिथि प्रोपध पट्दश, लघुवत सुखदाय श्रनेऽस ।

—कि० सि० त्रि०

भासाध—यद् व्रत सोलह दिन म पूरा होना है । जिस स्त्रियाँ भी मास की शुक्ल पक्षिमा म कृष्ण पक्षिमा तक १६ दिन के १६ उपवास करे । प्रातःत्रिंशत् त्रिकाल नमस्कार मन्त्र का जाप्य कर । व्रत पूर्ण होनेपर उत्थापन कर ।

### ४१—रुद्रचसत व्रत

रुद्रचसत चवालिस दिना, पँतिस प्रोपध नव पारणा ।

—वधमानपुराण

भासाध—यद् व्रत चालीस दिन म पूरा होना है, तिमम ५ उपवास और नव पारणा होते हैं । यथा—

- |                       |                        |
|-----------------------|------------------------|
| १—नौ उपवास एक पारणा,  | २—तीन उपवास एक पारणा,  |
| ३—चार उपवास एक पारणा, | ४—पाँच उपवास एक पारणा, |
| ५—छः उपवास एक पारणा,  | ६—छः उपवास एक पारणा,   |
| ७—चार उपवास एक पारणा, | ८—तीन उपवास एक पारणा,  |
| ९—एक उपवास एक पारणा । |                        |

इस प्रकार व्रत पूरा करे । त्रिकाल नमस्कार मात्र का जाप्य कर । व्रत पूरा होनेपर उत्थापन करे ।

## ४२—शीलकल्याणक व्रत

दोहा—शीलकल्याणक व्रत तनो, भेद सुनो जे सत ।  
मन वच फाय त्रिगुडि कर, धारो भवि हरपत ॥

शाल छद्

तिरयच रु नर सुर नारी, चौथी दिन चेतन सारी ।  
पच इन्द्रियातं चहुँ गुनिये, तिन सरया वीस जु मुनिये ॥  
मन वच तन तें ते धीस, गुनिये हं तीस रु तीस ।  
वृत्त कारित अनुमोदन तें, गुनिये पुन साठहिं गनतें ॥  
इकसौ अस्सी हुए जोइ, प्रोपधकर भविघर सोइ ।  
इक वरप माहिं निरधार, करिये पूरण व्रत सार ॥  
द्वय दिन उपवास जु कीजे, दूजे दिन असन सुलीजे ।  
तीजे दिन फिर उपवास, इम वरहु इकातर तास ।  
इकसौ अस्सी एकात, इतने ही उपवास करत ।  
दिन साठे तीनमो धीर, पालें नित शाल गहीर ॥  
यह शीलकल्याणक नाम, व्रत है बहुविध सुखधाम ।  
नीर्थकर पदधी पावे, समकित युत व्रत जो ध्यावे ॥

—कि० सि० वि०

भावार्थ—यह व्रत २५० दिन म पूरा होता है विममे १८० उप  
ग्री १८० पारणायें होती हैं । यग—१ मनुष्यनी २ तिवेचनी  
अचेतनी ४ इन चार का पाँच इन्द्रिया म गुणा किया तो २० हु  
फिर २० को मन, वचन, साथ, इन तीन मे गुणा तो ६० हुए ।  
६० को वृत्त, कारित, अनुमाना इन तीन मे गुणा १८ हुए । इन ए  
अग्नी शील के भेदों के १८ उपवास कर । एक उपवास, एक पार  
व्रत म से १८० उपवास व १८० पारणायें कर । एक वर्ष पूर्ण होन  
उत्पाप करे । नमस्कार मात्र का निस्तान जाय करे ।

### ४३—श्रुतिकल्याणक व्रत

श्रुति कल्याणक दिवस पच्चीस, पच पच दिन व्योरो दीस ।  
 प्रोपच कजिक एकलठानो, रूक्ष जु अनागार पहिचानो ॥  
 श्रुतिकल्याणक यह विधि धार, श्रुतहि पढन कर लेय आहार ॥  
 —कि० वि० कि

मात्रा १—य व्रत पच्चीस दिन में पूरा होता है । यथा—प्रथम पाँच दिन के ५ उपवास करे । फिर दूसरे पाँच दिन काठिक आहार करे । तीसरे पाँच दिन एकलठाना करे । चौथे पाँच दिन रूक्ष आहार करे । पाँचवें पाँच दिन मुनिव्रति से आहार करे । २५ प्रकार २५ दिन पूरा होनेपर उपासन करे । नमस्कार मात्र सा त्रिकाल जाय्य करे । शाम्ब स्वाध्याय के बाद आहार करे ।

### ४४—चद्रकल्याणक व्रत

चद्रकल्याणक दिवस पच्चीस, पाच पाच दिन व्योरे दीस ।  
 प्रोपच कजिक एकलठान, रूक्ष जु अनागार पहिचान ।  
 चद्रकल्याणक व्रत विधि येह, मन घच तन करिये भविल्लोय ।  
 —वधमानपुराण

मात्रार्थ—य व्रत २५ दिन में पूरा होता है । निम्नमे प्रथम पाँच दिन उपवास, दूसरे पाँच दिन काठिक भोजन, तीसरे पाँच दिन एकलठाना, चौथे पाँच दिन रूक्ष भोजन, पाँचवें पाँच दिन मुनिव्रति से भोजन करे । व्रत पूरा होने पर उपासन करे । नमस्कार मात्र सा त्रिकाल जाय्य करे ।

### ४५—लघुकल्याणक व्रत

लघुकल्याणक व्रत दिनपच, एक एक दिन यहि विधि सच ।  
 प्रोपच कजिक एकलठान, रूक्ष जु अनागार पहिचान ।

भावाथ—य व्रत पाँच दिन में पूरा होता है निम्न प्रथम १ दिन उपवास, दूसरे १ दिन काजिका भोजन, तीसरे १ दिन एउलठाना, चौथे १ दिन रूत भोजन, पाँचवें १ दिन मनिवृत्ति से भोजन करे। व्रत पूरा होना पर उपासन करे। विनाल नमस्कार मन का जाप्य करे।

### ४६—मध्यमल्याण व्रत

मध्य कत्याण जु तेरा दिना, आदि अत द्वय प्रोपध गिना ।  
एकल चार काजिका तीन, रूत जु अनागार द्वय दून ॥

—यधमानपुराण

भावाथ—य व्रत १३ दिन में पूरा होता है। यथा—प्रथम एक उपवास, दूसरे चार दिन एकलठाना, तीसरे काजिकाहार, चौथे २ रूत भोजन, पाँचवें २ दिन मनिवृत्ति से आहार, छठवें १ उपवास। इस प्रकार १२ दिन करे। विनाल नमस्कार मन का जाप्य करे। व्रत पूरा होने पर उपासन करे।

### ४७—श्रुतस्वध व्रत

दोहा—श्रुतस्वध व्रत तीन विधि, उत्तम मध्य कनिष्ठ ।  
षोडश प्रोपध तीस द्वय चासर माहि गरिष्ठ ॥  
दश प्रोपध दिन घीस में, मध्यम विधि लख लेह ।  
घसु प्रोपध एक पद में, छै कनिष्ठ व्रत येह ॥  
कथन विशेष कथा महा, भादों माहि करेय ।  
त्रिविधि निनेश्वर भावियो करके कर्म उच्छेद ॥

—कि० वि० वि०

भावाथ—यह व्रत माद्रपद मास में किया जाता है। इसकी विधियाँ तीन प्रकार हैं—१ उत्तम विधि, २ मध्यम विधि, ३ जन्य विधि।

१—उत्तम विधि—माद्रपद कृष्ण एकम से आश्विन कृष्ण एकम तक २२ दिन में १६ उपवास और मोचन पारणा।

२—मध्यम विधि—भाद्रपद म २० तिन म १० उपवास और १० पारणाएँ करना ।

१—वध य विधि—१६ दिन म ८ उपवास और ८ पारणाएँ करना ।

‘धा हीं धा भिनमुत्तोद्भूत स्याद्वाग्मनसगमितद्वादशागश्रुतज्ञानाय नमः’  
इम मन्त्र का निराल जाप्य करे । राहू पर ममात् होन क रा उद्यापन करे ।

### अन्य विधि

श्रुतस्वधव्रत जब आदरे, वृत्तिस दिवस पकात करे ।

—वधमानपराण

भासाथ—य व्रत २२ दिन म पूरा गेना है जिनम ३२ एकाशन होते हैं । उपवास मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे । व्रत ममात् होन क रा उद्यापन करे ।

यइ व्रत पूर्ण विद म पुष्कलावती ऋष के पुटगीर नगर में राजा गुण भद्र की पद्मिनी गुणवती ने सामथर स्वामी के निरु धारण किया था, जिसके प्रभात से चाये भर में पश्चिम दिशेह कुमुन्ती ऋष के अशोकपुर नगर में पद्मनाभे राजा की पद्मिनी नित्यज्ञा के गर्भ से तदधर नाम का तार्यकर हुआ जो तीर्थङ्कर, चक्रवर्ती और कामरु इन तीन पदों से युक्त था, और नीति प्रक राज्य भागकर सखार से उवास होकर जिनगीला ग्रहण कर कमनाथ कर मोक्ष प्राप्त किया ।

### ४८—श्रुतज्ञान व्रत

दोहा—प्रोपधव्रत श्रुतज्ञान के जिनघर भापे जेम ।

सकल आठ चऊ पक्सो बुधि सुन भवि धर जेम ॥

#### चौपाई

शुक्र पक्ष में व्रत कर सार, षोडश तिथि के मध्य विचार ।  
सोलह पडिमा प्रोपध धार, सित मित कर पक्ष में निग्धार ॥  
और फहूँ तिथि तिन कर तीज, चौध चार पण पचमी लीज ।  
छह छुटि सारें सात यखान, आठें आठ नमें नव जान ॥

दशमी दश ग्यारह द्वादशी, प्रोषध कर बारह बारसी ।  
तेरति तेरह घास यत्नान चौदश चौदह प्रोषध ठान ॥  
पूयो के पंद्रह उपवास, माघम पंद्रह करिये ताग ।  
शील सहित प्रोषध भय करे, भयभय के सचित अघ हरे ॥

—दि० वि० दि०

भाषण—य व्रत १२ र ८ माह में मनाया जाता है जिसमें १८८ उपवास होने हैं, यथा—

- |                                 |                                   |
|---------------------------------|-----------------------------------|
| १—मोलट पहिभा १ मोल उपवास,       | —तीन तंत्र के तीन उपवास,          |
| २—चार चौथ के चार उपवास          | ४—पाँच पासी के पाँच उपवास,        |
| ५—दू पत्नी के दू उपवास          | ६—आठ अठमी १ आठ उपवास,             |
| ७—आठ अठमी के आठ उपवास,          | ८—नौ नौमी के नौ उपवास,            |
| ९—दश दशमी के दश उपवास           | १०—ग्यारह ग्यारसी १ ग्यारह उपवास, |
| ११—बारह द्वादशी के बारह उपवास   | १२—तेरह तेरहसी १ तेरह उपवास       |
| १३—चौदह चतुदशी के चौदह उपवास    | १४—पंद्रह पंद्रह के पंद्रह उपवास, |
| १५—पंद्रह अमावस के पंद्रह उपवास |                                   |

इस प्रकार का पूण्य कर उपासन करे। शौ ही द्वादशमासधृतशानाय नम इम मन्त्र का निजाल जाप्य करे।

### ४६—पञ्चश्रुतान व्रत

पञ्च श्रुतशान्ति व्रतसार, कर उपवास निरंतर धार ।  
इकसी अठसठ दिन परवान, जत्र चाहे आरभे धान ॥

—वर्धमानपुराण

भाषण—य व्रत ३३६ दिन में मनाया जाता है, जिसमें १६८ उपवास और १६८ पाण्डे होते हैं। एक उपवास एक पाण्डा इस श्रुतान में करे। शौ ही पञ्चश्रुतशानाय नम इम मन्त्र का निजाल जाप्य करे। व्रत पूण्य शान्ति उपासन करे।

५०—ज्ञानपद्मीसी व्रत

अडिल्ल—प्रोपध चौदह चौदशि के विधियुत करे,  
 तैने झार झारसि के प्रोपध करे ।  
 सब उपवास पच्चीस शीत व्रतयुत धरे,  
 ज्ञान पद्मीसी धरन जिनागम इम करे ॥

—कि० सि० त्रि०

भावार्थ—य व्रत पद्मीस दिन में पूरा होना है, अर्थात् चौदह पर्व के चौदह चतुर्थाशया के उपवास और ग्यारह अग व ग्यारह एकाशिया व उपवास कुल २५ करे । 'श्रीं हीं ह्रादनागधृतज्ञानाय नमः' मंत्र का विनाल जाप्य करे । व्रत पूरा होनेपर उद्यापन करे ।

५१—बृहद् रत्नावलि व्रत

व्रत रत्नावलि बृहद् बखान, प्रयशत छथासठ दिन परवान ।  
 प्रोपध सबे तीनसे करे, छथामठ तहाँ पारणा धरे ॥

—कि० सि० त्रि०

भावार्थ—य व्रत ३६६ दिन में पूरा होता है, निम्में २०० उपवास और ६६ पाठनाय होती है । इस व्रत को निम् किन्ही मास में प्रारंभ करे । नमन्यार मंत्र का विनाल जाप्य करे । व्रत पूरा होनेपर उद्यापन करे ।

५२—मयम रत्नावलि व्रत

चाल छद

रत्नावलि मध्यम करिये, प्रोपध तीजहिं सुदि धरिये ।  
 पचमि अष्टमि उपवास, सितपत्र तिह उपवास ॥  
 दोयज पचमि अघयारी, आठें प्रोपध सुखकारी ।  
 इफ मास माहिं छह जानो, इफ वष यहत्तर ठानो ॥  
 उद्यापन शक्ति प्रमाण, करके तजिये मतिमान ।  
 दग युत अरु शील धरीने, तानें उचम फल लीजे ॥

—कि० सि० त्रि०



भासाध—यह व्रत एक वर्ष में समाप्त होता है जिसमें बहत्तर उपवास होते हैं। यथा—प्रवेश मास के शुद्धपक्ष में ३, ५, ८, इन तिथियाँ में उपवास करे। तथा कृष्णपक्ष में २, ५, ८, इन तीन तिथियाँ में उपवास करे। इस प्रकार एक मास में ६ उपवास करे, १० मास के कुल बहत्तर उपवास करे। व्रत पूर्ण होनेपर उत्रापन करे। नमस्कार मन्त्र का निम्नलिखित जाप्य करे।

### अथ प्रकार

मध्यम रत्नावलि व्रत और, प्रोषध सवे बहत्तर ठौर।  
शुक्ल पचमी छटि इकदशी, वृष्ण दोज छटि अरु द्वादशी॥

—बधमानपुराण

भासाध—इस व्रत की दूसरी विधि भी है यथा—शुद्धपक्ष की ५, ६, ११, तथा कृष्णपक्ष की २, ६, १२ इन प्रकार प्रति मास ६ उपवास करे। १० मास के कुल ७० उपवास करे। व्रत पूर्ण होनेपर उत्रापन करे। नमस्कार मन्त्र का निम्नलिखित जाप्य करे।

### ५३—लघु रत्नावलि व्रत

लघु रत्नावलि इकतालीस, ग्यारह जेवा प्रोषध तीस।

—बधमानपुराण

भासाध—यह व्रत ४१ दिन में पूर्ण होता है जिसमें ३० उपवास और ११ पारणा होते हैं। यथा—

- |                        |                        |
|------------------------|------------------------|
| १—एक उपवास एक पारणा,   | २—एक उपवास एक पारणा,   |
| —दो उपवास एक पारणा,    | ४—तीन उपवास एक पारणा,  |
| ५—चार उपवास एक पारणा,  | ६—पाँच उपवास एक पारणा, |
| ७—पाँच उपवास एक पारणा, | ८—चार उपवास एक पारणा,  |
| ९—तीन उपवास एक पारणा,  | १०—दो उपवास एक पारणा,  |
| ११—एक उपवास एक पारणा,  |                        |

इस प्रकार व्रत पूर्ण कर उत्रापन करे। नमस्कार मन्त्र का निम्नलिखित जाप्य करे।

११-गुरुद्वारा

अडिल्ल छुद-एक वन प्रये के एक धारही,  
चार टलन म के का हारहा ।  
मय वर एक एक मय महा  
गुरु मुनिकर प्रकृत धर्मिय हा ॥

—दि० वि० वि०

भाषा—यह एक विद्वान् गुरुद्वारा ५ उपाय छीर  
६ पारणा होते हैं। यथा—

- १—एक उपवास एक पारणा,
- २—दोन उपवास एक पारणा,
- ३—पाँच उपवास एक पारणा,
- ४—तीन उपवास एक पारणा,
- ५—एक उपवास एक पारणा,

इस प्रकार मन प्रकृत धर्मिय मन्त्र का विनाय  
जाय करे।

१५-विद्वान् प्रन

मुक्तावलि प्रोषय मन्त्र छ पारणे नरह जान ।  
मध्यम मुक्तावलि मन्त्र मन्त्रिय भविय भान ॥

—पद्यमानव

भाषा—यह एक विद्वान् प्रन  
योर १३ पारणे होते हैं। यथा—  
नमस्कार मन्त्र का विनाय करे और

आलछद—मुक्तावलि मन्त्रिय नानि  
मन्त्रिय नानि  
पहनी उप

असोज कृष्ण छठि तेरस, उजयारी करिये शारस,  
 कार्तिक यदि शारस नाम, सुदि तीज र शारस ठाम ।  
 मगशिर यदि शारस जानो, प्रोपध सुदि तीजहि ठानो,  
 नव-नव प्रतिवर्ष गहीजे, प्रोपध इक अस्मी कीजे ।  
 पूरो नव वर्ष मभारी, जुतशील करहु नर नारी,  
 ताते पल पावे मोटो मिटहै विधि उदय जु खोटौ ।

—कि० सि० त्रि०

मातृगण—यं व्रत नव वर्ष में पूर्ण होता है जिसमें प्रत्येक वर्ष में नौ उपवास होने हैं, कुल ८१ उपवास होते हैं यथा—

भाद्रपद शुक्ल ७, असाज कृष्ण ६-१३, असोज शुक्ल ११, कार्तिक कृष्ण १२, कार्तिक शुक्ल ३-११, मगशिर कृष्ण ११, मगशिर शुक्ल ३, इस प्रकार एक वर्ष में ६ उपवास करे। कुल ६ वर्ष के ८१ उपवास पूर्ण होनेपर उपासन करे। और ओं ह्रीं कृपमज्जिनाय नम इत्य मन्त्र का विनाल जाप्य करे।

यं व्रत दुर्गाभा नाम की ब्रह्मण की पुत्री ७ किया था जिसके प्रसाद से प्रथम स्तम्भ में १२ हुई और तहाँसे चयनर मयुरा में श्रीधर राना व यहाँ पद्मरथ नाम का पुत्र हुआ था और वासुदेव स्वामी के ममनशरण में राजा लेकर उनका गणधर हुआ और कमनाश कर मोक्ष प्राप्त किया।

### ५७—एमावलि व्रत

अडिह छद्द—सुनहु मायिर एकावलि व्रत विधि है जिसी,  
 सुक्ल प्रतिपदा पचमि अष्टमि चौदशी ॥  
 कृष्ण चतुर्थी अष्टमि चौदशि जानिये,  
 चौरामी उपवास चरप मघ ठानिये ॥

—कि० सि० त्रि०

भावाथ—यह व्रत एक वर में समाप्त होता है जिसमें ८४ उपवास होते हैं। जिस भा मास की तुल्य पहिमा स प्रारम्भ होता है। तुल्य १, ५, ८, १४ तथा कृष्ण ४, ८, १४ प्रत्यह मास की ११ मास तिथियां क उपवास करे। ११ प्रकार १० मास के ८४ उपवास करे। जिसका ११ वर मन्त्र का वाच्य करे। व्रत पूरा होनेपर उद्यापन कर।

### ५८—लघु एकावलि व्रत

लघु एकावलि चौविन्न ठान, चोरिस प्रोपध कर मत ध्यान ॥

—हरिवंशपुराण

भावाथ—यह व्रत ४८ दिन पृष्ठ हाता है, जिसमें ४ उपवास और २४ पारणायें हाती हैं। किसी भी मास का जिस भा तिथि म प्रारम्भ करे। एक उपवास, एक पारणा १३ क्रमसे करे। व्रत पूरा होनेपर उद्यापन करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल वाच्य कर।

### ५९—द्विमासलि व्रत

दोहा—त्रिधौ द्विमासलि वरत की, श्री विन भारी नाम।

यला सात जु मास में, करिये सुन तिन नाम ॥

चाल छंद-सित पक्ष थकी व्रत लीजे, पडिमा छितिया बेला कीजे,

पुन पांचें पष्टी जानो, आठें नवमी पुन ठानो।

चौदश पून्यो गिन लेह, उला चहुँ मित पख पह,

निधि चौथ पचमी फारी, आठें नवमी सुविचारी ॥

चौदश मावस परवान, पख कृष्ण करे इम तान,

इम सात मास इक भाहो, बारा मासहि इक ठाहो।

चौरासी बेला काने, उद्यापन कर छाबीजे,

इस व्रतमें सुरशिव पावे, सुख को तहो ओर न आवे ॥

भावाथ—यह व्रत एक वर्ष में पूरा होता है जिसमें ८४ उपवास होते हैं। यथा—दस व्रत की जिस किसी भा मास से शुरू कर।

## शुक्ल पक्ष की तिथियाँ—

- १—प्रतिपदा और द्वितीया का व्रत ।  
 २—पंचमी और षष्ठी का व्रत ।  
 ३—अष्टमी और नवमी का व्रत ।  
 ४—चाण्डाल और गृह्यो का व्रत ।

## कृष्ण पक्ष की तिथियाँ—

- १—चौथ और पंचमी का व्रत ।  
 २—अष्टमी और नवमी का व्रत ।  
 ३—दशमी और भाद्रपद का व्रत ।

इस प्रकार एक मास में ७ व्रत करे । इसी प्रकार १२ मास में ८४ व्रत करे । नमस्कार मंत्र का विनाश जाप्य करे । व्रत पूरा होनेपर उच्चारण करे ।

## ६०—लघु द्विकाचलि व्रत

लघुद्विकाचलि इकसो बीस, घेला करे हरप चौबीस ।  
 इफ हारे अठतालिस और, सत्र पारणे चौबिस जोर ।

—कथमानपुराण

भाषा—यह व्रत १२ दिन में समाप्त होता है, विगम २४ व्रत, ४८ व्रत, २४ पारणा—इस प्रकार १२० होने हैं । प्रथम व्रत १, फिर पारणा १, फिर व्रत २, इस क्रम में करे । व्रत पूरा होनेपर उच्चारण करे । नमस्कार मंत्र का विनाश जाप्य करे ।

## ६१—दृढकनकाचलि व्रत

गुरुकनकाचलि व्रत दिन जान, दिन जु पाच सै वाइस जान ।  
 प्रोपध कर चौ से चांतीस, जेवा सवे अठासी दीस ॥

यह व्रत १२२ दिन में पूरा होता है विगम चारसौ चौतीस उपवास और अठासी पारणे होते हैं । व्रत पूरा होनेपर उच्चारण करे । और नमस्कार मंत्र का विनाश जाप्य करे ।

## ६२—लघु कनकाचलि व्रत

चाल छुद—

कनकाचलीय व्रत तैसो, आगम भाष्यो सुन जैसो ।  
 सित पत्र वकी उपवास, करिये विधि सुनिये तास ॥

प्रोपध सित पद्धिमा कीजे, पुन घास पचमी लीजे ।  
सुदि की दशमी पुन करही, यदि द्वितिया छुट वारसही ॥  
इक मास मध्य छुह कीजे, करिये भवि भाव धरीजे ।  
उपवास यहत्तर जास, इक घरप मध्य कर तास ।

—कि० सि० कि०

भाशाध—यह व्रत एक वर में समाप्त होता है जिसमें ७२ उपवास होते हैं। यथा—किरी भी एक मास से प्रारम्भ करे। शुक्ल पक्ष की पद्धिमा, पचमा और ऋशमा का उपवास, कृष्ण पक्ष में द्वितिया, पती और द्वात्रिंशी का उपवास, इस प्रकार प्रत्येक माह में ६ उपवास कर १२ मास क ७२ उपवास कर व्रत पूरा करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूरा होनेपर उत्रापन करे।

### ६३—लघुमृदगम य व्रत

दोय घास फिर असन फेर तिहुँ चहुँ करे,  
पाच घास धर चार तीन हय अनुसरे ।  
दिवस तीन में घास कहे तेरीस हें,  
लघु मृदग मध्य सात पारणा युत गहै ॥

—कि० सि० कि०

भाशाध—यह व्रत एक मास में पूरा किया जाता है जिसमें २३ उपवास और सात पारणायें होती हैं। यथा—

- |                       |                       |
|-----------------------|-----------------------|
| १—ने उपवास एक पारणा,  | २—तीन उपवास एक पारणा  |
| ३—चार उपवास एक पारणा  | ४—पाँच उपवास एक पारणा |
| ५—चार उपवास एक पारणा  | ६—तीन उपवास एक पारणा  |
| ७—ने उपवास एक पारणा । |                       |

इस प्रकार व्रत पूराकर उत्रापन करे। और नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

## ६४—बृहत् मृत्गमभ्य त्रत

गीतिषा दृढ

उपवास इव कर दोष थापे, तीन चहुँ पण छह धरे ।  
 पुन सात आठ र चढ नयनी कर यसु सात तु करे ॥  
 छह पाँच चार र तान छय इव यास इष्यामी गह ।  
 मिदगमभ्य तु नाम दारघ पारणा सत्रह गह ।

—दि० वि० दि०

भाषा—यत्र वा ६८ त्रि ५ पुग हाता हे त्रिषम ८० ॥  
 और १० पारणा हाता ६ । यथा—

- |                         |                       |
|-------------------------|-----------------------|
| १—एक उपवास एक पारणा     | ३—दो उपवास एक पारणा,  |
| २—तान उपवास एक पारणा    | ४—सात उपवास एक पारणा, |
| ५—सात्र उपवास एक पारणा  | ६—दूर उपवास एक पारणा  |
| ७—सात उपवास एक पारणा    | ८—आठ उपवास एक पारणा   |
| ९—ती उपवास एक पारणा,    | १०—आठ उपवास एक पारणा, |
| ११—सात उपवास एक पारणा,  | ११—छह उपवास एक पारणा  |
| १२—पांच उपवास एक पारणा, | १२—चार उपवास एक पारणा |
| १५—तीन उपवास एक पारणा,  | १६—दो उपवास एक पारणा, |
| १७—एक उपवास एक पारणा ।  |                       |

अत प्रकार त्रत पुग कर मरिचन करे । और तम तार मत्र व त्रि  
 जाय कर ।

## ६५—मुरजमभ्य त्रत

मुरजमभ्य त्रत तैतीम जान, छत्रिस्त्र प्रोषथ जेवा सात ।  
 —यथमावृत्त

भाषा—यत्र त्रत तैतीम त्रि मे पुग हाता हे त्रिषम २६ उप  
 और ७ पारणा होनी ६ । यथा—

- १—दो उपवास एक पारणा,      २—तीन उपवास एक पारणा,  
 —चार उपवास एक पारणा,      ५—पाँच उपवास एक पारणा,  
 ५—पाँच उपवास एक पारणा,      ६—चार उपवास एक पारणा,  
 ७—तान उपवास एक पारणा ।

इस प्रकार व्रत पूरा कर उद्यापन करे, और त्रिकाल नमस्कार मन्त्र  
 ग जाप्य करे ।

### ६६—वज्रमध्य व्रत

वज्रमध्य व्रत दिन अष्टतीस, जेवा नव प्रोषध उनतीस ।

—वधमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत अष्टतीस दिन में पूरा होता है, अन्तिम २६ उपवास  
 और नव पारणा होते हैं । यथा—

- १—एक उपवास एक पारणा,      २—दो उपवास एक पारणा,  
 १—तीन उपवास एक पारणा,      ६—चार उपवास एक पारणा,  
 १—पाँच उपवास एक पारणा,      ६—पाँच उपवास एक पारणा,  
 ७—चार उपवास एक पारणा,      ८—तीन उपवास एक पारणा,  
 ९—एक उपवास एक पारणा ।

इस प्रकार व्रत पूरा कर उद्यापन करे, और नमस्कार मन्त्रा त्रिकाल  
 जाप्य करे ।

### ६७—मेरुपक्ति व्रत

चौपाई

धरत मेरुपक्ति जो नाम तासु कर्णत्रिधि सुन अभिराम ।  
 हाप अडाइ मध्य सुजान, पाँच मेरु ज्यो प्रकट ध्यान ॥  
 जम्बू द्वीप सुदर्शन सही, विजय सु पूर धातुका महा ।  
 अपर घातुका अजल प्रमाण, प्राची पुष्कर मंदिर मान ।  
 पुष्कर अपर विद्व मालिना, पचमेरु वन यीम सन्हालनि ।  
 तिनमें असी चैत्यग्रहमार, तिनके व्रत प्रोषध निरधार ।



सुनहु सुदर्शन भूधर जेह, भद्रशाल वन चहुँदिशि तेह ।  
 जिनमदिर तिहि चार वखान, प्रोपध चार एकान्तर ठान ।  
 पोछे गेलो कीजे एक, वन सौमनस दूसरो टेक ।  
 चार निनेश्वर भवन प्रकाश, चार वाम पुन बेलो तास ।  
 नदन उन जिन प्रोपध चार, पाछें ताके बेलो धार ।  
 पाहुक वन चहुँ जिनवर गेह, ताके चहुँ प्रोपध धर पह ।  
 पुन गेलो धारा भणिसार, मेरु सुदर्शन यह विस्तार ।  
 प्रोपध सोलह गेला चार, व्रत दिन चहुँ चालीस मझार ।  
 चारतीस उपवास वखान तीस जु तास पारणा जान ।  
 ऐसे अनुक्रम फरिये भव्य, पच मेरु व्रत विधि सौं सध ।  
 इनमें अंतर पाडे नाहों, लगते प्रोपध बेला माहों ।  
 सब प्रोपधको ऐसे जोड, बेला बीस करे चित मोड ।  
 प्रोपध सबे एकसो बीस, करे पारणा अस्सी दीस ।  
 सकल वास बेला त्रिच जान, बीस इकात फहे जु वखान ।  
 ऐसे बीस दिवस जानिये, वरत मेरु पकति मानिये ।  
 सात महाना दिन दशमौहिं, समल वरत हम पूरण धारि ।  
 शील सहित गुम व्रत पालिये, हीन उदय विधिके टालिये ।  
 सुरपद पावे सशय नाहों, अनुक्रम भव लहि शिवपुर जाहों ।  
 —कि० वि० कि०

मासाथ—य व्रत ७ महाने और १० दिन में पूरा होता है । दिन  
 ८० उपवास, २० वना, और १०० पागुणायें हाती हैं । इस व्रत को का  
 निष्ठ माह में प्रारम्भ कर । विधि—

१—सुदर्शन मेरु—भद्रशालवन व चैत्यालय ४ के ४ उपवास हो  
 ४ पागुणाय । फिर एक वना और एक पारणा इस प्रकार उपवास  
 वना १, पागुणा ५ हुए ।

	प्राप्य	बेला	पारणा
इसा प्रकार नन्दन वन के	४	१	५
" सौमनस वन के	४	१	५
" पादुक वन के	४	१	५
इसी प्रकार कुल मिलाकर—			

	प्राप्य	बेला	पारणा
सुदानमेरु के	१६	४	२०
विजयमेरु के	१६	४	२०
अचलमेरु के	१६	४	२०
मन्दिरमेरु के	१६	४	२०
विद्यु-मालामेरु के	१६	४	२०

इस प्रकार पाँचा मेरु के उपरान्त ८०, बेला २०, पारणा १०० हुए—  
बेला २० के लिए ४०, कुल दिन २२० हुए ।

जाप्य मन्त्र— श्रौं हीं पचमरुमन्त्रे चि अस्मात्त्रिंशत्तदन्ता नमः ३  
मन्त्र का विनाल जाप्य रहे । यदि पृथक् २ तना हात्त निम्न प्रकार रहे—

- १—श्रौं हीं सुदानमेरुमन्त्रे चिपाटशक्तिनालनेना नमः ।
- २—श्रां हां विजयमेरुमन्त्रे चिपाटशक्तिनालनेना नमः ।
- ३—श्रां हीं अचलमेरुमन्त्रे चिपाटशक्तिनालनेना नमः ।
- ४—श्रौं हां मन्दिरमेरुमन्त्रे चिपाटशक्तिनालनेना नमः ।
- ५—श्रां हां विद्यु-मालीमेरुमन्त्रे चिपाटशक्तिनालनेना नमः ।

इस प्रकार व्रत पूरा कर उद्यापन कर ।

### ६८—अक्षयनिधि व्रत

व्रत अक्षयनिधि को उपवास, ध्यानसुक्ति सुन्नी कर तास ।  
भादों यदि दशमी जर होय, तिनहुं रु प्रोध अजलोय ॥  
श्रोर सकल एकात जु करे, सा इशु यरहि पूरी करे ।  
उद्यापन कर छाँडे ताहि, नावर दुगनौ करिये जाहि ॥

भासाध—यह व्रत दश वर्ष में पूरा होता है। प्रथम वर्ष भास्कर शुक्ल दशमा और भाद्रपद कृष्ण दशमी का उपवास करे। शेष तीनों वर्षों में एक दिन का उपवास करे। इस प्रकार दश वर्ष तक व्रत करे। पश्चात् उत्थापन करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

यह व्रत राजस्थानी नगरी में राजा मंत्रनाथ ने किया था जिसका प्रमाण सदा पहले स्वर्ग में देव हुआ और यहाँ से चयकर मनुष्य पत्नीय प्राप्त कर लय द्वारा कर्मनाश का मोक्ष प्राप्त किया।

### ६६—मेघमाला व्रत

#### चौपाद

व्रत मेघमाला तसु नाम, भाद्रपद मास करे सुखधाम ।  
 प्रोषध पद्मिनी तीन बगवान्, आठें दुहुँ चौदशि दुहुँ जान ॥  
 सात घास चौबीस एकात, त्रिभिध शीलपुत्र करिये सत ।  
 वरप पाँचलौ तसु मर्याद, गुरुमुखा पावे युत अहलाद ॥

—क्रि० सि० क्रि०

भासाध—यह व्रत पाँच वर्ष में पूरा होता है। यथा—

भाद्रपद कृष्ण १, ८, ९ तथा शुक्ला ८, १६ और अश्लेष कृष्ण १ इन भात तिथियों का प्रतिवर्ष उपवास करे। शेष १६ दिन एक दिन करे। इस प्रकार ५ वर्ष तक करे। व्रत पूरा होनेपर उत्थापन करे। त्रिकाल नमस्कार मन्त्र का जाप्य करे।

यह व्रत काशीवासी नगरी में कर्तव्य सेठ और उनी पद्मिनी सठानी ने किया था जिसके प्रमाण से वे दोनों जीव स्वर्ग में मर्त्यिक रूप हुए और वहाँ से चयकर मनुष्य होकर कर्मनाश कर मोक्ष प्राप्त किया।

### ७०—मुखनारण व्रत

अद्विष्ट छद्म-एकवास एकत एक अनुक्रम करे,  
 मास चार पर एक इष्टांतर इम धरे।

देव शास्त्र गुरु पूज सर्वे व्रत धर सदा,  
नाम तास सुखकरण हरन दुग्ग जिन वदा ।

—कि० सि० कि०

भाषार्थ—यं व्रत ४ मां प्रौर १५ दिन में समाप्त होता है। जिन स्थिती मास की पञ्चिमा में यह व्रत शुरू करे। पड़िमा का उपवास, दीयव का पाणशा, ताप का उपवास, चौथ का पाण्ण, उस अनुक्रम में ४॥ मां करे। व्रत पूरा होनेपर उद्यापन करे। तमन्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

### ७१—समोशरण व्रत

दोहा—श्रेत किम्बन चौदश तनी, प्रोपध बीस रु चार ।  
शील सहित भविजन करे, समोशरण व्रत फार ॥

—कि० सि० कि०

भाषार्थ—यं व्रत एक वर में समाप्त होता है। प्रत्येक चतुदशी का उपवास करना। चौदस चतुदशी पूरा होने पर उद्यापन करे। 'ओं हीं चगादापद्विनाशाय सकलगुणकरण्डाय श्रीमधेशाय अहस्परमहिने नमः' इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

### ७०—प्राकाशपचमी व्रत

भाद्रपद सुदि पचमि उपवास, करे व्रत पचमि आराश ।  
वरप पाँच मर्यादा जास, शील सहित प्रोपध धर तास ॥

—कि० सि० कि०

भाषार्थ—यं व्रत पाँच वर में पूरा होता है। प्रतिवर्ष मात्पशु शुक्ल पचमी को उपवास करे। तमन्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूरा होने पर उद्यापन करे।

यह व्रत सोम्वर २५ व तिजपुर नगर में भद्रशास्त्र सठ की पुत्री विशाला ने १६०० के प्रसाद से वह चौथे स्वर्ग में गच्छिभद्र २

का तब हुआ था, और वहाँ से चर कर उज्जैन नगर में प्रियगुप्तुदर राजा के यहाँ सगनन्द नाम का पुत्र हुआ और २० वत्स काल राजोचित सुख भोगकर तिन गीला ग्रहण कर कमनाश कर मोक्ष को प्राप्त हुआ ।

### ७३—अक्षयफलदशमी व्रत

श्रावण सुदि दशमाको सही, अक्षयदशमि व्रतको जन कही ।  
प्रोपध करे शील युत सार, तसु मर्याद बरप दश घोर ॥

—कि० सि० वि०

भावार्थ—यह व्रत दस मं पण होता है । प्रत्येक वर्ष श्रावण शुक्ल दशमी के दिन उपवास करे । 'आ ह्रीं वृषभजिनाय नमः' इन मंत्र का त्रिसाल जाप्य करे । व्रत पूरा होने पर उत्थापन करे ।

### ७४—निर्दोषसप्तमी व्रत

भादों सुदि सातें निर्दोष, वरत करे प्रोपध शुभ कोष ।  
मन धर्य काय शील व्रत पाल, सात वरप उद्यापन काल ॥

—कि० सि० वि०

भावार्थ—यह व्रत सात वर में पूरा होता है । प्रातः भाद्रपद शुक्ल सप्तमी का उपवास करे । त्रिसाल नमस्कार मंत्र का जाप्य करे । व्रत पूरा होनेपर उत्थापन करे ।

यह व्रत पटना नगर के प्रचीपाल राजा राजा अहदास सेठ ने किया था जिसका प्रमाण स स्तम मं त्व द्रुष्ट ।

### ७५—चंदनपट्टी व्रत

भादों धदि छठि दिन उपवास, चंदन पट्टी व्रत धर तास ।  
मन धर्य काय शील व्रत पाल, हं मर्याद वरप छह जास ॥

—कि० सि० वि०

भावार्थ—यह व्रत छह वर में पूरा होता है । प्रति वर्ष भाद्रपद पट्टी के दिन उपवास करे । नमस्कार मंत्र का त्रिसाल जाप्य करे । व्रत पूरा होनेपर उत्थापन करे ।

यह व्रत उज्जैनी नगरी में विनयुक्त सेठ के पुत्र दशरथचन्द्र तथा उनकी पत्नी चन्द्रनामिका तथा उनके प्रभात में स्वर्ग सुख भोगकर मोक्ष प्राप्त किया।

### ७६—सुगन्ध दशमी व्रत

यस्य सुगन्ध दशमी को जान, भादों सुदि दशमी दिन ठान।  
प्रोषण करे वरुण दश सही, शील सहित मरयादा गही ॥

—कि० सि० कि०

भारत—यह व्रत दश वर्ष में पूरा होता है। प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ला दशमी को उपवास करे। नमस्कार मन का विनाश जाय्य करे। उपासना होने पर उपासन करे।

यह व्रत मगध देश के वसन्तिलक नगर में विजयमन राजा की पुत्री सुगन्धा ने किया था जिसके प्रयास से स्वर्गसुख भोगकर मनुष्य जैसों मोक्ष प्राप्त किया।

### ७७—अनतचतुर्दशी व्रत

भादों सुदि चौदश दिन जान, व्रत अनत चौदश को ठान।  
तीर्थकर चौदहो अनत, रचे पूजा सो जीव महत ॥  
प्रोषण करे शीलयुत सार, चौदह वरुण लगे निरधार।  
उपासन विधि कर वह तजे, सो जन स्वर्गादिषु सुख भजे ॥

—कि० सि० कि०

भारत—यह व्रत चौदह वर्ष में पूरा होता है। प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ला चतुर्दशी के दिन उपवास करे। अन्तर्गत पृथक् विधान रहे। 'श्रीं नमोऽस्ते भगवते आतो अनतचतुर्दशीय अनतकेवलणो अनतकेवल दशणो अशुपुत्रगामणो अनत अनतागमकेवलि स्वाहा' इस मनका त्रिकाल जाय्य करे। यदि इस मन का न कर सके तो—'श्रीं ह्रीं अह ह स अनत केवलिने नम' इस मनका जाय्य दवे। व्रत पूरा होने पर उपासन करे।

विशेष—यन् व्रत भाद्रपद शुक्ल ११ न शुरु होता है इत्यलिये ११, १२, १३ न एकाशन, चौदश का उपवास और पृनाका एकाशन। इस तरह पाँच दिन किया जाता है।

यन् व्रत अनायास गरीक पास पद्मवन्द नामक ग्राम में सोमशमा ब्राह्मण तथा उसकी स्त्री सामा ने किया था जिसमें प्रभाव से स्वर्गात्मिक सुख भोगकर मान प्राप्त किया।

### ७८—श्रवणद्वादशी व्रत

भादों सुदि द्वादशि व्रत जान, श्रवण द्वादशी जो अभिराम।  
धारह धरप लगे जो करे, शील सहित प्रोपध अनुसरे ॥

—कि० वि० कि०

भावार्थ—यह व्रत शरद षण्मास में पुरुष होता है। प्रति वर्ष भाद्रपद शुक्ल द्वादशी न दिन उपवास कर। तमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूरा होने पर उद्यापन कर।

यह व्रत मालवा प्रान्त के पञ्जावतीपुर नगर में नखला राजा तथा उसकी शीलता नाम की पुत्री और चिन्मयवमा नाम की माता, इन ताना ने किया था, जिसमें प्रभाव से स्वर्गात्मिक सुख भोगकर तीनों ने मोक्ष प्राप्त किया।

### ७९—श्वेतपचमी व्रत

आपाङ्क फाल्गुण कार्तिक पह, सितपचमि तें व्रतफों लेह।  
पैसठ प्रोपध करिये ताम, धरप पाच पाच परिमास ॥  
श्वेतपचमी को व्रत धार, त्रिविध शुद्ध धारो नरनार।

—कि० वि० कि०

भावार्थ—यन् व्रत पाँच वर्ष और पाँच महान में समाप्त होता है। आपाङ्क कार्तिक या फाल्गुण इन तीनों मासों में से किसी एक मास में प्रारम्भ करे। प्रति मास शुक्ल पक्ष की पचमी के दिन उपवास करे। इस

यमार ६५ उपवास पूरा होने पर उत्रापन कर । नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य कर ।

### ८०—शील व्रत

चाल छन्द—अर सुनहु शीलव्रत सार, जैसो आगम निर्गधार ।  
 वैशाख सुकल छठ लीजे, प्रोपध उपवास करीजे ।  
 अभिनदन चिनपरमोख, कल्याणक दिन सब पोख ।  
 शुभ शीलव्रत तसु नाम, कर पच वरप सुखधाम ।  
 —कि० मि० कि०

भाषा—य व्रत पाँच वर्ष में पूरा होता है, जिसमें पाँच उपवास होता है । प्रति वर्ष वैशाख शुक्ल पक्ष के दिन ( अभिनदन प्रभु का मान कल्याणक है ) उपवास करे 'श्रीं ह्य अभिनदनजिनाय नमः' इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे । व्रत पूरा होने पर उत्रापन करे ।

### ८१—सर्वार्थसिद्धि व्रत

गीतिका छन्द—कार्तिक सुकल अष्टमि दिवसतें अष्टवास जु कीजिये ।  
 तसु आदि अत पवन दश दिन, शील सहित गणीजिये ॥  
 जिनराज श्रुत गुरु पूज्य उत्सव, सहित नृत्यादिक करें ।  
 सर्वार्थसिद्धि जु नाम व्रत यह, मोल सुख को अनुसरें ।  
 —कि० मि० कि०

भाषा—य व्रत दश दिन में पूरा होता है जिसमें आठ उपवास और दो पारणायें होती हैं । यथा—सप्तमी को एकाशन व्रत की प्रतिज्ञा कर । अष्टमी में पूरा मानी तक ८ उपवास करे और एशम को पारणाय करे । नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे । व्रत पूरा होकर उत्रापन करे ।

### ८२—तीनचौरीसी व्रत

दोहा—व्रत चौरीसी तीन को, सुकल भाद्रपद तीज ।  
 प्रोपध कीने शीलयुत, सुर शिव सुख ॥



भासाय—यह व्रत भाद्रपद कृष्ण तृतीया व त्रिंशत् क्रिया जाता है। प्रति  
दिन इस दिन उपवास करे। नमस्कार मंत्र का विनाल जाप्य करे। तीन  
व्रत पूरा होने पर उत्थापन करे।

### ८३—जिनमुखामलोचन व्रत

बोधा—जिन मुख अथलोचन व्रत, करिये भादों मास।  
जिन मुख देखे प्रात उठ, अथर न पेये तास ॥  
चालछद्म—प्रोपध इक मास इतर, कानी जूत करिये निरतर।  
अथवा चक्षायण करहैं, लघु सकृति एकांतर धरहैं।  
सरया धर घस्तु जु फेरी, तातैं नहि अधिषो लेइ।  
यह घात महा सुखदाइ, चहुँ गति भय भ्रमण नशाइ।  
—कि० सि० वि०

भासाय—यह व्रत एक मास पूरा किया जाता है। भाद्रपद कृष्ण  
पक्षिमा में असात कृष्ण पादमा तक प्रतिदिन ब्राह्मण मुत्र में उत्तर  
(जिन किमा का मुँह न ग्य) प्रथम ही श्री जिनेन्द्र भगवान् के दर्शन  
करे। इस प्रकार एक मास करे। विनाल नमस्कार मंत्र का जाप्य करे।  
व्रत पूरा होने पर उत्थापन करे।

इस व्रत में भाजन की क्रियाएँ पाँच हैं—

- १-उपवास—तीस दिन उपवास करना।
- २-काञ्चिक—पाती के साथ सिफ (भाल चारल) खाना।
- ३-चाद्यायण—पहिले दिन १ ग्राम, दूसरे दिन २ ग्राम, तीसरे दिन  
४ ग्राम, इस प्रकार ११ मास बढ़ाकर १५ ग्राम तक  
करे। फिर पन्द्रह से १२ मास कम कर एक तक कम  
करे। इसने अग्नि और अन्त में उपवास करे।
- ४-एकारण—सिफ एक ही बत भोजन करे।
- ५-परिमितवस्तु—भोज्य सामग्रियों का प्रमाण कर उसके अधिक न  
खाना। इन पाँचों में से अपने सामर्थ्यानुसार विधि करे।



## ६०—कर्मनिर्जरा व्रत

सवयथा

दर्शन के निमित्त आपाढ़ सुदी चौदश,  
 धावण की चौदशि सुज्ञान काज कीजिये ।  
 भादों सुदि चोदशि को प्रोपध चरित्र केरो,  
 तपयोग चोदशि असोज सुदि लीजिये ।  
 ये ही चार प्रोपध वरप माहि विधिसेती  
 कर्म निर्जरनी घरत सुन लीजिये ।  
 धनश्रीय सेठ सुता करके सुरपद पायो  
 अजों भद्रिभाव करयेकों चित्त दीजिये ।

—कि० मि० कि०

भास्यर्थ—यह मृत आपाढ़ शुक्ला चौदशि से प्रारम्भ होता है अर्थात् दशम त्रिशुद्धि निमित्त आपाढ़ शुक्ला चतुर्दशी का उपवास करे । दशम त्रिशुद्धि भावना भाये । 'ओं ह्रीं दशमविशुद्धये नमः' इस मंत्र का जाप्य करे ।

सम्यग्ज्ञान भावना के निमित्त धावण शुक्ल चतुर्दशी का उपवास करे । सम्यग्ज्ञान भावना का चिंतन करे । 'ओं ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः' इत मंत्र का जाप्य करे ।

सम्यक्चारित्र्य के निमित्त भाद्रपद शुक्ला १४ को उपवास करे । सम्यक् चारित्र्य भावना का चिंतन करे । 'ओं ह्रीं सम्यक्चारित्र्याय नमः'

जैन नव विधान सग्रह

## ८६—रुक्मणी व्रत

सवेया

लक्ष्मीमता के जीवने पूवभव माहि व्रत कोनो

यह श्वेत भाद्रपद आठें शोषध आदायकें ।

दोय याम धारणे और चार उपवाम दिन

पूजा रचै दोय याम पारणो बनायकें ।

कीनो आठ वरप लों शुद्ध भाव देहि त्याग

अच्युत सुरेश इन्द्राणी पद पायके ।

भइ रुक्मणी ठुण्य चासुदेव पढतिया,

रुक्मणी नाम व्रत जानो चित लायके ।

—कि० सि० कि०

भावाव—ए व्रत आठ वरप में पूण्य होता है । प्रतिपद्य भाद्रपद शुक्ला सप्तमी को एकाशन कर व्रत प्रारण कर । अष्टमी का उपवास, नवमी का धारणा, दशमी का उपवास, एकादश का धारणा, द्वादशी का उपवास, त्रयोदशी का धारणा, चतुर्दशी का उपवास और पूर्णमासी को धारणा कर । इस प्रकार प्रतिपद्य आठ वरप तक ४ उपवास ४ धारणा, और १ धारणा करे । व्रत पूण्य होनेपर उपासन करे । नमस्कार मन्त्र का त्रिगल जाय करे ।

इ व्रत लक्ष्मीमती ब्राह्मणी के जीवने धारण किया था जिसके प्रभाव से स्वर्गादेक मुनि भोगसर कुटलपुर नगर में राजा भीष्म के गृह रुक्मिणी नाम की पुत्री हुई, जो सौराष्ट्र देश में द्वापरकाली नगरी के राजा कृष्णचंद्र (वासुदेव) की पट्टश्री हुई, और व्रत में अपने पुत्र प्रद्युम्नकुमार के साथ राजा के घर उपासना करे ।

## ६०—कर्मनिर्जरा प्रत

सचेया

दर्शन के निमित्त आपाढ़ सुदी चौदश,  
 प्रायण की चौदशि सुज्ञान पाज कीजिये ।  
 भादों सुदि चौदशि को प्रोपध चरित्र केरो,  
 तपयोग चौदशि असोन सुदि लीजिये ।  
 ये ही चार प्रोपध धरप माहिं विधिसेती  
 कर्म निर्जरनी धरत सुन लाजिये ।  
 धनधीय सेठ सुता करके सुरपद पायो  
 अर्नों भविभाव करवेकों चित्त दाजिये ।

—कि० सि० कि०

भासाध—यह वन आपाढ शुक्ला चौदश स प्रारभ होना है अथात्  
 दशन त्रिपुदि निमित्त आपाढ शुक्ला चतुर्शी स उपनास करे । अथन  
 त्रिपुदि भासना भास । ओ हीं दशनविशुद्धय नम ' इस मंत्र का  
 जाप करे ।

सम्यग्ज्ञान भासना क निर्मित्त आवण शुक्ल चतुर्शी का उपनास करे ।  
 सम्यग्ज्ञान भासना स चितवन करे । 'ओ हीं सम्यग्ज्ञानाय नम ' इस मंत्र  
 का जाप करे ।

सम्यक्चारित्र क निमित्त भासना शुक्ला १६ को उपनास करे ।  
 सम्यक्चारित्र भासना का चितवन करे । ओ हीं सम्यक्चारित्राय नम '

## ६४—कमलचद्रायण व्रत

दोहा—धरत कमल चद्रायणा, वारह मास मभार ।  
एक महीना में करे, एक चार चित धार ॥

## चौपाइ

करे श्रमावस को उपवास, पाड़े तें एक चद्रता ग्रास ।  
पडिमा दिवस ग्रास एक लीन, दोयज दोय तीज दिन तीन ।  
चोथ चार पण पाचें सही, छट्टि छह सातें सत लही ।  
आठें आठ नमी नो टेक, दशमी दश ग्यारसि दश एक ।  
वारह गारसि तेरस जान, तेग चौदा चौदशि ठान ।  
पून्यो दिवस करे उपवास, शुक्ल पक्ष की यह विधि साच ।  
दृष्य पक्ष की पडिमा जास, लेय अहार सु चौदह ग्रास ।  
दोयज तेरह वारह तीज, चाथ छार पचमि दश लीज ।  
पष्ठी नय सातें वसु जान, आठें सात नम छह भान ।  
दशमी पाच छारसी चार, वारसि तीन तेरसि द्वय धार ।  
चौदश दिवस ग्रास एक जान, मावस दिन प्रोपध नो ठान ।  
एक मास को व्रत है येह, ग्रास लीजिये तिम सुन येह ।  
ग्रास लेन को पेसा करे, मुख में दंत न करतें पड़े ।  
वीच पिचो पानी न गहाय, अतराय गल अटकें धाय ।  
निन पूजा विधियुत दिन तीस, करे वदना गुरु नमि शीश ।  
शाख वरजान सुनो मन लाय वरम कथा में दिवस गमाय ।  
पाले शील वचन मन फाय, इहि विध महापुण्य उपजाय ।  
घातें सुरपद होवें ठीक, अनुक्रम शिव पाव तहाँ कीच ।

भागाव—यह व्रत एक महीने में समाप्त होता है। यथा—

जिस किसी मान की श्रमावस्था का उपयोग कर शुरु करे फिर एक महीने का एक प्राण, दायज को २ प्राण, इस प्रकार प्रतिदिन ११ प्राण भोजन उदात्ता हुत्रा चतुदशी को १४ प्राण लेवे। पृथमाशी का उपयोग कर। फिर कृष्ण पक्ष की पटिमा का १४ प्राण, दायज को तेरह प्राण, इस प्रकार प्राणान्तर एक एक प्राण कमाता हुत्रा चतुदशी का एक प्राण भोजन लेवे। शरीर श्रमावस्था का उपयोग करे। इस प्रकार एक मास में व्रत पूर्ण करे। यदि प्राण लेने में श्रमावस्था का उपयोग करे हाथ या मुख से प्राण निकार पड़े तो श्रमावस्था मान। व्रत समाप्त होने पर उत्रापन करे। नमस्कार मन का निकाल जान करे।

यह व्रत श्री श्यामाश्रम स्वामी के पुत्र गुरुशाल स्वामी ने हिन्दू जिनके प्रमाण से स्वीकारण प्राप्त कर मात्र प्राप्त किया। तथा श्री जगन्नाथ स्वामी की पुत्री बाली तार मुन्गी ने शिवा का शिवक प्रभाव से चन्द्रमण्डल कर स्वर्ग में दत्त हुए, तार फिर मनुष्य होकर कलकत्ता में एक मोर प्राप्त किया।

### ६५—वारह विजोरा व्रत

वारविरोजा व्रत हर मास, दोऊ द्वादशि कर उरुव्रत

—कल्पवृक्ष

भागाव—यह व्रत एक वर्ष में समाप्त होता है। व्रत करने का २६ द्वादशियाँ के २६ उपयोग करे। नमस्कार का उपयोग करे। व्रत पूर्ण होने पर उत्रापन करे।

### ६६—ऐसोनव व्रत

ऐसो नव व्रत दिन चार से, उरुव्रत पचासों वर्षों  
बोहत पण प्रोपथ जवा असी, इष्टो वरुणो चंद्रा जित

भावाथ—यह व्रत चार सौ पचासी दिन में पूरा होता है, जिसमें ६५ उपवास और अस्मा पाण्डु ५५० हैं। तथा—

एक उपवास, एक पारणा, दो उपवास, एक पारणा, इस प्रकार ६ उपवास तक बढ़े फिर एक एक उपवास कम करता हुआ १ तक जाने। इस प्रकार ६ बार बढ़ाये और १ तक। एक बार में ६५ उपवास और ६ पारणा होते हैं। कुल नी आवृत्ति ५६५ उपवास और ६० पारणा में व्रत पूरा होता है। नमस्कार मत्र का दिनाल जाय कर। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

### ६७—ऐसोदश व्रत

ऐसोदश व्रत द्वादश पचास, सौ जेवा साढ़े पाच सौ वास।  
दशलों चढ़े अनुमम सोय, जो लो व्रत पूरख नहि होय ॥

—वर्धमानपुराण

भावाथ—यह व्रत ६५० दिन में पूरा होता है, जिसमें ५५० उपवास और १०० पारणायें होता है। तथा—

जिस किसी मास में प्रारंभ करे। प्रथम दिन एक उपवास एक पारणा, फिर दो उपवास, एक पारणा, तीन उपवास एक पारणा, इस प्रकार एक एक उपवास बढ़ाकर १० उपवास तक बढ़ाये, फिर ६ उपवास एक पारणा, ८ उपवास एक पारणा, इस प्रकार १-१ घटाकर एक तक आये। इस प्रकार दश आवृत्ति में ५५० उपवास और १०० पारणा होकर व्रत पूरा हो जाता है। नमस्कार मत्र का दिनाल जाय करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

### ६८—वज्रिक व्रत

वज्रिक व्रत जल भात अहार, चौंसठ दिन पाल निरधार।  
यथाशक्ति कछु और व्रतत, तितने मास वरुष पर्यत।

—वर्धमानपुराण



भावार्थ—यह स्त एक सप्ते के भीतर २४ दिन में समाप्त होता है। एक ही भी नाम के प्रथम दिन से यह व्रत आरंभ करे। चौंसठ दिन तक भिक्षु काजक आहार अर्थात् पानी और भात लेवे। यत् शक्ति हो ता दूना तिगुना भी खा सकते हैं। व्रत पूर्ण होने पर उत्थापन करे। नमस्कार मंत्र का त्रिसाल जाप करे।

### ६६—श्रुतिपचमी व्रत

श्रुतिपचमि षड् शास्त्र विशाल, जेठ सुदी पचमि उपवास।

—वधमानपुराण

भावार्थ—यह स्त षड् शास्त्रा पचमी के दिन किया जाता है। यह दिन उपवास करे। 'श्रीं ह्रीं द्वादशांगधुतज्ञानाय नमः' इस मंत्र का त्रिसाल जाप्य करे। यह व्रत ३ सप्ते करे। पूजा होने पर उत्थापन करे।

### १००—कृष्णपचमी व्रत

कृष्ण पचमी व्रत विधि तास, जेठ कृष्ण पचमि उपवास।

—वधमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत षड् कृष्ण पचमी के दिन किया जाता है। इस दिन उपवास करे। त्रिसाल नमस्कार मंत्र का जाप करे। ५ सप्ते बाद उत्थापन करे।

### १०१—नि शल्य अष्टमी व्रत

नि शल्य अष्टमा भादों सुदी, प्रोपद्य कर सयनासन जुदी।

—वधमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत भाद्रपद शुक्ला अष्टमी को होता है। इस दिन उपवास करे। प्रत्येक प्रहर में आभयेकपूजक पूजन करे। सालह वर्ष पूरा होने पर उत्थापन करे। नमस्कार मंत्र का जाप्य करे।

यह व्रत दक्षिण देश के मुवाय नगर में सेठ नद की पुत्री लक्ष्मीमती ने किया था जिसके प्रभाव से श्रीलिंग छेद कर मोक्ष प्राप्त किया।

## १०२—लक्षणपक्षि व्रत

लक्षणपक्षिव्रत चारसो आठ, कर एकान्तर प्रोपथ टाट ।

—वधमानपुराण

भासार्थ—यह व्रत ४०८ दिन में पूरा होता है, जिसमें २०४ उपवास और २०४ पारणायें होती हैं। किसी भी मास में इस व्रत को आरंभ करे। एक उपवास, एक पारणायें इस क्रम में करे। त्रिकाल नमस्कार मन का जाप्य करे। व्रत पूरा होने पर उत्थापन करे।

## १०३—दुग्धरसी व्रत

दुग्धरसि व्रत भादोंसुदि धरे, वारसि को पय भोजन फरे ।

—वधमानपुराण

भासार्थ—यह व्रत भादों शुक्ल द्वादशी के दिन किया जाता है। इस दिन मिश्र दूध का आहार ले। सारा समय धर्मध्यान में व्यतीत करे। नमस्कार मन का त्रिकाल जाप्य करे। १२ वर्ष पूरा होने पर उत्थापन करे।

## १०४—धनदकलश व्रत

श्लोक—भद्रे भाद्रपदे मासे प्रतिपदादिवृत मुदा ।

कलशोद्धारणं पूतं चदनं स्रक्चचितम् ॥

मासमेकं प्रकुर्वते शीलमेकाशनं तपम् ।

विधिना वत्सरं पंच उद्यापनं विधीयते ॥

—कथाकोष

भासार्थ—यह व्रत भाद्रपद कृष्ण १ से शुरू होता है और भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा को समाप्त होता है। प्रति दिन चन्दनादि मंगलद्रव्ययुक्त कलशों द्वारा श्रीमन्त्रिनेत्रेय का अभिषेक कर पूजन करे। नमस्कार मन का त्रिकाल जाप्य करे। शील, सयम, तप, दान आदि कार्यों में समय व्यतीत करे। पाँच वर्ष पूरा होने पर उत्थापन करे।

### १०५—कलीचतुर्दशी व्रत

आषाढी सित चौदश होय, तब तें व्रत यह लाजो साय ।  
दोहा—चार मास की चौदशा, शुद्ध पन्च जय होय ।  
व्रत कीजे शुभ भाव सों, मुक्ति यधू कों लोय ॥

—कथाकोष

भासाथ—यह व्रत आषाढ़ शुक्ल १४ म प्रारंभ होता है, एवं आषाढ़ श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, इन चार मास की शुक्ला चतुर्दशिया को उपवास करे । नमस्कार मन का आप्य करे । ४ म पूर्ण होने पर उद्यापन करे ।

### १०६—मोक्षसप्तमी व्रत

श्रावण सुदि सातें दिन जान, प्रोषण शाल सहित भवि टान ।  
सात वरप मर्यादा धार, पीठे उद्यापन कर सार ॥

—कथाकोष

भासाथ—सात वर तक प्रतिव्रत श्रावण शुक्ला सप्तमी तं दिन उपवास करे । यों ही पार्वनाथाय नमः इत्य मंत्र का त्रिशाल जाप करे । व्रत पूरा होने पर उद्यापन करे ।

### १०७—रोटतीज व्रत

मादों सुधी तीज दिन जान, सब आरंभ तजे बुधिवान ।  
तीन वरप प्रोषण चित धार, पीठे उद्यापन कर सार ।

—कथाकोष

भासाथ—यह व्रत तीन वरम समाप्त होता है । प्रातर्य भाद्रपद शुक्ला ताज व दिन उपवास करे और अभिसम्पूर्णक नलोकर त्रिशाल विधान करे । यों ही त्रिबालकसर्वा वषट्कत्रिमन्त्रिनैयालयभ्या नमः इत्य मंत्र का त्रिशाल जाप करे । तीन वर बाद उद्यापन करे ।

बड़े व्रत मन्दिनागपुर ने राजा विशाखरत्न की रानी विजयमुन्दरी ने किया था जिसका प्रभाव से म्नालिंग छेड़कर एक होकर फिर मनुष्य पत्तन प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त किया।

### १०८—शीलसप्तमी व्रत

भाद्रा सुदि सातें दिन जान, प्रोषध धरे हरण उर ठान।  
सात वरण मरयादा सही, पीछे उद्यापन विधि कही।

—कथाकाण्ड

भाव—सात वर्ष तक प्रतिवर्ष माता शुक्ल सप्तमी को उपवास कर।  
त्रिजाल नमस्कार मात्र न जाप्य करे। व्रत पूरा होने पर उद्यापन करे।

### १०९—वीरशासनजयन्ती व्रत

वासस्त पढममासे पढमे पम्बुभि स्याद्ये चहुत्ते।  
पडिवदपुचदिवस तिस्युप्पत्ति अभिजम्हि ॥

—धवला प्रथमखण्ड

भावार्थ—राजगृह स्थित पडिमा न दिन प्रथम प्रहरम आयत्तिम तीर्थ  
कर महावीर स्वामी की स्तुति प्रकृत हुई थी और उसका द्वारा अनन्त  
मत्त सगरी जीवों का कल्याण हुआ था, अतएव इस पवित्र दिन उपवास  
करे। धामहावीर स्वामी का अभिषेक पूजन करे। 'घों ई धामहावीराय  
नमः' मंत्र का त्रिजाल जाप्य करे।

### ११०—श्रीवीरजयन्ती व्रत

चैत्र शुक्ल तेरस दिन जान, उपजे वीरनाथ भगवान।  
सुरपति आय मेरु पधराय, कियो अभिषेक महासुखदाय ॥

भावार्थ—चैत्र पुक्ला त्रयोदशी के दिन कुट्टनपुर नगर में सिद्धार्थ  
राजा के घर त्रिशला देवी की कुल से श्री महावीर स्वामी ने जन्म लिया।  
इसी पवित्र दिन सौधम इन्द्र ने शत्रु भगवान् को मेरु पर्वत पर ले जाकर

ग्रभिन्नक क्रिया था। इस दिन उपवास करे। धमप्रभाजना के साथ कर।  
धमध्यान में सारा समय प्रतीत कर।

### १११—श्रीग्रादिनाथजयंता व्रत

चैत्र वदी नवमी दिन जान, उपजे ग्रादिनाथ भगवान।

भावार्थ—चैत्र गी नवमी के पवित्र दिन में चौदहों कुलकर गानाभि  
रना तथा मन्त्री गनों की पवित्र कृपा से धमतीथ क प्रसक्त श्री ऋषभ  
नाथ भगवान् न अस्तार लिया, इस दिन महाश्रमिपेकपूजक पूजन विधान  
में उपवास करे। शाल्ल-सभा धमापत्थ द्वारा धम की वृत्त प्रभाजना  
करे। 'श्री ह्रीं श्री वृषभावाय नम' इस मंत्र का त्रिसाल जाप्य करे।

### ११२—श्रीग्रादिनाथशासनजयती व्रत

फागुन वदि एकादशि जान, वाणी खिरी ग्रादि भगवान।

भावार्थ—फाल्गुन वृष्य ११ के दिन श्रीग्रादिनाथ महा मा न घातिस  
कर्मों का नाश कर करलजान प्राप्त क्रिया और सत्कार के प्राणियों क वि  
श्रपनी दिन धनि द्वारा धम दिन प्रथम उपवेश किया, इसलिये इस पवित्र  
दिन धमप्रभाजना करे और उपवास करे। 'श्री ह्रीं श्री वृषभावाय नम' इस  
मंत्र का त्रिसाल जाप्य करे।

### ११३—श्रीग्रादिनाथनिर्वाणोत्सव व्रत

माघ वदी चोदशि दिन कहो, ग्रादिनाथ प्रभु शिवपुर लहो।

भावार्थ—माघ वदी १४ के पवित्र दिन ग्रादिनाथ भगवान ने मोक्ष  
प्राप्त किया था। इस दिन उपवास करे। 'श्री ह्रीं श्री वृषभावाय नम'  
इस मंत्र का त्रिसाल जाप्य कर।

### ११४—नदसप्तमी व्रत

भादों सुदि सप्तमि दिन जान, प्रोपध चरे सभी

भासाथ—भादों सुनी सप्तमी के दिन उपवास करें। नमस्कार मन का विनाश जाय करे। वात वर पूरे होने पर उद्यापन करे।

### ११५—काजीवारस व्रत

भादों सुदि द्वादशि के दिना, प्रोपध करे श्री जिनमना।

भासाथ—भादों सुनि १२ के दिन उपवास करे। नमस्कार मन का विनाश जाय करे। वात वर पूरा होने पर उद्यापन करे।

### ११६—ऋषिपंचमी व्रत

मास अषाढ शुक्ल की सोय, जयहि पंचमी को दिन होय।  
व्रतके दिन छाडो आरभ, जिन वर भजो तजो सब दभ ॥  
पाँच वर्ष अरु मासहि पंच, ये सब व्रत वैसठ सुन सच।  
जय यह व्रत पूरो है लोय, यथाशक्ति उद्यापन होय ॥

भासाथ—यह व्रत ५ वर्ष और ५ महीने में समाप्त होता है। प्रातः मास शुक्ल पक्ष की पंचमी के दिन उपवास करें। नमस्कार मन का विनाश जाय करे। अषाढ शुक्ला पंचमी से यह व्रत शुरू करें। ६५ उपवास पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

यह व्रत हस्तिनापुर में धनपति सेठ की पुत्री कमलधा ने किया था जिसके प्रभार से उनका त्रिभुवा हुआ पुत्र पुनः मिल गया था और अन्त में स्वर्ग सुख प्राप्त हुए थे।

### ११७—त्रिलोकीज व्रत

भादा सुदि तृतिया दिन जान, त्रिलोक तीज व्रत को ठान।  
प्रोपध तीन वर्ष मध करे, पाड़े उद्यापन विधि धरे ॥

—कथाकोष

भासाथ—यह व्रत तीन वर्ष में पूर्ण होता है, प्रति वर्ष भाद्रपद शुक्ला ३ के दिन उपवास करें। श्रीं हीं त्रिलोक्यग्यधि धृष्टिमजिन

चन्दालयभ्यो नमः' इन मन मा त्रिसाल जाप्य करे, व्रत पूरा होने पर उद्यापन करे।

## ११८—आचारवर्धन (अनाम्लवर्धन व्रत)

इक से दश लग प्रोपध करे, त्रिच विच इर इर पारणा धरे।  
फिर दश से इक लग व्रत धार, इक इक बीच पारणा सार।  
कुल इक शत उपवास कराय, अरु उन्नीस पारणा धाय।

—सुदृष्टितरिणिणी

भावाथ—य व्रत ११६ दिन म पूरा होता है, जिसम १०० उपवास और उन्नीस पारणा होती हैं। किसी भी मास से व्रत शरभ करे। एक उपवास, एक पारणा, दो उपवास, एक पारणा, इस क्रम से १० उपवास तक करे, फिर एक एक घण्टर एक उपवास तक आवे। इस प्रकार व्रत पूरा होने पर उद्यापन करे।

## ११९—सुदर्शन व्रत

हे सम्यक्त्व तीन परकार, त्रय उपसम क्षयोपसम धार।  
शकादिक घसु दोष महान, तीनों के मिल चौबिस जान ॥  
तिनके प्रोपध धर चौबिस, करे पारणा तहा चौबीस।  
सय दिन अठतालीस सुजान, करे भक्ति सँ व्रत महान ॥

—सुदृष्टितरिणिणा

भावाथ—य व्रत ४८ दिन म पूरा होता है, जिसम ४८ उपवास और चौबीस पारणायें होती हैं। उपशम, क्षय और क्षयोपशम एंसे सम्यक्त्व तीन प्रकार है, इन तीनोंकी शक्यति ८ दोषों से गुणा करने पर २४ भेद होते हैं। इनके निमित्त एक पारणा, एक उपवास, इस क्रम से २४ उपवास और ४ पारणा करे। व्रत पूरा होने पर उद्यापन करे। नमस्कार मन कर-  
निवाले जाप्य करे।

## १२०—रक्षावधन व्रत

## चौपाद

शरण सुदि पू यो दिन कह्यो, श्रवण नक्षत्र सु तादिन लह्यो ।  
 सूर अरुम्पनादि शत सात, विष्णुकुमार हख्यो उत्पात ॥  
 श्रुति पवित्र तादिन को मान, प्रोषध करे हरप हिय ठान ।  
 ताकी याद राखन हेत, सूत बाधिये हरप समत ॥

भाषा—शरण शुक्ल पूर्णिमा के दिन शरण नक्षत्र में अरुम्पनादि  
 शत मो मनिया क ऊपर नील घना द्वारा त्रिच मंत्र महान् उपद्रव का  
 श्री विष्णुकुमार मुनि ने त्रिधिया श्रुद्धि के जल द्वारा दूर किया था, इसी दृष्टि  
 से पावन दिन को उपनाम कर । या श्रवण शुक्ल पीला गुत हाथ में बाँधे ।  
 विष्णुकुमार पूजन करे । 'आ ह्रीं विष्णुकुमारमुनिः शान्तिः' इस मंत्र से  
 पूज्य कर ।

## १२१—क्षमावणी व्रत

असोज कृष्ण एकम दिन जान, क्षमा उभय विधि से जन ठान ।  
 पूजन करे महा सुखदाय, प्रोषध कर बहु फल नशाय ।

भाषा—असोज कृष्ण एकम व दिन प्रातः काल उठ श्री जिनेन्द्र  
 भगवान् का आभार स्तुति पूजन कर । फिर शास्त्र प्रपञ्चन कर अपनी  
 कर्माणो को शांत कर सहस्रमी जना में परस्पर में क्षमा-क्षमा कहकर कर्माणो  
 समस्त अपराधो को क्षमा कर श्रौंग शून्या से करावे । 'आ' मुख फल भद्र  
 करे । इन दिन उपनाम का । सारा दिन रात्रि धर्मध्यान में व्यतीत करे ।

## १२२—श्रीपमालिका व्रत

## श्लोक—

चतुष्कालेऽर्धचतुष्मासैचिहीनताविश्वतुरव्द्रोषके ।  
 स कालिके स्वातिषु कृष्णभूत प्रमातसध्यासमये स्वभावत ॥



ज्वलत्प्रदापालिकया प्रवृद्धया, सुरासुरैः दीपितया प्रदीप्तया ।  
 तदात्मपावानगरी समततः प्रदीपिताकाशतला प्रकाशते ॥  
 ततस्तु लोक प्रतिघर्षमादरात् प्रसिद्धदीपालिकयाश्च भारते ।  
 समुद्यत पूजयितुं जिनेश्वर जिनेन्द्रनिपाणधिभूतिभङ्गिभाक् ॥  
 —हरिवंशपुराण

भावना—चौथे काल में जब तीन नर साढ़े आठ नाम नका गहे तब  
 कार्तिक नाम का अमान्सा क प्रभातकाल श्वाति ननत्र म श्री मन्गल  
 स्वामी का निराण हुआ, दबों न आरर वरों निराणकल्याणक का उत्तम  
 मनाया, और पात्रपुरा म गीपगन किया । इस पात्र तिन की स्थात म  
 गीपगली भारत म प्रसिद्ध हुइ है । तस तिन उपनाम कर । आ मन्गीर  
 पूजन करे और निराण लाइ चढाये, मन्गल धमप्रभासना कर । मायकाल  
 पर चर म गीप प्रचलित कर । थों हीं धामदावारस्वामिने नमः । इस मन्  
 का नाम कर । इस तिन म रर निराण मन् चालू हुया है ।

### १२३—चौतीस अतिशय त्रत

दोहा—अतिशय लख चांताम त्रत, तासु तनो कछु भेद ।

कया माहि मुनिया जिसो, किये होय दुखद्वेद ॥

अडिल्ल—दश दशमा जनमत के अतिशय दश तनी ।

फिर दश नेत्रलक्षण ऊपज दश बना ।

चौदजि चौदा अतिशय देयाएत कही,

चार चतुष्टय चाय चार ये विध गही ।

षोडश आठें प्रातिहार्य यसुकी भनी

क्षण पाँच की पाँचें पाँच कही गन ।

अरु पछे छह लहा सने प्रोधय सुनो,

पाँच अधिक गन साठ किये फल बहु मुनो ।

भावाय—यह मत २ अंग ८ मंगीना और १५ अंग म समान हाता है, जिनम ६५ उपवास गते है । तथा—

- १—एक क अश आतशया क अश अशामया क १० उपवास कर ।
- २—कवलज्ञान क अश आतशया क अश अशामया क १० उपवास कर ।
- ३—अनन्त चोह आतशया के चोह चोशया के १४ उपवास कर ।
- ४—चार अनन्तचतुष्टय क चार चौथो ४ चार उपवास कर ।
- ५—आठ प्रातिहासो क १६ अशमिया क १६ उपवास कर ।
- ६—पाँच ज्ञान क पाँचमिया ५ पाँच उपवास कर ।
- ७—छह पाठया के छह उपवास कर ।

इम प्रकार मत पूरा कर अशासन करे । आ हां खमा 'प्रारदन्ताज' मन का पाप करे ।

## १२४—गणअष्टमी व्रत

दोहा

अष्टमिगंध त्रिशत वाचघ, द्वय सौ अष्टासी प्रोपध मस ।  
समकित सहित धरे मत जास, करे पारने चौंसट तास ॥

—वधमानपुराण

भावाय—यह मत २५० अंग में पूरा हाता है, जिनम १ सौ अष्टासी उपवास और चौंसठ पारणा हाते है । मत पूरा होने पर उद्यापन करे और नमन्वार मन्व का निकाल जाय करे ।

## १२५—तीर्थरुरेला व्रत

दोहा—अपम आदि तीर्थश के, रेला बीस ४ चार ।  
आठ चौदश कीजिए, अतर मूर न पार ॥

चोपाइ

सार्त आठ रेला ठान, नोमा दिवस पारणों जान ।  
तेरस चौदश द्वय उपवास, मावस पून्यो भोजन तास ।



वय हजार एक प्रति एक, पेला चोंमठ धर सुधिवेक ।  
 करे आयु लघु जानो जयै, शोल सहित भवि धारो तवै ।  
 लगते कारण शक्ति को नाहि, थारै चोदश कर शक नाहि ।  
 इनमें अतर पाड़े नहीं, सो उत्कृष्ट लेह सुख ग्रही ।

—कि० सि० कि०

भाग ४—यह मत १६ महान म समाप्त होता है विनाम ६४ पेला और ६४ पारणा होने हैं । प्रात माह प्रयेक सतमी ग्रन्थी तथा च्योन्शी, चतुन्शी क जेला, नममी ग्राम पूर्णिमा क पारणा कर । यदि शक्तिविशेष हो ता एक जला एक पारणा इस नाम म एक हजार उप तक करे ।

मत पुरा हाने पर उद्यापन कर प्रार नमस्कार मत्र का विगल ज्ञाप्य कर ।

विष्णु क्षेत्र क पुच्छलापती श्च म ज्ञातशास्त्रापुरी नाम की नगरी ह, उसमें महापद्म नाम क चक्रवर्ति थे । उनकी जन्माला नाम ही एक गनी थी, भगवत ब्राह्मण का चीव ओ तीसरे स्वम में देव हुआ था, यहाँ से चयनर इस रानी क गम म आया, और शिवकुमार नाम का पुत्र हुआ, इतने य मत रिषा जितने प्रभाव से छुटवें स्वम में इन्द्र हुआ, और यहाँ से आकर मगध देश की राजरही नगरी में ग्रहास सेठ की जिनमती मेरानी क गर्भ में जन्मलामी उत्पन्न हुए और लौकिक सुखा जो जलाना जल नकर गच्छा कर कम नाश कर निपुलाचल परत स मोठ प्रात किय ।

## १०७—मौन मत

### चीपाह

मौन मत भवि विधि सुन लेय, नित्य नैमित्तिक द्वय विधि होय ।  
 नित्य मौन जीवन पर्यन्त, सप्तकाय में ढील न रच ॥  
 भोजन वसन और स्नान, मेनुन अह मल मोचन जान ।  
 जिन पूजन सामायिक देत, मौन सप्तविध नित्य भजेत ॥

अथ सुन नेमित्तिक विधि जान, एक वर्ष में पूरण मान ।  
 पोष पुक्ल की एकादशी, पोरुश प्रहर वास कर मती ॥  
 एकादशी सु द्वादश मास, बीस चार करिये उपवास ।  
 एक वर्ष पूरण जब होय, उद्यापन विधिबत कर सोय ॥  
 उद्यापन की शक्ति न होय, तो दूनो व्रत करिये सोय ।  
 मौन व्रत कथा के माहिं, लखिये विधी विशेष तहाहिं ॥  
 —मौनव्रतकथा

भाष्य—यह व्रत दो प्रकार से किया जाता है । यथा—

१—नित्यमौन—नोजन, वसन, स्नान, मैथुन, मलक्षपण, भाभायिक,  
 और जिनपूजन, इन सात कार्यों में जीवन पवन्त मौन रचना ।

२—नेमित्तिकमौन—इह व्रत एक वर्ष में पूरा होता है । पोष शुक्ला  
 एकादशी से प्रारम्भ होता है । प्रत्येक मास की प्रत्येक एकादशी को दिन  
 १६ प्रहर का उपवास करे । २४ उपवास पूरा होनेपर उद्यापन करे ।  
 उद्यापन का शास्त्र न हो तो दूना व्रत करे । नमस्कार मन का निश्चल  
 जान करे ।

यह व्रत कौशल नश क कूट नामक ग्राम में कुण्डी की कन्या तुङ्ग  
 भद्र ने किया था, जिसके प्रभाव से यह कौशल नश में यमुना नदी के  
 किनारे कोशम्बी नगरी में हारगहन राजा के यहाँ मुकेशल नाम का पुत्र  
 हुआ और सखार से विद्वत् हास्य ज्ञानीदा ग्रहण की, तेना पतापुत्र  
 निहार करते हुये किसी मन में आ पहुँच, और वहाँ ही उनसे भठारी  
 मतिसागर का जीव जो सिद्ध हुआ था वह आ पहुँचा सो पूब वर न नारण  
 उन दोनों योगीश्वरों के शरीर को निरारणा शुरू किया । ३ तेना मुनिरान  
 ध्यान में तल्लीन होकर कर्मों का नाश कर अन्त होनेवाला होकर  
 मोक्ष गये ।

## १२८—विमानपक्ति व्रत

दोहा—व्रत विमान पक्ति तनो, विधि सुनिये भवि सार ।

मन वच मम करिये सहा, गुर सुरेश पद वार ॥

अडिल्ल—सौधम रु इशान सुरग चहुँ त गही ।

पच पचोत्तर लगे पटल प्रेमट फही ॥

तिनरी चहुँ दिशि माहिं उद्धरेखी जहाँ ।

जन भयन ह अनक अरुत्तम ही नहों ॥

दोहा—तिनके नाम विधान फो, परतय है लख सार ।

जहाँ जहाँ जते पटल, सो सुनिय विस्तार ॥

चोपाइ

द्वय सुरगन इकतीस विख्यात, सनत्कुमार माहन्द्रहिं सात ।

चार ब्रह्म ब्रह्मोत्तर सही, लातय कापिष्टहिं द्वय सही ॥

एक शुभ महाशुक्रहिं धार, एक सत्तारहिं अरु सहस्रार ।

आनन प्राणत आरण तीन, अच्युन लग छह पटल प्रवार ॥

नव नव प्रययक जानिये, नव नवोत्तर इक मानिये ।

पच पचोत्तर पटल जु परु, ये प्रसट मुनि धर सु त्रिवेक ॥

अत्रै वरत प्रोपध विधि जिसी, कथा प्रमाण कहूँ सुन तिसी ।

एक पटल प्रतिप्रोपध चार, करे इषातर चित अर धार ॥

प्रोपध लगते तेलो एक, कर भविनन मन धर सु त्रिवेक ।

ता पीड़े प्रोपध चहुँ जान, तिनके पीड़ तेलो ठान ॥

चहुँ प्रोपध चहुँ तेलो वास, छह चहुँ अनसन पुन छह वास ।

इहि विधि प्रसट वार विधान, चहुँ प्रोपध छह अनुक्रम ठान ॥

प्रसट वार जु पूरण वाय, इक लगती तेलो फरवाय ।

वीच इषातर असन जु कर, एक भुक्ति अतर नहि पर ॥

इनके तैला अरु उपवास, अनशन दिवस रु तेलो जास ।

अरुसव दिन इकठे कर जोड़, सो सुन लो भवि चित धर कोब ॥

उह सौ दिवस सतान रेजान, वरप दिवस मरयाद् वखान ।  
 वास इकातर द्वयसं जान, अर सय वास जोड इम ठान ॥  
 वास इक्यामी पर सय तीन, असन तीन सौ सोला कीन ।  
 यह वत तान भवन में सार, विधियुत किये देव पद धार ॥  
 अनुक्रम शिख जेहै तर्हकीक, अर वारहु भवि चित धर ठीक ।

—कि० वि० कि०

माग्य—२० त्त ६६७ दिन में पूरा होता है जिसमें १ तैला,  
 १२ तैला और २१० उपवास होते हैं। इनमें कुल उपवास २८१ होते  
 हैं। तथा पागणा १-६३-२५० पागण १६ होते हैं। स्वर्गों के पल  
 ६० तथा उनके चारों तरफ रेणुमंड अनंरु चैत्यालय है। उनकी भावना  
 भानी चाह्ये। ब्रह्मण्ड तनत्र पन्डित १ तैला २२, फिर एक पागणा वर  
 वत आरभ करे।

१—प्रथम त्तम ४ प्रथम पल का जला १, पागणा १, फिर इसमें  
 चार दिशाओं में रेणुमंड अनंरु चैत्यालय उन सप्तमी चार दिशा के  
 उपवास, पागणा ४। इस प्रकार एक पल सप्तमी जला १, उपवास  
 ४, पागणा ४ होते। इस क्रम से ६३ पल के जला ६३, उपवास  
 २१०, पागणा २१० होते हैं। इनमें ब्रह्मण्ड का तैला १, पागणा १, जोड़  
 लया ता उपवास कुल ३८१, पागणा ३१६ हुए। इस प्रकार व्रत पूर्ण  
 करे। 'धौं हीं उष्वतोऽसम्भ्राश्रसग्यातनिचैयालयभ्या नम' इस  
 मंत्र का प्रयोग जप करे। व्रत पूर्ण होनेपर उपासन करे।

१०६—वारह तप व्रत

चौपाइ

वारह व्रततनी विधि जिसी, वारह भाँति बखाने तिसी ।  
 श्लेषध कीजे वारह भात, अर वारह करिये एकान्त ।  
 वारह काजी तदुल लेय, निगोरसे गोरस' तज देय

अल्प अहार असन इक भाग, लेंहें करहें द्वयवट भाग ।  
 इकठाना भोजन जल सवे, ले पुरपाय वार इक तव ।  
 मूग मोठ चोला अरु चना, लेय इकोन यीन ततलिना ।  
 पानी लूण थका जो खाय, नयडनाम ताको कहवाय ।  
 घृतहि छाडिये सब परकार, सो जाग लूको आहार ।  
 विविध पात्र साधर्मी जान, ताहि अहार देय विधि जान ।  
 ले मुखशोध निरन्तर थाय, पाछें व्रत धर असन लहाय ।  
 अतराय हुये उपवास, करे नाम मुख शोभ्यो तास ।  
 घर रे लोक बलाय रहेइ, विन याचे भोजन जल दइ ।  
 घरे थाल माहीं जा राय, फिर याचे न अयाचा खाय ।  
 लूण सबधा त्यागे यदा, भाँति अलूणा कीह तदा ।  
 जिनपूजा सुन शास्त्र बखान, एकग्रेह को कर परमाण ।  
 जाय उडड तास के वार, भोजन लेहु कहे नर नार ।  
 ठाम असन जल फो जो गहे, वरत मान निरमान जु फहे ।  
 पारह बरत भाँति दश दोय, अनुक्रम इतपक्ष भविलोय ।  
 समकित सहित जु व्रत को धरे, त्रिविध शुद्ध शीलहि आचरे ।  
 करह पूरण वष मभार, सो सुरपद पावे नर नार ।  
 —कि० सिं० कि०

भाषा—<sup>१</sup> व्रत एक वष के मातर १८४ दिन म पूय होता है ।  
 शुक्लपक्ष की जिस किसी तिथि से शुरू किया जाता है । प्रथम चारह उपवास  
 करे । २ चारह एकाशन करे । ३ चारह काजिक भोजन करे । ४ चारह निगारसे  
 (जिना योग्य) भोजन करे । ५ चारह अल्प आहार करे । ६ चारह एक  
 लगाना करे । ७ चारह मूग व आहार करे । ८ फिर १२ मोठ के  
 आहार करे । ९ चारह चोला व आहार करे । १० चारह चना व  
 आहार करे । ११ चारह मात्र पानी का आहार करे । १२ चारह बिना  
 घृत के आहार करे । अतराय बलापर भोजन करे । नमस्कार मन का  
 निमल जाय करे । व्रत पूण होने पर उपासन करे ।



## १३०—नन्दीश्वरपक्ति मंत्र

दोहा—

नन्दीश्वर पकति विरत, सुनहु भविक चित लाय ।  
किये पुण्य अति ऊपजे, भव आताप मिटाय ॥

चोपाह

प्रथमहि चार इकातर बीस, कर पीछे वेला इक्कीस ।  
ता पीछे जु इकान्तर करे, द्वादश प्रोपध विधियुत धरे ।  
पुन बलो परिये हित जान, धारा घास इकान्तर ठान ।  
पोत्रे एक वेलो फोजिये, इक अतर दश द्वय लाजिये ।  
फिर इक उलो कर मर प्रेम, घसु उपवास इकातर पम ।  
सब उपवास आठ चालीश रिच वेलो चहु गहे गरीश ।  
दक्षिमुख रति करके उपवास, अननगिरि घहे वेला तास ।  
दिवस एकसो आठ मभार, वरत यहै पूरणता वार ।  
छुपन प्रोपध भवि मन आन, करे पारणा वावन जान ।  
लगते करे न अतर पड़े, अघ अनेक भव सचित हरे ।

—कि० सि० कि०

२० मंत्र १०८ तिन म पूरा हाना है, अन्तम १६ उपवास और १२ पारणा हाने ह । २१—

पूर्वदिशि—अननगिरिका १, ताक उपवास २, पारणा १, दाधमुग के उपवास ४, पारणा ८ । गतिकरक उपवास ८, पारणा ८ । इस प्रकार पूर्व दिशि क उपवास १८, पारणा १८ । इसी प्रकार पश्चिम क, पश्चिम क और उत्तर के करे । नन्दीश्वर की भावना भावे ।

‘ओं हीं नन्दीश्वर द्वापे द्वापद्यासजिनद्वयम्वा नम ’ इस मन्त्रा विकल जाण करे । मन पृथ होन पर उपापन करे ।

## १३१—परमेष्ठिगुण त्रत

दोहा—कहूँ पच परमेष्ठि के, जे जे गुरु सगराश ।  
छ्वालीस वसु तास उह, ग्रह पचिस अठवीस ॥

## चौपाइ

एतु छ्वालिश गुण श्रीअरहत, दश अतिशय जनमत द्वैसत ।  
केवलज्ञान भये दश वाय, दुहु फी घीस दर्श करवाय ।  
प्रातिहार्य की आठे आठ, चौथ चतुष्टय चहु ये पाठ ।  
सुरवृत अतिशय चौदह जास, चौदा चादशि गणिये तास ।  
अत्र मुनिये वसु सिद्धन भेद, करिय वास आठ मुनि लेहा ।  
समकित दूजो गण वखान, दसण चौथो गोरज जान ।  
सुहमच्छटो अवगाहन सही, अगुर लघु सतम गुण सही ।  
अवावाध आठमो वरे, इन आठों की आठे करे ।  
अचारज गुण जेह छ्वालीस, तिनकी विधि मुनिये निशदीश ।  
धारसिवारा तप दश दीय, पड्यावश्यक मी छट छह होय ।  
पाचें पाच पाच आचार, दशलक्षण दश दशमी वार ।  
तीन तीन तिहु गुणि जु तना, प्रोपध यह छहतीसहि भनो ।  
गुण पचिस उवज्भाय सुजान, चादह पूर्य कश्यो वखान ।  
द्वारा अत्र प्रकारों वीर, ये पञ्चान गुण लखिये वीर ।  
चोदा चौदशि के उपवाय, द्वारा धारसि प्रोपध तास ।  
उपाध्याय के गुण हू जिते, वास पचोस वखाने तिते ।  
साधु अट्टाईस गुण जानिये, तिहिं प्रोपध इहि विधि ठानिये ।  
पच महान्त समितिनु पच, इन्द्रिय विजय पाँचगण सच ।  
इनकी पद्रह पाचें करे, आवश्यक की छह छुट करे ।  
भूमिशयन मननको त्याग, वसन त्यजन कचलौच विराज ।  
मोनन करे एक ही वार, ठाढी होय सो लेय अहार ।  
करे नहीं दातुन की घात, इन साता की पड़िमा सात ।

सब मिल प्रोपध ये अठवीस, करहें भवि हूह शिव इश ।  
 पच परम गुण सय जोड, सौ पर तँतालिस कुल जोड ।  
 करिये प्रोपध तिनके भव्य, सुरपद के सुखदायरु मन्व ।  
 अनुपम शिव पावे तहँ कीक, जिनपर भाष्यो है भवि ठीक ।

—कि० मि० कि०

भाषा—य० मन २८२ तिन म पूरा होता है जिसम १६३ उपवास

और १६३ पारणा होते हैं । तथा—

१—अरहंत के ४६ गुण के ४ उपवास और ४६ पारणा—

जन्म के १० अतिशयो ने दश दशमियों के उपवास और १० पारणा ।  
 केवलज्ञान के प्रतिशयो के दश दशमियों के उपवास और १० पारणा ।  
 ग्राम प्रातिहार्य के आठ अणमया के आठ उपवास और ८ पारणा ।  
 चार अनतचतुष्टय के चार चतुर्थियों के चार उपवास और ४ पारणा ।  
 अमनकृत चौदह अतिशयों के १४ चतुदाशियों के १४ उ १४ पा० ।

२—सिद्धा के ८ गुणों के ८ उपवास, ८ पारणा—

आठ गुणों के आठ अष्टमियों के आठ उपवास, आठ पारणा ।

३—आचार्यों के ३६ गुणों के ३६ उपवास, ३६ पारणा—

अरु तप के १२ द्वापदश्या के १० उपवास, और १२ पारणा ।  
 छह आचर्यरु की छह पठिना के ६ उपवास और ६ पारणा ।  
 पचाचारा के पाँच पचमिया के पाँच उपवास और पाँच पारणा ।  
 दशलक्षण के दश दशमियों के १० उपवास और १० पारणा ।  
 तीन गुणियों के तीन तीजों के तीन उपवास और तीन पारणा ।

४—उपाध्याय के २५ गुणों के ५ उपवास, २ पारणा—

पुन १४ के १४ चतुर्थियों के १४ उपवास और १४ पारणा ।  
 प्रग ११ के ११ एकादशियों के ११ उपवास और ११ पारणा ।

५—सब साधु के २८ गुणों के २८ उपवास, २८ पारणा—  
 पाँच महाव्रत के पाँच पचमियों के ५ उपवास और ५ पारणा ।

पाँच ममिताशा ने पाँच परमियों के ५ उपवास और ५ पारणा ।  
 पाँच इन्द्रशिवन के पाँच परमिया के ५ उपवास और ५ पारणा ।  
 छह आम्बर के छह पडिमा के छह उपवास और छह पारणा ।  
 सप्त सात गुणा के सात पाठमा के सात उपवास और सात पारणा ।  
 अठ प्रसाद वन पुत्र के । नमस्कार मन मातृकाल प्राप्त कर । पुण्य  
 लेन पर उद्यापन कर ।

## १३२—ऋतुज्ञान व्रत

### चौपाह

ऋतुज्ञान व्रत कह्यो महान, आगम विधि जिमि कही रखान ।  
 पडिमा मतिज्ञान अठवांस, ग्यारह ग्यारसि अग प्रतीक ।  
 दोयज दोय परिक्रम सोय सूत्र अठासी अष्टमि होय ।  
 नौमी एक योग प्रथमान, चौदशि चौदह पूर्व यखान ।  
 पच चूलिका पचमि पाँच, अथधि ज्ञान छह पष्टी वास ।  
 दोय चौथ मन पर्यय ज्ञान, दशमी एक सु वेधलज्ञान ।  
 एक शतक अष्टाधन वास, करे पारने इतने तास ।  
 भास उनासी पूरण होय, कर उद्यापन विधिधत सोय ।  
 —सुदृष्टितरिणी

भासाय—यह व्रत उन्वाशी भास में पूरा होता है, जिसमें अष्टाधन उप  
 वास और एक सौ अष्टाधन पारणा होते हैं । यथा—

- १—मतिज्ञान के १८ पाठमा के १८ उपवास और १८ पारणा करे ।
- २—ग्यारह अग के ११ ग्यारसों के ११ उपवास और ११ पारणा करे ।
- ३—परिक्रम के दो शोयज के २ उपवास और २ पारणा करे ।
- ४—अष्टमो मूत्र के ८ अष्टमिया के ८ उपवास और ८ पारणा करे ।
- ५—प्रथमानुयोग का एक नौमी का १ उपवास और १ पारणा करे ।

- ६—चौदह व्रत के १८ चतुर्दशिया के १८ उपवास और १४ पारणा करे ।  
 ७—पाँच चूलना के ५ पंचमिया के ५ उपवास और ५ पारणा कर ।  
 ८—अग्नाधजान के ६ पाठिया के ६ उपवास और ६ पारणा करे ।  
 ९—मन पत्रजान के २ चौदशियों के २ उपवास और २ पारणा करे ।  
 १०—केवलजान के १ दशमी का १ उपवास और १ पारणा करे ।

इस प्रकार व्रत पूरा कर उद्यापन करे । 'श्रीं हीं श्रुतवानाय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे ।

## १३३—कर्मक्षय व्रत

### चौपाई

कर्म क्षयण व्रत विधि हम जान, कही जिनागम मार्हि प्रमाण ।  
 प्रवृत्ति एक मो अड़तालीस, तिन नाशन व्रत यह जगदीश ।  
 सात चतुर्थी के उपवास, प्रोपध तीन सममी तास ।  
 चौदशि केर पिच्यासी सोय, शन अड़तालिस प्रोपध होय ।  
 इहि विधि पूरण है व्रत जणे, उद्यापन कर छाडे तणे ।

—मुदष्टितरगिणा

भाषा—यह व्रत ७४ मास में पूरा होता है, जिसमें १४८ उपवास और ८८ पारणा होते हैं । यथा—

- १—सात प्रवृत्ति नाशनाथ सात चतुर्थियों के सात उपवास, ७ पारणा ।  
 २—तीन प्रवृत्ति नाशनाथ तीन सप्तमी के ३ उपवास, ३ पारणा ।  
 ३—छत्तीस प्रवृत्ति नाशनाथ छत्तीस नवमियों के ३६ उपवास, ३६ पारणा ।  
 ४—एक प्रवृत्ति नाशनाथ एक दशमी का एक उपवास, एक पारणा ।  
 ५—सालह प्रवृत्ति नाशनाथ अरह द्वादशियों के १२ उपवास, १२ पारणा ।  
 ६—पचासी प्रवृत्ति नाशनाथ पचास चौदशियों के ५५ उपवास, ५५ पारणा ।

इस प्रकार व्रत पूरा कर उद्यापन करे । 'श्रीं हीं णमो सिद्धाय' इस मंत्र का त्रिक

## १३४—गरुडपचमी व्रत

श्रावण सुदि पचमि के दिना, गरुड पचमी व्रत जिन भना ।

—जैनव्रतकथा

भाषा—यह व्रत ३ व्र म समाप्त होता है, प्रत्येक व्र ध्यायण शुक्ला ३ व दिन उपवास करे । 'आ ही अहद्वभ्या नम' इस मंत्र का जाप्य करे । व्रत पूरा होने पर उत्थापन करे ।

यह व्रत चारिजमती ने किया था जिसके प्रमाद में पिता की मूर्च्छा दूर की गी और अन्त में मोक्ष प्राप्त किया था ।

## १३५—पष्ठी व्रत

पष्ठी श्रावण शुद्ध महान, पष्ठी व्रत धर अति सुरत ठान ।

—जैनव्रतकथा

भाषा—यह व्रत ६ व्र म पूरा होता है । प्रतिव्रत श्रावण शुद्ध पक्ष के दिन उपवास करे । 'आ ही धानमिनाभाय नम' इस मंत्र का जाप्य करे । पूरा होने पर उत्थापन करे ।

यह व्रत मालव देश के चिंच नामक ग्राम में एतनागमीइ की पुत्री चारिजमती ने किया था, जिसने प्रमाद से नगी में शत्रु द्वारा रहना तथा पुत्र पुत्र प्राप्त हो गया था, और यह चारिजमती जिनगीदा लेकर स्वर्ग में गयी हुई और वहाँ में चयम्बर जिनगीदा अहण कर कर्मनाश कर माक्ष प्राप्त किया ।

## १३६—द्वादशी व्रत

मादों शुद्ध द्वादशी होय, व्रत द्वादशी कर भवि सोय ।

—जैनव्रतकथा

भाषा—यह व्रत १२ व्र म पूरा होता है । प्रतिव्रत माक्ष शुक्ला द्वादशी व दिन उपवास करे । 'आ ही अहद्वभ्यो नम' इस मंत्र का जाप्य करे । व्रत पूरा होनेपर उत्थापन करे ।

यह व्रत मालवा देश के पञ्जावतापुर नामक ग्राम में नरहरदा राजा की पुत्री शीलानती ने पालन किया था जिसे प्रसन्न स्वर्गात् सुख भाग मोक्ष प्राप्त किया था ।

### १३७—बेला व्रत

आदि अन्न एकासन करे, बीच दोय उपवास जु धरे ।

—हरिवंशपुराण

भासाध—प्रथम एक एकशन, फिर दो उपवास, पीछे एक एकाशन करना ।

### १३८—षष्ठमवेला व्रत

प्रथम एकाशन बेला एक, पाछे एकासन इक टेर ।

छह बेला भोजन का त्याग, षष्ठम बेला व्रत यह भाष ॥

—हरिवंशपुराण

भासाध—प्रथम धारणे के दिन आदि में एकाशन, फिर दो उपवास, फिर पारणा के दिन व्रत भाग में एकाशन इस प्रकार छह बेला भोजन का त्याग करना ।

### १३९—तेला व्रत

त्रय उपवास बीच में ठान, धारणे पारणे एकलठान ।

—हरिवंशपुराण

भासाध—पहले त्रय व्रत में एकाशन और बीच में तान उपवास करना ।

### १४०—अष्टमी व्रत

अष्टम्यामुपवासोऽय, विधत्ते भावपूर्वकम् ।

हृत्या क्माष्टक सोऽपि, याति मोक्षपद ध्रुवम् ॥

भाग्य—यह व्रत प्रत्येक मास में प्रत्येक अष्टमी कृत्तिन किया जाता है। इस दिन उपवास करे। 'आं ह्रीं नमो मित्राण मित्राधिपतय नम' इस मंत्र का विनाल जाप्य करे। आठ बर रात उद्यापन करे।

### १४१—चतुर्दशी व्रत

करहु व्रत चादश उपवास, पूजा करो जिनेश्वर पास।  
मास दिवस महि दो-दो बार, टृप्ण सुफल महि भेद न पार।  
मास अष्टादश सुफल व्रत लाजे, तेरस दिन एक भुक्ति सु कीजे।  
चौदश वास करो मन लाय पून्यो पारणा कीने राय।  
चौदह बर करो व्रत सार, पीठे उद्यापन कर सार।

—चतुर्दशावतकथा

भाषा—यह व्रत अष्टादश शुक्ला १८ से शुरू होता है। प्रत्येक मास की प्रत्येक त्रयोदशी कृत्तिन एकाग्रता करे। चतुर्दशी को उपवास और पून्यो का पारणा करे। 'आं ह्रीं अनन्तनाथाय नम' इस मंत्र का विनाल जाप्य करे। १८ बर रात उद्यापन करे।

यह व्रत मुन्नानी नाम की सेगानी ने किया था जिसके प्रभाव से स्वर्गात्मिक के सुख भोगकर मोक्ष प्राप्त किया।

### १४२—निर्वाणकल्याणक वला व्रत

जे जे ताथकर निर्वाण, गये तास दिन की तिथि ठान।  
तिह दिन को पहलो उपवास लगतो दुनो वास प्रकाश।  
इहि विधि चारहु मास मभार, बेला करिये बीस रु चार।  
बेला कल्याणक निर्वाण, व्रत नाम लिखिये बुधिमान।

—कि० मि० कि०

भाषा—यह व्रत ७२ दिनमें पूरा होता है। जिसमें २४ बेला और ४४ पारणा होने हैं। यथा—



सार्धंकर न०	निवाण तिथिर्था	वज्रा तिथिर्था	पारणा तिथिय
१	माघ कृष्णा १८	८-३०	१
२	चैत्र शुक्ला ५	५-६	७
३	चैत्र शुक्ला ६	६-७	८
४	वशाख शुक्ला ६	२-७	८
५	चैत्र शुक्ला ११	११-१२	१४
६	पाल्पुन कृष्णा ४	८-५	९
७	पाल्पुन कृष्णा ७	५-८	९
८	पाल्पुन कृष्णा ८	८-९	१०
९	भाद्रपद शुक्ला ८	८-९	१०
१०	आश्विन शुक्ला ८	८-९	०
११	श्रावण शुक्ला १५	१५-१	
१२	भाद्रपद शुक्ला १४	१४-१५	
१३	आषाढ कृष्णा ८	८-९	१०
१४	चैत्र कृष्णा ३०	३-१	१
१५	चैत्र कृष्णा १८	८-१०	१
१६	ज्येष्ठ कृष्णा १८	१८-१०	१
१७	वैशाख शुक्ला १	१-२	२
१८	चैत्र कृष्णा १०	०-१	२
१९	पाल्पुन शुक्ला ५	५-६	७
२०	पाल्पुन कृष्णा १०	१२-१२	१४
२१	वैशाख कृष्णा १४	१६-३०	१
२२	आषाढ शुक्ला ७	५-८	९
२३	श्रावण शुक्ला ७	५-८	९
२४	अश्वि कृष्णा १०	३०-१	२

इस प्रकार न्त समाप्त कर । निराणकस्त्राणक की भावना भागे  
 'आं ह्रीं वृषभादिचतुर्थशक्तिजिनाय नमः' इस मंत्र से निराल जाप्य करे  
 मंत्र पूर्ण होनपर उच्चापन करे ।

## १४३—लघुपचरन्त्याणक व्रत

गभ जन्म तप क्षान्ति, तार्थकर चौबीस ।

वरप माहि तिथि मघन की, करे एक सौ बीस ॥

—कि० सि० कि०

भासाथ—यह व्रत एक वर्ष में पूरा होता है। जिसमें १०० उपवास और १० पारण होते हैं। पावन तिथि में तार्थकर का फलदायक व्रत है। उस व्रत तिथि में उपवास करे। 'श्री ह्रीं वृषभादिब्रह्मविशक्ति नाथकराय नमः' इस मंत्र का त्रिसल जाप करे।

## १४४—बृहत्पचरन्त्याणक व्रत

## चौपाद

प्रथम वरप श्री गभ फल्याण, वरप दूसरी जनमन जान ।

तप कल्याणक वर्षहिं तीन, चौथी वरप सु केवल लाह ॥

वरप पाचवीं श्री निर्वाण, चाबिस चौबिस प्रोपध ठान ।

वरप पाच मर्यादा धार, पीठ उद्यापन कर सार ॥

—कि० सि० कि०

भासाथ—यह व्रत पाँच वर्ष में पूरा किया जाता है। प्रथम वर्ष में त्रिंशत् तीर्थकरों की गर्भ की तिथियों के उपवास करे। इसी प्रकार द्वितीय वर्ष में जन्म के १६। तृतीय वर्ष में तप के १४। चौथे वर्ष में जन्म के १६ और पाचवें वर्ष में निर्वाण के १६ उपवास करे। 'श्री ह्रीं वृषभादिगारान्तभ्यां नमः' इस मंत्र का त्रिसल जाप करे। व्रत पूरा होने पर उद्यापन करे।

## पंच कल्याणक तिथि चक्र

आय-धर सख्या	गमन कल्या	वसक	तपक	पानक	निवाणक
१	आ कृ २	वै कृ ६	वै कृ ६	पा कृ ११	माघ कृ १४
२	ज्ये कृ ३०	पौ शु १०	पौ शु ६	पौ शु ११	वै शु ५
	फा पु ८	माग शु १५	माग शु १५	वा कृ ८	वै शु ६
६	च पु ६	पौ पु १०	पौ शु १२	पौ शु १६	वै शु ६
५	जा शु २	वै कृ १०	वै शु ६	च पु ११	वै शु ११
६	माघ कृ ६	वा कृ १३	माग कृ १०	वै शु १५	पा कृ ८
७	भाद्र शु ६	ज्ये शु १२	ज्ये शु १२	पा कृ ६	पा कृ ७
८	च कृ ५	पौ कृ ११	पौ कृ ११	पा कृ ७	फा कृ ८
९	पा कृ ६	माग शु ६	माग शु १	वा शु २	भाद्र शु ८
१०	वै कृ ८	पौ कृ १२	पौ कृ १२	पौ कृ १४	आश्विन शु ८
११	पौ कृ ६	पा कृ ११	पा शु ११	माघ कृ २०	श्रा शु १५
१२	आषा कृ ६	पा कृ १६	पा कृ १४	माघ शु २	भाद्र शु १४
१३	ज्ये कृ १०	पौ शु ४	पौ पु ८	माघ शु ६	आषा कृ ८
१४	वाति कृ १	ज्ये कृ १२	पौ कृ १२	वै कृ १०	च

ताथकर सत्या	गन ख्या	ज म क	तप क	ज्ञान क	निर्वाण क
११	वै तु १३	पी शु १	पी तु १३	पी तु १५	जे तु ४
१२	मा कृ ७	पे कृ १८	ज कृ १८	पी तु ११	जे कृ १४
१७	ग कृ १०	वै तु १	वै शु १	चे शु ३	वै शु १
१८	पा शु २	मग शु १८	मग शु १०	का शु १२	वै कृ ३०
१९	चे शु १	मग तु ११	मग शु ११	मग शु ११	पा शु १
२०	ग कृ २	वं कृ १०	वं कृ १०	वै कृ ६	पा कृ १२
२१	अमो कृ ४	आपा कृ १०	आपा कृ १०	मग तु ११	वै कृ १४
२२	का तु ६	ग कृ ६	श्रा कृ ६	अलो कृ १	आपा शु ७
२३	वं कृ ३	पी कृ ११	पी कृ ११	चे कृ ८	ग तु ७
२४	आपा शु ५	चे शु १३	वै शु १३	वै शु ७	का कृ ३०

नवल साह कृत 'वर्धमानपुराण' में निम्नलिखित २० व्रत और कह गये हैं जो गीस पथ, ज्येताम्बर तथा डूँडिया आदि सम्प्रदायों में प्रचलित जान पड़ते हैं, और जो कि तेरह पथ सम्प्रदाय के प्रायः प्रतिकूल हैं, उन व्रतों को भी यहाँ संग्रह किया जाता है।—

१—पचपोरिया व्रत

भादों सुदि पाँचें दिन जान, घर पच्चीस घाँटे परवान ।

२—चन्दनपट्टी व्रत

चन्दनपट्टी भादा शुक्ल, चन्दन चचित भोजन मुक्त ।

३—कौमारसप्तमी व्रत

भादों सुदि सप्तमी के दिना, खजरी मण्डप पूजे जिना ।

४—मनचिती अष्टमी व्रत

भादों सुदि आठें दिन जान, मन चिन्ते भोजन परवान ।

५—सुगंधदशमी व्रत

अथ सुगंध दशमा व्रत जान, भादा सुदि दशमा को मान ।

६—दशमिनिमानी व्रत

भादों सुदि दशमी व्रत घर, आदर युत परघर आहार ।

७—सौभाग्यदशमी व्रत

भादों सुदि दशमी दिन ठान, दश सुहागिना भोजन

## ८—चमकदशमी व्रत

चमक दशमि श्रीर चमकाय, नो भानन नहि तो शतराय ।

## ९—छहारदशमी व्रत

छहार दशमि व्रत इहि परमार, इह सुपात्र का देय अहार ।

## १०—तमोरदशमी व्रत

तमोर दशमि व्रत फो यह योर, दश सुपात्र को दय तमोर ।

## ११—पानदशमी व्रत

पान दशमि वीरा दश पान, दश धायक दे भानन ठान ।

## १२—फूलदशमी व्रत

फूल दशमि दश फूलन माल, दश सुपात्र पहिनाय अहार ।

## १३—फलदशमी व्रत

फल दशमी फल दश कर लेय, दश पात्र के घर घर देय ।

## १४—दीपदशमी व्रत

दीप दशमि दश दीप बनाय, जिनहि चढ़ाय अहार कराय ।

## १५—धूपदशमी व्रत

धूप दशमि व्रत धूप दशाग, खेचो जिन दिन भाय अमग ।

## १६—भावदशमी व्रत

भाव दशमि व्रत दश दश पुरी, दश धायक दे भोजन करी ।

१७—न्योनदशमी व्रत

न्योन दशमि दश दशमि कराय, नये नये दश पात्र निमाय ।

१८—उडडदशमी व्रत

दशमि उडड उडड अहार, पच घरन मिलि जो अचिकार ।

१९—वारादशमी व्रत

वारा दशमि सुहारी लेय, वारा वारा दश घर देय ।

२०—भडार दशमी व्रत

भडार दशमि व्रत शक्ति ज पाय, दश दिन भवन भडार चढाय ।



## सूतक-प्रमाण

जैन धर्म के ग्रन्थों में कहा भी सूतक और पातक व्यवहारी जीवों को मानने का उल्लेख नहीं मिलता। यह प्रथा जैनेतर समाज से दूरा दर्सी जैन समाज में भी प्रचलित हो गई है।

शोर में सूतक मान जननेजली स्त्री को ही होता है, क्योंकि उसकी यानिस्थान से जनन के बाद भी अशुद्ध गूँ निकलता रहता है। किसी किसी स्त्री का तो ४५ दिन तक गूँता है इसलिए मात्र उस प्रमत्ता स्त्री को ही ४५ दिन का सूतक होता है, अन्य जन्म को नहीं (प्रसूता को छोड़ और पति आदि को नहीं होता)

**मरणसूतक**—किसी भी व्यक्ति का मरण हो, मरण के पश्चात् अन्तमुहूर्त उपरान्त उस शरीर में सम्भ्रूयित जीव पैदा हो जाते हैं। अतः जब उस मृतक शरीर को जलाया जाता है उससे साथ वे अगणित जीव जल जाते हैं। इसलिए उन जीवों के जल जाने का पातक मान अग्नि लगानेजले पुरुषों को ही होता है, अन्य को नहीं। उनको भी तब तक जब तक राख न उड़ाई जाय और दान, पूजन स्वयंसात् द्वारा शुद्धि न हो जाय।

१—भगत चक्रवर्ती के पुत्र और आत्मानन्द को जेलगान एक साथ हुआ, भगत चक्रवर्ती ने प्रथम ही समनशरण में जाकर पूजा की।

—आदिपुराण

२—मुग्धमाल का जन्म होते ही सबसे पहिले मुग्धरा सेवानी ने मंदिर में जाकर भगवान् की पूजा की।

—मुग्धमाल चरित



३—कृष्णनारायण के जन्म प्रद्युम्नकुमार का जन्म हुआ तब श्रीकृष्ण जी ने मण्डिरजी में पूजन कराया ।  
—प्रद्युम्नचरित

४—भगवान् का जन्म कल्याणक के राजा रुद्र की आज्ञा से भगवान् के पिता ने अपने बन्धुओं के साथ जिनमन्त्र में अभिषेकपूजा महापूजा की ।  
—मल्लिपुराण

इत्यादि जैन शास्त्रों में अनेक उल्लेख हैं । जैन शास्त्रों के अनुसार सूतक उक्त प्रकार होता है । परन्तु परधर में सूतक का रूप जिस प्रकार से प्रचलित है वह इस प्रकार से है ।  
—सदाशिवभक्तिसिद्ध से उद्धृत

### रज स्रावसूतक

प्राकृतं जायते स्त्रीणां मासे मासे स्यभावत ।

पचाशद्वर्षात्पूर्वं तु अकाल इति भाषित ॥

भाष्य—स्त्रियां का स्वभाव से हा महीने महीने रजस्राव होता है वह प्राकृतिक रज है । दस वर्ष के भीतर और ५० वर्ष के ऊपर जा रजस्राव शान्त है वह अकाल रज है, यह दूषित रज है ।

शुद्धा भर्तुश्चतुर्थेऽङ्गि, भाजने रघनेऽपि वा ।

देवपूजा गुरुपास्ति होमसेवा तु पचमे ॥

भाष्य—रजस्रावला स्त्री चौथे दिन स्नान करन पर पतिसेवा और भोजनपान स्नान के योग्य हो जाता है । परन्तु देवपूजा, गुरुपासना और होम सेवा योग्य पाँचवें दिन हा होती है ।

### अशक्तिक स्रुतुपोष

स्रुतुकाले व्यतीते तु यदि नारी रजस्रावला ।

तत्र स्नानेन शुद्धि स्यादष्टादशदिनात्पुरा ॥

भाष्य—स्रुतुकाल के अंत ज्ञान पर अठारह दिन के पहले यदि कोई स्त्री रजस्रावला हो जाय तो वह स्नानमान से शुद्ध हा जाती है ।

### मृतक

जातक मृतक चेति सूतफ द्विविध स्मृतम् ।  
 स्यात् पात प्रसूतिश्च त्रिविध जातकस्य च ॥

भाषार्थ—सूतक दो प्रकार का है—१ जातक, २ मृतक । इनमें जबक सूतक तीन प्रकार का होता है—१ स्यात्, २ पात, ३ प्रसूति ।

### स्यात्, पात और प्रसूति

मासत्रये चतुर्थे स गभस्य स्यात् उच्यते ।  
 पात स्यात्पचमे गृष्टे प्रसूति सप्तमादिषु ॥

भाषार्थ—गभासान के जात तीन या चार महीने में जो गभ श्रुत हो उसे स्यात् कहते हैं । पाँचवें और छठवें मास में जो गभ श्रुत हो उसे पात कहते हैं । और सातवें से दशम मासतक जो गभ श्रुत हो उसे प्रसूति कहते हैं ।

### स्यात्सूतक

माससप्तम्या दिन मातु स्यात् सूतवमिष्यते ।  
 स्नानेनैव तु शुद्धयन्ति सगोत्रश्चैव वै पिता ॥

भाषार्थ—जितने महीना का जात हो उतने दिन का सूतक माता को होता है । और सगोत्री पशु तथा पिता स्नान मात्र से शुद्ध नो जाते हैं ।

### गर्भपातसूतक

पाते मातुयथामास तावदेव दिन भवेत् ।  
 सूतक तु सपिण्डाना पितुश्चैकदिन भवेत् ॥

भाषार्थ—जितने महीना का पात हो उतने ही दिन का सूतक माता को होता है, तथा सगोत्री भाद, पशु तथा पिता के लिए एक दिन मान का होता है ।

## प्रमृतिमृतम्

प्रमृती चैव निर्दोष दशाह सूतक भवेत् ।

त्रिपने शुद्धयने सूती प्रसूतिरुपनिमासकम् ॥

भाष्य—निर्दोष प्रमृति म जलमोक्षिका मृतक स्थ त्ति ना होता है । प्रमृता स्त्री ऋ मात् म शुद्ध होता है । और प्रमृति स्थान ? मनेने म शुद्ध होता है ।

## अनिरीक्षण यार अनधिकार सूतक

तदा पुत्रस्ये मातुर्दशाहमनिरीक्षणम् ।

अथ विशतिरात्र स्यादनधिकारलक्षणम् ॥

स्त्रीसूती तु तत्र स्यादनिरीक्षणलक्षणम् ।

पश्चादनधिकाराद्य स्यात्त्रिशद्विषस भवत् ॥

भाष्य—पुत्रम म प्रमृता स्त्री को स्थ त्ति ना अनिराक्षण सूतक होता है । पश्चात् २० त्ति ना अनिराक्षण सूतक होता है । और पुत्राजम में माता को १० त्ति ना अनिराक्षण सूतक होता है और १० त्ति ना अनाधिकार सूतक होता है ।

जननेऽप्येवमद्य मात्रादीनां तु सूतकम् ।

आसने दश रात्रि स्याद् पञ्चान च चतुषके ॥

पचमे पच पट्पद, सप्तमे च दिनत्रयम् ।

अष्टमे च अहोरात्रि, नवमे च प्रहरद्वयम् ॥

दशमे स्नानमात्र स्यात् एतद् नासद्यसूतकम् ।

आतृतायात्समासघ्ना अनासघ्नास्तत परे ॥

भाष्य—जननाशौच में माता, पिता, भाइ और आमन्त्र न्युत्रा को दश त्ति ना सूतक होता है । और अनासघ्न न्युत्रा को त्रयात् चौथा पीढ़ी में ६ त्ति ना, पंचमी पीढ़ी में ५ दिन, छठी पीढ़ी में ४ दिन । सातवीं पीढ़ी में २ त्ति ना, आठवा पीढ़ी में १ त्ति ना रात्रि, नवमा पीढ़ी में दो प्रहर

श्रीर शमी पीढ़ी में स्नान मात्र में पुद्धि होती है। तान पीढ़ी तक आसन श्रीर चौ ग पत्नी से १० पाढ़ी तक आसन कहते हैं।

अज्ञा च महिष्या चेटी गौ प्रसूता गृहागणे ।

सूतक दिनमरु स्यात् गृह्याद्ये न सूतकम् ॥

भाषार्थ— पाढ़ी, भंस, शमी, गौ आदि जो अपने छ क भीतर जाने तो एक दिन का सूतक होता है। बाहर नहीं।

महिष्या पक्षरु क्षीर गोक्षीर च दशोदिनम् ।

अष्टमे दिवसे अनाया क्षीर शुद्ध न चान्यथा ॥

भाषार्थ—जाने के बाद महिषा का दुग्ध १५ दिन में, गाय का दूध दिन में और पक्षी का ८ दिन में पुद्ध होता है, अन्यथा नहीं।

### मरणमृतक

नाभिच्छेदनत पूर्ध जीवनजातो मृतो यदि ।

मातु पूर्णमतोऽप्येवा पितुश्च त्रिदिन समम् ॥

भाषार्थ—यदि उषत्र हुआ बालक नालच्छेदन क पूर ही मर जाय तो माता के लिये दश दिन का और पिता, भाद तथा आसन ३ पुत्रों की तीन दिन का सूतक होता है।

मृतस्य प्रसवे चैव नाभिच्छेदनत परम् ।

मातु पितुश्च आसनचनाना पूणसूतकम् ॥

भाषार्थ—मरा हुआ बालक उषत्र ही अथवा नालच्छेदन क पश्चात् मरण करे तो माता, पिता और आसन ३ पुत्रों को दश दिन का सूतक होता है।

अनतीतदशाहस्य बालस्य मरणं सति ।

पितोद्दशाहमाशौचं तद्दूध्य पूणसूतका ॥

भाषार्थ—यदि बालक १० दिन के भीतर ही मर जाय तो मरण का सूतक उही जन्म के सूतक के दश दिन के भीतर ही समाप्त हो जाता है। यदि दश दिन के बाद मरण करे तो सूतक मानना पड़ेगा।

जातदतशिशोनाशे पित्रोमातुर्दग्धाह्वम् ।  
प्रत्यासन्नसगोत्राणामेकराश्रिमघ भवेत् ॥  
अप्रत्यासन्नरन्धूना स्नानमेव प्रचोदितम् ।  
अन्नप्राप्तं नैव मृते पाल दिनत्रयम् ॥

भाषा—गौत उगे हुए बालक क मरण का सूतक माता पिता को दश दिन का होता है तम आसन्न वानुश्रा का एक दिन का और अनासन्न वानुश्रा का स्नान मात्र तक का होता है ।

कृतचोलस्य बालस्य पितुभ्रातुश्च पूजयत् ।  
आसन्नेतररन्धूना पचाह्वंकाहमिष्यते ॥  
मरणे चोपनीतस्य पित्रादोना तु पूजयत् ।  
आसन्नवाधघाना च तथैवाशौचमिष्यते ॥

भाषा—चौल उरार हुए बालक क मरण का सूतक माता, पिता, और भाइयों को एक दिन का, आसन्न वानुश्रा को ३ दिन का और अनासन्न वानुश्रा को १ दिन का होता है ।

उपनीत (यज्ञपत्रीत) मस्कार हुए बालक क मरण का सूतक माता, पिता, भाइयों और आसन्न वानुश्रा को १० दिन का होता है और अनासन्न वानुश्रा का पाटी क प्रमाण म सूतक होता है ।

आसन्न वानुश्राओं को पीढ़ी प्रमाण सूतक  
तृतीयपादे स्यात्पुण्यं चतुष्पादे षड् भवत् ।  
पचमे दिन पचव षष्ठं च तृयहा भुवि ॥  
सप्तमे च तृतीय स्यादष्टे पुस्यहोगात्रिवम् ।  
नवमे च दिनार्धे स्यादशमं स्नानमात्रत ॥

भाषा—मरण का सूतक तीसरी पीढ़ी तक तथा स्नान का होता है पश्चात् चौथी पीढ़ी म ६ दिन का, पाचवीं पीढ़ी म ५ दिन का, छठवीं पीढ़ी म ४ दिन का, सातवीं पाढ़ी म ३ दिन का, आठवा पीढ़ी म १ दिन का

शत्रि का, नदी पीड़ा म नो प्रहर का और श्मशान पीड़ी में स्नान मान से शुद्ध हो जाता है।

मातामहो मातुलब्ध, म्रियते चाऽथ ततस्त्वय ।

दौहित्रो भागिनेयश्च पित्रोश्च म्रियते स्वसा ॥

स्वगृहे गृहमागौच गृहगृहो न सूतकम् ।

भाषा—नाना, नानी, मामा, मामी, पुत्री का दाइका, भानजा, मौसी, पुत्रा ये यदि अपने घर पर मरें तो २ दिन का सूतक होता है। अपने गृह से बाहर सूतक नहीं।

कन्याया मरणे चैव विवाहा प्राग्दिनत्रयम् ।

ऊढाना मरणे भर्तुं पूर्णं पक्षस्य चोदितम् ॥

भाषा—कन्या के मरण का सूतक ३ दिन का, और विवाही हुई कन्या अपने घर मर तो माता, पिता, भाइयों से ३ दिन का और समुदाय-वाला को १० दिन का सूतक होता है।

स्वमुगृहे मृतो भ्राता भ्रातुर्याय गृहे स्वसा ।

अशौच त्रिदिनं तत्र सूतकं न परत्र तु ॥

भाषा—यदि न के घर भाई, या भाई के घर यदि न मरण हो तो दोनों के लिये तीन दिन का सूतक होता है। और यदि इनका प्रत्यक्ष मरण हो तो सूतक नहीं होता।

सत्ताना सूतकं हत्या पापं पणमासकं भवेत् ।

अन्यासामासम् हत्याना प्रायश्चित्तं विधानतः ॥

भाषा—अपने को अग्नि में जला लिये पणमासकी होने के पाप का सूतक छ मास का होता है। और अन्यान्य हत्याओं का सूतक प्रायश्चित्त-प्रयोग से जानकर शुद्ध करे।

गर्भिन्या मरणे प्राप्ते नैमिच्यादिमरणे ।

सर्वैव दहनं कुर्याद् गभच्छेदं न कारयत् ॥

भाषा—यदि गर्भिणी स्त्री का मरण रोगात्मिक किसी भी कारण से



प्रव्रजिते मृते काले दशान्तरे मृते रणे ।

सन्यासे मरणे चैव दिनेक सूतर भवेत् ॥

भावार्थ—जा रह्यागी दाजित हुआ हो, गृह्य जुलक पद ग्रहण किया हो, अथवा मुनि हुआ हो, अथवा दशान्तर म मरण हो, अथवा सग्राम म वा सन्यास म मरण हो तो एक दिन का सूतर होता है ।

मते क्षणेन शुद्धि व्रतसहिते चैव सागारे ।

भावार्थ—सग्राम, जल, अग्नि, पराश्र, मालमन्यास इनमें यदि व्रती गारक का मरण हो जाय तो तत्काल शुद्धि हाती है ।

व्रतीना दीक्षिताना च याश्चिन्नब्रह्मचारिणाम् ।

नैयाशांच भवेत्तेषा पितुश्च मरणे विना ॥

भावार्थ—व्रती, दीक्षित, याज्ञिक अथ ब्रह्मचारी इनका चिरं पिता माता के मरण के मरण और किसी का सूतर नहा गेता ।

जिनाभिपेकपूजाभ्या पात्रदानेन शुद्धयति ।

भावार्थ—सूतर निवृत्ति शन के गार् तिनद्र अभिषेक, पूजन और पात्रदान कर शुद्धि हाती है ।

इति सूतरविधान



## सन्निवृत्त प्रायश्चित्त सग्रह

रामान समान मी १०० मन्त्राव व अन्तः प्रायश्चित्त मन का एकान्तता ही रूप हो गता है। प्रायश्चित्त मन १ दुःखदय पान तथा शुद्ध होने के लिये प्राप्त है। पन्नु रामान प्रायश्चित्त मन ली पान हा नास होना है और न पुद्धि ही होनी आनु १०००० और अनन्त पन्नों मन्त्रों कृतान की मात्रा १००००० मन्त्राव ली व पान १००००० हा शक्ति है।

इसी हनु मी १००००० मन्त्राव प्रायश्चित्तों का सम्पत्ति है। अथा है कि येन सात्त्विक मन्त्राव प्रायश्चित्तों की प्रथा का लोडकर इस दो शक्तोठ प्रायश्चित्तों १०००००० प्रपुण्य हा प्रायश्चित्त मन म प्रचार करती, किन्तु हा और अनन्त उभय प्रायश्चित्त हा शक्ति है।

प्रायश्चित्त गुणि मन्त्राव पापनाशन भवति ।

—वेदविष्णु

भाष्य—पुद्धि का शक्ति, मन का हूँ शक्ति, व पान का नास होना प्रायश्चित्त है।

### प्रायश्चित्त का प्रमाण

यत् धर्मज्ञाना भवितु प्रायश्चित्तं अग्नि धावकानामग्निः ।

उया प्रयाजा पापा अर्थाधिमेण क्षतज्यम् ॥

—वेदविष्णु

भाष्य—य नृत्तों का प्रायश्चित्त नष्टा गता है १००००० आधा उभय प्रायश्चित्तों का शक्ति पर्यन्त तथा उभय आधा मन्त्राव भावनों का, और मन्त्राव भावनों के आधा मन्त्राव भावनों का शक्ति नष्टा है। यहाँ ये प्रायश्चित्तों प्रमाण १०००००० हा है व पुद्धि की शक्ति म है। अथा १०००००० और मन्त्राव का उभय किन्तु पुण्य मन्त्राव व ली शक्ति है।

## त्रतों में दोष का प्रायश्चित्त

पष्ठमनुजतघातं गुणव्रतशिद्धान्तस्य तु उपवासः ।  
दर्शनाचारातिचारे जिनपूजा भवति निदिष्टा ॥

—ब्रह्मविष्णु

भाष्य—अगुणव्रत, गुणव्रत और शिद्धानता क घात होनेपर उपवास  
करे। तथा दर्शनाचारादि में दोष लगने पर जिनेन्द्र भगवान् की पूजा  
करना ही दृष्ट है।

## पच महापातकों के प्रायश्चित्त

पण्णा सञ्छावकाणा तु पचपातकसन्निधौ ।  
महामहो जिनेन्द्राणा विशेषेण विशेषणम् ॥  
आदावन्ते च पष्ठ स्यात् प्रमणान्येकविंशति ।  
प्रमादाद्दोषधे शुद्धि क्तव्या शक्यवज्जितै ॥  
द्विगुण द्विगुण तस्मात् स्त्रीवालपुरुषे इत ।  
सदृष्टिप्रायकपाणा द्विगुण द्विगुण तत ॥

—प्रायश्चित्तचूडिका

भाष्य—छह प्रकार के जिन्य भातकों को पचमहापातक दोष लगने  
पर गो, स्त्री, शलक, आरक, श्रुति, जना वध हो जाने पर भी जिनेन्द्र  
भगवान् की पूजा करनी विशेष रूप से प्रायश्चित्त है। निश्चय होकर  
प्रमाद और क्लेशपूर्वक यदि मांस का ग्रह हो जाय तो प्रमणो (यतिगो)  
को श्रादि अतः म पडापवास तथा मध्य म २१ उपवास करना चाहिये।  
इसी प्रकार गो वध से टूना स्त्री वध से अथात् स्त्री वध से ४२, शलक-वध  
से ८४, सामान्य मनुष्य वध से १६८, सम्पत्त्याह्न शलक वध से ३९६ और  
श्रुति वध से ६७२ उपवास यतिगो को करना चाहिये। यहाँ पडापवास का  
मतलब यह है कि धारणा और पारणा क दिन ११ वर भोजन करने से  
दो वर भोजन त्याग हुआ, तथा बीच में १ बेला का ४ वर भोजन  
त्याग हुआ, इस प्रकार ६ वर भोजन त्याग को पडापवास कहते हैं।

तृणमासात्पतत्सर्पपरिसपजलीकसाम् ।  
चतुर्दश नवाद्यतक्षमणानि वधे छिदा ॥

—प्रायश्चित्तचूल्िका

भारथ—मृग, शशक, रोधप्राणि तृणचर जीवों के वध का १८ उपवास, सिंहदि मासमातृया के वध का १३ उपवास, गित्तर मडूर, कुक्कुट, पायसताणि पाक्षया के वध का १२ उपवास, सपगानसादि के वध का ११ उपवास, गाधरेण वृस्लासाण पारसप के वध का १० उपवास, और मकर मस्याण जलचर जीवों के वध का ६ उपवास का प्रायश्चित्त है ।

गभस्य पातने पापे प्रोपधा द्वादश स्मृता ।

भारथ—गभपात के पतन करों के पाप का १२ उपवास प्रायश्चित्त है ।

सुतामातृभगियादिच्याडालीरभिगम्य च ।

अशुतोतोपचासाना द्वात्रिंशत् मसमयम् ॥

—प्रायश्चित्तचूल्िका

भारथ—पुनी, माता, सहन, आदि तथा चाडाली इनके साथ गयाग रुग्नेगले गत का २० उपवास करना चाहिये ।

मद्य मास मधु स्वप्ने मेधुन वा निषेवने ।

उपवासद्वय जुयात् सहस्रैक जपोत्तमम् ॥

—प्रायश्चित्तचूल्िका

भारथ—यदि स्वप्न में मद्य, मास, मधु इनका व मेधुन का सेवन किया हो तो दो उपवास और एक हजार जाप्य करे ।

रेतोमूत्रपुरीपाणि मद्यमासमधुनि च ।

अभक्ष्य भक्षयेत् पठ्य दर्पतश्चेष्टिपट्ट क्षमा ॥

—प्रायश्चित्तचूल्िका

भारथ—अमात्रया यदि रत, मूत्र, मल, मद्य, मास, मधु, अभक्ष्य, गाधरे, धास्य, चम, अजानपने खाने में प्रागरा हो तो छह उपवास का प्रायश्चित्त करे । और शत्रु उक्त पापय प्रह्वकारूपक संन किय हा ता १२ उपवास का प्रायश्चित्त करे ।

पचोदुम्बरादीन् भक्षयति देशव्रती यदि प्रमाददर्पाभ्याम् ।  
तद्दि तस्य भवतिच्छेद द्वा उपवासौ त्रिरात्रिद्विकम् ॥

—छेदविण्ड

भावार्थ—श्रमती ने यदि अज्ञानपूर्वक पाच उदुम्बर फलों का सेवन कर लिया है तो दो उपवास का प्रायश्चित्त ग्रहण करे। और यदि अहकार पूर्वक सेवन किया हो तो ते तिन और तान रात्र का उपवास कर प्रायश्चित्त ग्रहण करे।

कारुण्यगृहानपानाङ्गनास्तु भुङ्क्ते सुपट् चतुर्थानि ।  
कारुण्यपात्रेषु पुन भुङ्क्ते पञ्च उपवास ॥

—द्विद्विण्ड

भावार्थ—कारुण्य, रत्न, उरुणादि वं गृह म भोजन पान करने से श्रम उपवास का प्रायश्चित्त ग्रहण करे। और यदि उनके पानो म भोजन किया हो तो पाच उपवास का प्रायश्चित्त ग्रहण करे।

चाण्डाल अन्नपान मुङ्क्ते षोडशा भवति उपवासा ।  
चाण्डालाना पात्रे भुङ्क्ते श्रष्टैव उपवासा ॥

—छेदविण्ड

भावार्थ—चाण्डाल के अन्नपान का भोजन करने से सोलह उपवास का प्रायश्चित्त ग्रहण करे। और यदि उसने पात्रो म भोजन किया हो तो छ उपवास का प्रायश्चित्त ग्रहण करे।

अज्ञानाद्वा प्रमादाद्वा विकल्पयधिघातने ।  
प्रोषधा द्वि त्रि चत्वारो जपमालस्तथैव च ॥

—प्रायश्चित्त

भावार्थ—अज्ञान एव प्रमाण से यदि दोहन्द्रिय तेहन्द्रिय, और चार इन्द्रिय जावों का विनाश हो जाय तो क्रमसे दो उपवास, तीन उपवास, और चार उपवास का प्रायश्चित्त ग्रहण करे। तथा द्वा, तीन और चार जाप्य करे।

## प्रायश्चित्त-समाप्ति के बाद श्रावण का र्चव्य

त्रिसंध्य नियमस्यात्ते, कुर्यात्प्राणशतत्रयम् ।

राशौ च प्रतिमा तिष्ठेज्जितेन्द्रियसहति ॥

भाष्य—तानां समान सामायिकं चरे । तीन ही उच्छ्वास प्रमाण सत्योत्सर्ग च । शरीर इन्द्रियो को वश में करता हुआ रात्रि में भी प्रतिमा रूप तिष्ठकर कायात्मक करे ।

कृत्वा पूजा जिनेन्द्राणां, स्नपनं ते न च स्त्रयम् ।

स्नात्योपध्वज्यमराध च दानं देयं चतुर्विधम् ॥

भाष्य—पश्चात् स्नानात् न पापत्र होकर श्री जिनेन्द्र भगवान् का अभिषेक व पूजन करे । श्री गुरुनिर्गों का धर्मोपकरण तथा श्रावणों को चार प्रकार का यथायोग्य दान देवे ।

इत्येवमल्पशं प्रोक्तं प्रायश्चित्तविधिस्फुटम् ।

अथो विस्तारतो ज्ञेयं शास्त्रेष्वन्येषु भूरिषु ॥

भाष्य—इस प्रकार यह थोड़ी सी प्रायश्चित्त विधि बताई गई है । यदि विस्तार से जानना हो तो प्रायश्चित्तशास्त्रों से जाने ।

विशेष—निस मनुष्य या छा में अपराध हो जाय मान उन्हींको ही प्रायश्चित्त लेना चाहिये । अन्य मनुष्य तथा कुटुम्ब के जन अपराधी नहीं होते ।

इति प्रायश्चित्त विधि

## कायोत्सर्ग विधि

अथारम्भे समाप्ते च स्वाध्याय स्तयनादिषु ।

सप्तविंशतिरुच्छ्वास कायोत्सर्ग मता इह ॥

भाष्य—अथारम्भ के आदि म ३ अन्त म, तथा स्वाध्याय में, स्तयन में, १७ श्वासाच्छ्वास प्रमाण कायोत्सर्ग करे ।

अष्टाविंशतिमूलेषु द्विनस्य मलशुद्धय ।

अष्टाप्रशतमुच्छ्वास निशायामपि तद्वलम् ॥

भाष्य—अष्टादश मूलगुणों में अथवा कर्ता में अतीचार लगन पर १०८ श्वासाच्छ्वास प्रमाण कायोत्सर्ग करे । यदि दिन में कोई दोष लग गया हो तो भा १०८ बार प्रमाण श्वासाच्छ्वास के कायोत्सर्ग करे । और रात्रि में कोई दोष लग जाय तो ५४ श्वासाच्छ्वास प्रमाण कायोत्सर्ग करे ।

पाक्षिक त्रिंशत श्लेष चतुर्मासिसमुद्भवे ।

चतु शत शत पच सावत्सरे यथागमम् ॥

भाष्य—जहाँ १३ दिन में कोई दोष लग गया हो तो ३०० श्वासाच्छ्वास प्रमाण कायोत्सर्ग करे । और यदि ४ मास में कोई दोष लग गया हो तो ३०० श्वासाच्छ्वास प्रमाण कायोत्सर्ग करे ।

पचविंशतिरुच्छ्वास भोजने जिनवदनाम् ।

गते मखे निपद्याणा पुरीपादिविसर्जनम् ॥

भाष्य—भोजन की जाते समय मास में कोई दोष लग जाय या गुदबन्धों की कटना से जाते समय कोई दोष लग जाय अथवा स्थान तजो समय, मन, भूत्र, नाक, श्लेष्म छोड़ते समय नाह दाप या जाय तो २५ श्वासाच्छ्वास प्रमाण कायोत्सर्ग करे । ( आचारस्मर त उद्धृत ) ।

इति कायोत्सर्ग विधि

## सामायिक विधि

समता सर्वभूतेषु सयमे शुभभाचना ।

आर्तरीड्रपरित्यागस्तद्धि सामायिक मतम् ॥

भावार्थ—समस्त सजीव जीवों में समता भाव करना, समय क पालन करने की भावना करना, और आर्त रीड्रधान का त्याग करना ही सामायिक विधि है ।

### सामायिक शब्द की निरुक्ति ( भाव )

१—सम ( एकरूप ) आद्य ( आगमन ) अथात् परब्रह्मा न निवृत्त हाकर आत्मा में उपयोग की प्रवृत्ति होना ।

२—सम (सगद्वयगहन) आन (उपवाग का प्रवृत्त) अथात् गग द्रव्य पारणति का अभाव होकर साम्य रूप परिणत का होना ही सामायिक है ।

पवित्रवस्त्र सुपवित्रवेशे, सामायिक मानयुतश्च कुर्यात् ।

अथात्—पवित्र वस्त्र पहिनकर, पावन स्थान में बैठकर मौनपूर्वक सामायिक प्रारम्भ करे ।

### सामायिकोपयोगी आरश्यक नियम

सामायिक करने क पहले अष्टशुद्धियां पर ध्यान देना जरूरी है । कर्माणि राक्ष काग्णा की यथायोग्यता पर विचार न किया जाय ता सामायिक का यथार्थ रूप प्राप्त होने में सके रहता है ।

#### अष्टशुद्धियाँ

१—द्वय (पात्र) शुद्धि—पंचेन्द्रिय तथा मन को कशकर अन्तरंग कयानों से निरालकर और राक्ष पाण्डों का त्याग कर पदसाध के तायों की

शिक्षा त्याग दी एम उत्तम पात्र तो सयमा साधु है और अन्धाधी सयमी भावक सामान्य पात्र है।

२—क्षय ( स्थान ) शुद्धि—जहाँ क्लृप्तलागि शब्द मुनाइ न पद तथा जहाँ जग, मच्छर आदि नाभक जन्तु न हा। चित्त में द्यौम उपद्रव कर्मजाले उपद्रव एव शीत दध्ण आदि की नाधान हो, एमा एमन्त निज्जन स्थान सामायिक क योग्य है।

३—काष्ठशुद्धि—प्रभात, मध्याह्न और सन्त ममय, उत्कृष्ट ६ घड़ी, मध्यम ८ घड़ी, और जधन्य २ घड़ी तक सामायिक करे।

४—धामनशुद्धि—काष्ठ, शिला, मूमि, ग्रेत, या शीतल पत्ती पर पून शिक्षा या उत्तर की आर मुख करके पद्मासन, रत्नासन या अधपद्मासन, बाहर ज्ञेन तथा काल का प्रमाण करके मान ग्रहणकर सामायिक पाठ प्रारम्भ करे।

५—विनयशुद्धि—आसन को कामल घन्ट या बुहारी से बुहारकर श्यापथ शुद्धिपूर्वक सामायिक प्रारम्भ करे।

६—मनशुद्धि—शुद्ध विचारों की तरफ उपशोग रखना।

७—वचन शुद्धि—धीरे धीरे साम्यमान पूर्वक मधुर स्वर से पाठ उच्चारण करना।

८—कायशुद्धि—शौच आदिक शक्योंसे निवृत्त होकर यज्ञाचारपूर्वक शरीर शुद्ध करके हलन चलन क्रिया रहित सामायिक प्रारम्भ करना।

### सामायिक के पाँच अतीचार

१—२—३—मन, वचन, काय को अशुभ प्रवृत्ताना।

४—सामायिक करने में अनादर करना।

५—सामायिक का समय ब पाठ भूल जाना।

उक्त आठ शुद्धियाँ पर ध्यान दते हुए पाँच अतीचारों का बचाकर सामायिक प्रारम्भ करे।



### मन्त्रोच्चारण

सामायिक करने समय समोकर मन्त्र को ३ श्वासेच्छ्वासमें १ बार पठना चाहिये । १०८ बार मन्त्र ३ जाप्य में ३२४ श्वासेच्छ्वास होंगे ।

आसन पर स्वदा हाकर पूज शिवा की ओर मुँह करके 'अह समस्त सावधयागविरस्तामि' एता कहकर ६ उक्त अथवा ३ वक्त नमस्कार मन्त्र बपकर निगलितारत मन्त्र पढ़कर ३ आसन और एक शिरानति कर ।

(?) आगत—नेना हाथ जोड़ सों से गहिने तरफ तुमान वा आगत कहने हैं ।

(२) शिरानति—तीन आसन करके एक बार शिर नगर नमस्कार करना ।

### नमस्कार करने का मन्त्र

प्राग्दिग्धिगन्तरत केरलिजिनसिद्धसाधुगणदवा ।

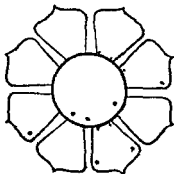
ये सवद्धिसमृद्धा योगीशास्तानह वदे ॥

यह मन्त्र पूज शिवा का है । चार शिवाओं के लिये उक्त मन्त्र आदि के 'प्राग्दिग्' के स्थान में 'द्विदिग्धि' तथा तरह 'पश्चिमदिग्धि' और उत्तर में 'उत्तरदिग्धि' पाठ करने पर चार शिवाओं में पढ़ता हुआ नमस्कार करे ।

इस प्रकार चारों शिवाओं में ३६ बार मन्त्र १२ आगत, और ६ नमस्कार कर पश्चात्नादि आसनमाह प्रथम सामायिक पाठ सम्पन्न ( भाषा ) पढ़े । पश्चात् तरह भावना, वैराग्य भावना आदि बहुत धाम धीम उस पाठ का भाव समझते हुए पढ़े । फिर नमस्कार मन्त्र का १०८ बार जाप्य करे । जाप्य शुरू करने के पहले 'आ हीं सम्यग्दानज्ञानचरित्रमयो नम ।' इससे पढ़ लें । और इसी प्रकार जाप्य के अंत में भी पढ़े ।

### जाप्य की विधियाँ तीन हैं

(१) प्रथम कमल जाप्यनिधि—अपनी हृदय में आठ पाखुरी के एक शंभु कमल का विचार करे। उसकी हरेक पाखुरी पर पीतवर्ण का गारु गरुड चिह्न का कल्पना करे। तथा मध्य के गोल वृत्ति में १२ बिन्दुओं का विचार करे। इन १०८ बिन्दुओं में प्रत्येक बिन्दु पर एक एक मन्त्र का जाप्य करता हुआ १०८ बिन्दुओं पर १०८ जाप्य जपे। कमल श्रुति निम्न प्रकार है —



(२) हस्तांगुलि जाप्य—हाथ की प्रत्येक अंगुली में २३ पोरवे होते हैं। इन प्रकार एक हाथ की चारों अंगुलियों में १२ पोरवे कुल होते हैं। दाहिने हाथ के प्रत्येक पोरवे पर एक एक गारु नमस्कार मन्त्र जपे, इस प्रकार दाहिने हाथ ४ चारों अंगुलियों के १२ पोरवे पर १२ मन्त्र हुए। १२ मन्त्र हो जाने पर चाहे हाथ के प्रथम अंगुली के प्रथम पोरवे पर अंगुली रत्ने इस प्रकार ६ गारु में १०८ गारु मन्त्र जाप्य हो जायेगा।

(३) माला जाप्य—१०८ जपने की माला वृत्त की बनाने उसके द्वारा जाप्य करे।

इस प्रकार किसी प्रकार से जाप्य पूरा करके कोई स्तुति पाठ वगैरह पढ़ने का अवकाश हो तो पढ़े। यदि पहले की तरह सड़ा होकर चारों दिशाओं में ६१६ गारु नमस्कार मन्त्र जपे और तीन तीन आर्त तथा पून क्त मन्त्र पढ़कर चारों दिशाओं में ६ नमस्कार जाप्य पूरा करे।

तत समुत्थाय जिनेन्द्रविम्ब पश्येत्परमगलदानदक्षम् ।  
पापप्रणाश परपुण्यहेतु सुरासुरैः सेवितपादपद्मम् ॥

भावार्थ—नामाधिक त उच्चर वैश्यालान म चक्र सत्र तद्व के भगल करनेवाले, पापों को क्षय करनेवाले, सानिश्चय पुण्य में कारण और सुर तथा असुरों द्वारा स्तनीय ऐसे श्रीमज्जिनेन्द्र भगवान् के स्तन करे ।

### सामायिक से लाभ

सामायिक करने के समय क्षत्र तथा काल का प्रमाण कर समस्त क्षत्र्य योगों का ( गृह उपायदि पापयोगों का ) त्याग करने से सामायिक करनेवाले गृहस्थ के सत्र प्रकार के पापात्रय करने सातिशय पुण्य का ग्रह होता है, उस समय उपलभ्य म औद्धृष्ट कपड़ा युक्त होनेपर भी मनि के समान छाना है । विशेष क्या कहा जाय—अभय भी अन्य सामायिक के प्रभाव से ननुभैवेयक पर्यन्त जाकर अग्निन्द्र हो मजता है । सामायिक को भासृयक धारण करने से शान्ति मुक्त की प्राप्ति होती है, यह आम तत्त्व ही प्राप्त परमात्मा होने के निचे मूलकारण है । इसरी पूण्यता ही नीच को निरुक्त अवस्था प्राप्त कराती है ।

### जाप्य में १०८ दाने होने का कारण

१ ममरभ, २ समारभ, ३ आरभ, इन तीनों का मन, वचन, कर्म, इन तीनों से गुणा क्रिया तो ६ भेद हुए । इन ६ को कृत, वाग्नि, अनुमाना इन तीनों से गुणा क्रिया तो १७ भेद हुए । इन १७ भेदों को क्रोध, मान, माया, लोभ, इन चार कषायों से गुणा तो १०८ भेद हुए । १०८ भेद ही पापाश्रय के कारण हैं, इनके द्वारा ही पापाश्रय होता है अतः इनका नष्ट करने हेतु १०८ दान जाप्य क्रिया जाता है ।

### इति सामायिक विधि

## मेरी भावना

भावना दिन रात मेरी सर मुग्री ससार हो ।  
 मिथ्यात्व राग विद्वेष का नित आत्म से सहार हो ॥  
 न्यायमार्ग में जगत निर्भीकता से रक्त हो ।  
 ज्ञान अरु चार्ित्र उन्नति में सदा आसक्त हो ॥  
 चीरवाणी पर सभी ससार का विश्वास हो ।  
 जिनधर्म के माहात्म्य से प्रत्येक का स्वविकास हो ॥  
 रोग भय दुर्भिक्षका जग से सदा परिहार हो ।  
 मोह मद मात्सर्य नश अति प्रेम का सचार हो ॥  
 शांति अरु आनन्द का हर एक घर में वास हो ।  
 मैत्री प्रमोद माध्यस्थ करुणा नित्य इन सुविचार हो ॥  
 रूढ़ियों जो व्याप्त हैं उनका सदा नहार हो ।  
 अकलरुम हों चीर 'धारे' जगत का उद्धार हो ॥



## इष्ट कामना

धमा जैनोऽपवित्रो प्रभवतु भुवने सर्वदा शर्मदायी,  
शान्तिं प्राप्नोतु लोको धरणिमवनिपा न्यायत पालयन्तु ।  
हत्या कमारिचर्म यमनियमशरं साधवो यातु सिद्धि,  
विष्यस्ताशुद्धयोधा निजहितनिरता जतव सन्तु सर्वे ॥

भाषा—जगत म निरन्तर भुवने न्यायत पालयन्तु हो  
लोगों में शान्ति रहे, राजा लोग न्याय से पृथ्वी का पालन करें, साधुजन  
यम नियम रूपा प्राणों में कर्म शत्रुओं को नष्ट कर सिद्धि को प्राप्त हों,  
और समस्त प्राणी का मिथ्याशान का नाश कर अपने हित में तप्य रहें ।

यद् ग्रंथं चिरकालतक वर्तमान रह' ।

याचत्सागरयोषितो जलनिधि शिल्पन्ति वीचीभुनै-  
भर्तारि मुपयोधरा वृतरवा मानवेषु वाङ्मना ।  
तावत्तिष्ठतु शास्त्रमेतदनघ क्षाण्णले कोविदे  
प्रत्त शास्त्रविचारपरनुदिन यारययमान मुदा ॥

भाषा—जब तक पृथ्वी पर कर्म-प्राण-वर्तमान रहें तब तक  
रूपी प्राणों में समुद्र रूपी भाग को आलोक्य करी रहें, तब तक चारित्र्य  
शास्त्र ( चरानुभव ) के पता मिलना इष्ट भवना के साथ व्याख्यान  
होता हुआ वह वा विधान-सप्तद्व प्रथम पं. सप्तद्व ।



## जमा-याचना

यत्पुनरुक्तमयुक्तं दुःखमिह तद्विशोधितं युक्तम् ।  
 यद्वाञ्छलितेति मयाऽभ्यर्थ्यन्ते सकलगीतार्था ॥

मानाथ—इमं प्रथमं मने पुरातनं यत्तु वा दुःखं कदा हो तेषु  
 उसको समस्त ज्ञानी पुरुष शुद्ध कर ल, ऐसी हाथ जाइ प्रार्थना है ।

## अन्तिम मंगल-कामना

मंगल लेखकाना च पाठकाना च मंगलम् ।  
 मंगल साधय सतु भूमौ भूपतिमंगलम् ॥

ॐ शान्ति ! शान्ति ॥ शान्ति ॥

## वारह भावना

### १ अनित्य भावना

ससार में सुत सुता सजनी सजन अरु सीमन्तिना ।  
गो गेह गज तास्य तन, सम्पत्ति सकट टालिना ॥  
सब चबला चपला सदृश, अस्थिर यही निश्चय करो ।  
मोहित न होकर के इहामें स्वात्म हित साधन करो ॥

### २ अशरण भावना

सुर असुर सुरपति नृपति खगपति वैद्य निर्धन अरु यनी ।  
विद्वान् मूरख सुभग दुर्भग गुणी अथवा अगुणी ॥  
ससार में कोई मरण से है बचा सकता नहीं ।  
चाहे करे वे मन औपधि तत्र जितन हों सभी ॥

### ३ ससार भावना

सुर नर नरक तिर्यच गति में जाय दुस्सह दुख सहै ।  
कर पच परिवर्तन तथा नित कम से पादित रहे ॥  
नि सार यह ससार सबधिध सार कुड़ भी है नहा ।  
भूले हुए हो व्यय क्यों इसमें न मुख साता यही ॥

### ४ एकत्व भावना

प्राणी शुभाशुभ कर्मफल सहता अकेला आप है ।  
साता असाता घाँट सकता नहीं कोई आप है ॥  
माता पिता सुत सुता सजनी सजन पति पत्नी सभी ।  
हैं स्वार्थ के साथी सभा नहि दुख के साथी कभी ॥

## ५ अन्वय भावना

प्राणी तथा पुद्गल परस्पर में सदा से ही मिले ।  
पर ही पृथक् क पृथक् दोनों नीर पय ज्या हों मिले ॥  
अतएव जग ससार में तन भी तुम्हारा है नहीं ।  
तो धन तथा परिजन तुम्हारे फहो हो सकते फहीं ॥

## ६ अशुचि भावना

जा पल रुधिर मल राध अथवा कीरशक्ति से भरी ।  
ससार में जिससे सदा ही अशुचिता फेले गरी ॥  
जो सदा नय माग से नित मल बहाता हा रहे ।  
पेसी अपायन दह को हे जीव तू क्या कर चहे ॥

## ७ यासव भावना

मन वचन तन प्रय योग द्वारा कम जल नित आ रहा ।  
नर देह नौका से तुम्हें जग जलधि बीच दूरो रहा ॥  
जिससे तुम्हें या पार होना दूर उसमें हो रहे ।  
साचो जरा जग जलधि में नौका न जिससे बर रहे ॥

## ८ सरर भावना

अय गुति पच समिति परीपह ओर चारित से सभी ।  
रोक दा मन काय वच से छिद्र नौका क अभी ॥  
छोभित न हो करके तुम्हारी नाव तिरने के लिये ।  
जिससे समर्थ बने तुम्ह भवपार करने के लिये ॥



## ६ निर्जरा भावना

पूर्व का संचित किया जो कर्मरूपी नीर है ।  
निससे तुम्हारी नाय देखो डूबने में लीन है ॥  
लेकर विशाल कपाल कर में अब उलीचो वह सभी ।  
ससार सागर पार नौका यह तुम्हारी हो तभी ॥

## १० लोक भावना

नभ में चतुर्दश राजु परमित एक लोकाकाश है ।  
इ स्वयं सिद्ध अनादि से कर्त्ता न हर्त्ता खास है ॥  
धर म्याग नाना भाति इसमें जीव सहता प्राप्त है ।  
इसके उपरि अष्टम धरा हा सिद्ध सुर्य की राशि है ॥

## ११ र्म भावना

स्व-स्वभाव ही तो आत्मा का श्रेष्ठ सुंदर धर्म है ।  
श्रीपाधि भावों को कराता आत्मा से कर्म है ॥  
तज कर्म कारण जीव स्व स्वभाव में ही लीन हो ।  
तजकर समस्त विभाग निज सुख में सदा लवलीन हो ॥

## १२ बोध दुर्लभ

दुर्लभ्य नित्य निगोद से व्यवहार में है आवता ।  
दुर्लभ्य अस पर्याय से है कठिन नरत्न पावता ॥  
दुर्लभ्य श्री जिनधर्म से भी बोध दुर्लभ पावना ।  
अतएव ! आत्म हित करो भी नित्य चारह भावना ॥

## ग्रन्थकर्ताका परिचय

### चौपार

जम्बूद्वीप द्वीपन में सार, योवन लाख तना विस्तार ।  
 ताकी दक्षिण दिशा अनूप, भरत क्षेत्र सोहे जिमि नूप ॥  
 आर्यखण्ड है तामें सार, असि मसि आदिक छह आचार ।  
 तामें रण्ड बुन्देल प्रधान, राज्य भारद्वा बति मुखदान ॥  
 रजधानी टीकमगढ़ साथ, 'वीरसिंह' भूपति वर होय ।  
 पूरव दिशि प्रय मील प्रमाण, अतिशय क्षेत्र परांरा जान ॥  
 तहूँ से द्वादश माल मनोग, अतिशय क्षेत्र अद्धार सुयोग ।  
 ताके बीच मनोहर धाम, पट्टा ग्राम शोभे अभिराम ॥  
 धर्मचन्त आयक निवसत, प्रय जिन भवन महा विलमत ।  
 गोलापूर्य जातिवर सार, पाण्डेलीय गोत्र अचतार ॥  
 सिंघई बखत तसु पुन गुलाब, वैद्यक विद्या में निष्णात ।  
 तिनके चार पुत्र मुखदाय, भगवनदास द्वितीय षडाय ॥

वैद्यक ज्योतिष शास्त्र प्रवीण, वैद्यरत्न पद्म शुभ लीन ।  
 तिनके हुए तान पर तान, तिनम ज्येष्ठ सु पारलाल ॥  
 ज्यातिष वैद्यक मत्र रु तत्र, प्राणप्रतिष्ठा विद्व रु यत्र ।  
 गायन पिपा में सु प्रवीण, व्यापक धर्म विरें नरनाते ॥  
 धी स्यादाददिगम्बर जैन, कियो औषधालय सुवर्द्धन ।  
 बहु देशनरं रागी आय, लहि आराग्य सु निज घर नाहि ॥  
 उपभोगांतराय बस याग, सुन्दरुखाइ मिल्या नियाग ।  
 जिलयान धर्मिष्ठ मुवान, गेह-भाय में कुशल महान ॥  
 मुताचार अरु भाट सुनद, डाक्टर श्री कपूर् 'तुचन्द्र ।  
 पारलाल' माह 'द्रुमार', चौथे धी 'राजे द्रुमार ॥  
 जयकुमार 'वधद्रुमार' जीर्ण द्र 'सुरद्रुमार ।  
 मुता शान्ति 'कहूरा' जान, धम्पा 'कमला' वाइ मान ॥  
 नैन विधान प्रागन फुसार, तिन निमित्त रचियो मुखकार ।  
 ज नवि मन यत्र उर आररं, न नर मुक्ति कानिनी बरें ॥  
 हाय जगत् उपकार नहात, यदा भायना धर राव गन ।  
 मद् पुदि यम पुटि जा हाय, सुमा कर सा भविजन नय ॥

श्रीश्री

सयत धार चौबोसु नत, अधिक बहुर जान । २००८  
 दापमालिका के दिघस पूर्य प्रय बतान ॥



इसके पूर्व के सभी सूचापत्र रद्द किए गए

संस्थापित सन् १८५३

# सूची-पत्र

इंडस्ट्रियट नार्ड, म्यूनिसिपल वार्ड, राजस्व व नार्चनलिक धर्मार्थ  
औपधालयो, डाक्टरों व वैद्यों के लिए एकमात्र निरस्त स्थान

## श्री स्याद्वाद जैन औपधालय

पठा, शाखा-कटरा बाजार,  
टीकमगढ़ (वि. प्र)

संचालक—

चिन्मिस्त्र चूड़ामणि राजवैद्य, स्यादिवरस  
प० बारेलाल कपूरचन्द्र जैन प्रायुर्वेदाचार्य  
कै० प्र० एम० एस०

रजिस्टर्ड न० २०३ ए एमएस (I. M. B) U P

१ जनवरी १९५२

## एजेन्सी-नियम

१—बोर्ड की विन्याया या त्रैश कमीशन फाटकर कम से कम ३०) (ने) की आवाधनों प्रथम पर लगा, वही एजन्ट स्वाहृत होगा।

२—एजन्सी क लरे १०) रुपया रक्षाधन जमा करना आवश्यक होगा। जो एजन्टा क रन्द १० जाने पर वापस कर दिया जायगा।

३—औपधियाँ नरद मूल्य से अथवा धी० पा० द्वारा ही भेजी जायेंगी।

४—मैगाइ ए औपधियाँ यदि तीन मास तक एजन्ट से न निक सकें तो ऐसी औपधियाँ नि जिनका पकिंग यथाविधि ठीक हो उह वापिस कर उनसे स्थान में अन्य औपधियाँ मैगा सकते हैं।

### एजेन्सी कमीशन और सुविधा

१—हमारे औपधालय का आश्रित औपधियों पर ५% प्रतिशत तथा हमारे औपधालय द्वारा केवल निमापित आधुनिक औपधियाँ पर १२॥% प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा।

२—एक साथ ३०) रुपया का माल मैंगाने पर पकिंग व रचने तथा १००) रुपया का माल मैंगाने पर मालगाड़ी का किराया प्री रहेगा। पारसल गाड़ी से मैंगाने पर आधा किराया तथा पोस्ट पारसल से माल मैंगाने पर पूरा किराया माइक मो हा देना होगा।

३—एजन्ट बन जाने पर कम से कम ५) रुपया के आडर पर भी उपर्युक्त हिसाब से अरार कमीशन मिलता रहेगा।

४—औपधियाँ तीन तथा चार आदि पूरा रूप से देकर भेजी जाती हैं। रास्ते की कमी व टूट फूट का जिम्मेवार औपधालय नहीं होगा।

५—प्रचेर कानूनी मायनाहा 'दीनमगढ़ न्यायालय' में ही होगी।

६—बिना किना पूर्ण सूचना के पारस्थिति के अनुसार मूल्य में परिवर्तन करन का अविचार औपधालय का होगा।

७—आडर भेजते समय अपना नाम व पूरा पता साफ साफ लिखें।

८—प्रत्येक आडर के साथ मूल्य का चौथाई पेशगी आन पर ही माल भेजा जा सकेगा।



वि० सुभाषचंद्र बोस द्वारा लिखित एवं प्रकाशित प० आरंभाल जन  
संघाल—  
महानगर—  
महानगर—

## आद्य निवेदन

आज हम अपने श्रौचधालय का यह नया सूची-पत्र प्रकाशित करे हुए अत्यन्त ही प्रसन्न हैं कि हमारे इस श्रौचधालय का कार्य दिन प्रतिदिन वृद्धि का प्राप्त होता जा रहा है। बिना किसी विशेष प्रचार किये भी प्राइनों की सख्या की वृद्धि इतनी ही सफलता का विशेष प्रमाण है। किन्तु बिना प्राणिक एव गुरी न एक पार भी हमारे साथ व्यवहार कर लिया कि नर हमारी सच्चाई तथा श्रौचधालय की विशुद्धता को समझकर सदैव के प्राइन बनकर ही रहना है। यहाँ प्राणियों यह निवेदन कर देना भी अनुचित नहीं समझता है कि श्रौचधालय का उत्तमता पर ही स्वस्थ जीवन अवलम्बित है। श्रौचधालय में अधिक मूल्य एवं अल्प मूल्य के लोभ में अपने अमूल्य जीवन का नष्ट न कर देना ही बुद्धिमत्ता का काम है।

मर जाँ पर यह कार्य कई पीढ़ियों से होने के कारण तथा मर भी ३१ वर्ष के निजी अनुभवों में आये हुए अनेकों बार के परीक्षित, अनुभूत एवं सद्यफलप्रद योगों का संग्रह होना और अपनी ही पूजा देख रस में शास्त्रोक्त विधिपूर्वक उत्तम वनस्पतियों द्वारा श्रौचधालयों का निर्माण कराने के कारण भारतवर्ष के कई प्रान्त ( पू० पी० भी० पा०, पंजाब, मारवाड़, मध्य प्रदेश ) श्राद्ध के अभाव से प्राप्त किये हुए सह्या मरणमय रोगी जनसाध्य लाभ करते आ रहे हैं। अतएव इन योगों की अधिक माँग होने के कारण उक्त उत्तमोत्तम योगों को सदाचारण एवं लाभार्थ, विनियोग भी विशेष सफल कर रहा हूँ। आशा है कि जनता को यह श्रौच भी विशेष लाभ पहुँचाने में कारण बन सकेगा।

पत्र ( ग्राम ) में पहुँचने की अशुविधा के कारण मने श्रौचधालय के एक प्रांच कटारा गाँव, टाकमगढ़ में भी स्थापित कर दी है जिससे जनता को तथा सफल देनेवाली श्रौचधालयों में भी प्राप्त हो सकेगी।

हमारे श्रौचधालय के व्यवस्थित कार्य तथा चिकित्सानुभव को देखकर गौरवमय रूप, इनामों तथा राज्य के प्रमुख अधिकारियों एवं मान्य विद्वानों ने अनेक पुरस्कारसम्मानियाँ एवं सम्मानपत्र प्रदान कर खुद प्रोत्साहन दिया है। यथा निर्दिष्ट है कि श्रौचधालयों परीक्षित समय 'व्यादाँ जैन श्रौचधालय', यह नाम अस्सय रख लें।



## हमारे यहाँ की सहस्रों वार की परीक्षित और शीघ्र गुण दिखानेवाली उत्तमोत्तम औपधियाँ

स्याद्वाद अमृतसिन्धु—हेता, जी मिचलाना, वै, रन्त, माया घूमना, नेत्र, दाह, अरुचि, नर, सिन्धु वा मिष, शिरदद कुङ्कुमसौंठी, अजौर्ण, केर, फोड़ा, फन्ता, आदि पर समगण । की० १।) प्रति शशी

स्याद्वाद अर्क रूपा—हंजा तथा वै रन्त आदि की लोमोत्तम  
कीमत ॥।) प्रति शशी ।

स्याद्वाद अर्क पुदीना—समस्त प्रकार के क और र्वत में शक्ति आराम ।  
कीमत ॥।) प्रति शशी ।

स्याद्वाद पात्र—रगति रगा के रान की निरलता नाशक एव अत्यन्त धातु-पोषक ।  
कीमत ७।) प्रति शर ।

स्याद्वाद च्यवनप्रास—(अप्रवायुत)—समस्त जीण ज्वर एव क्षय (गी० शी०) भाँसी, श्वास, स्वर भंग, निरलता, प्रमहादि पर ।  
कीमत २॥) आधा पोण्ड ।

स्याद्वाद यकृत सीहान्तर अर्क—जीणज्वर, यकृत (लीर), साहाहृदि पाण्डु, शोथ, मलासोभ आदि उत्तर रोग पर ।  
कीमत ४॥।) प्रति घोटल २॥।) प्रति अद्धा ।

स्याद्वाद ज्वरकेशरी—इक्षतग, तिचारी, उन्नयनी, आदि फसनी ज्वर पर समगण ।  
कीमत १।३।) प्रति शशी ।

स्याद्वाद नेत्रमुशकर अर्क—टुलती दुह आँस, पलका वा सूजन, नेत्ररुल आदि में तबाल लाभदायक ।  
कीमत, चडी शशी ॥।) छोटी शशी १-)

स्याद्वाद राहातर अर्क—आँगा वं गहे, पलका की सूजन, नेत्ररुल आदि में लाभदायक ।  
कीमत ७।) प्रति शशी ।

स्याद्वाद शक्तिसचय रती—समस्त प्रकार के प्रमह, एव स्वप्नाय, धातु निरलता, शीघ्ररतन नाशक और अत्यन्त धातु पोषिक ।  
कीमत २॥।) प्रति पैकिट ।

स्याद्वाद नालामित्र—बलशोध (सुरारोग),

र, आँच, लौसी, पत्र, मगमि, यादि नो दूर पर बालका को अत्यन्त  
शुभ और शक्ति सम्पन्न करता है। कीमत १।) प्रति शीशी ।

स्यादाद ठडा मुरमा—नेत्रा की चलन, आँसू नटना, लानामी,  
यादि अल्लु सब्धी रोगों पर लाभप्रद । कीमत ॥) प्रति शीशी ।

स्यादाद मर्भारा का सुरमा—आँसू की बुद्ध, जाली, माड़ा,  
नापूल का नटना यादि में लाभप्रद । कीमत १) प्रति शीशी ।

स्यादाद प्रदरातक अशोक अर्क—इसे रक्त काला पाला  
त्र नखा ही भयकर प्रन्त रोगों में हो तथा और भी ब्रिया में समस्त  
में शक्तिया आराम । कीमत ८।) प्रति बोटल ।

स्यादाद सार्मापरिला—( उसना ना अक )—समस्त प्रकार  
र विकार एव कालान्ध कुष्ठ, मज्ज, खुजली, पोंडा, कुन्सी आदि रक्त  
र में समनाथ । कीमत ३।।) प्रति बोटल ।

तिजारी की लोकोत्तम दवा—सामने दिन तथा चौथे दिन  
नेपाले बुखार पर समनाथ । कीमत ५।।) प्रति शीशी ।

महानारायण तैल—सब प्रकारके बाल रोगों पर ।  
कीमत छोटा शीशी १।) बडा शीशी २।।) ।

स्यादाद ज्वरारि तैल—सब प्रकार के ज्वर, ज्वर (ग्री० बी०)  
न, रक्त प्रिसार आदि में लाभप्रद ।

कीमत छोटी शीशी १।) बडी शीशी १।।) ।

स्यादाद ब्राह्मी तैल—( स्वशब्द ) शिर के समस्त रोग एव  
रक्त, माया घूमना, शिर की चलन, स्मरण शक्ति का कम पाना,  
नेत्रके भी कमजारी नाशक । कीमत ॥।) प्रति शीशी ।

स्यादाद ब्राह्मी तैल—उपरोक्त गुणा से कुछ न्यून गुणाला ।  
कीमत ॥।) प्रति शीशी ।

स्यादाद आँवला तैल—( स्वशब्द ) मस्तिष्क की कमजारी  
की चलन नाशक और मनोहर मुग्धि दुक्त । कीमत ॥।) प्र० शी०

स्याद्वाद अँवला तैल—उपकार गुणों से दृढ़ न्यून ।  
 कामत ॥) प्रति शीशा ।

स्याद्वाद मौलश्री तैल—अत्यन्त सुखरुद्र ।  
 कामत ॥) प्रति शाशो ।

स्याद्वाद गृलाय तल " , ॥) " "

स्याद्वाद चमेली तैल " " ॥) " "

स्याद्वाद सतरा तैल " " ॥) " "

स्याद्वाद वाम—इना ही भरकर शिष्ट स्नान हो, मलते मलते

श्याराम । कामत ॥) प्रति शोशी ।

स्याद्वाद राजरिपु—जान, सुखी, घोड़ा, कुत्ती आदि में  
 लाभदायक । कामत ॥) प्रति ३ आँस शोशी ।

स्याद्वाद दद्रु प्रहार—बख हा भा ग स्नान हो शतिया  
 श्याराम । कामत ॥) प्रति ३ आँस शोशी ।

राजवटी—सब प्रकार की मल चपुतों से दवा ।  
 कामत ॥) प्रति ६० गोली पैकिट ।

नमक मुलेमानी—अत्यन्त स्वच्छ श्व नाचक ।  
 कामत ॥) प्रति ३ आँस शोशी ।

परपाल शत्रु—आँस क परबन (बाग शोशी) की अनुभूत दवा ।  
 कामत १) प्रति शी०

मुगधित वैसलीन—बन गत कानेवाली मनमोहक  
 मुगधियुक्त । कामत ॥) प्रति शी०

रणांमृत तल—कण्ठपाक, श्व द्रव्य का जखम, रक्तियन्त  
 कण्ठरक्त आदि में लाभदायक । कामत ॥) प्रति शी०

रपाल कृमि रेशरी—जिन श्व उन्नततम दवा ।  
 कामत १) प्रति शी०

उदर कृमि रेशरी—क  
 कामत १) प्रति शी०

कामत १) प्रति

स्याद्वाद टिचर—चाय की रस। कीमत ॥) प्रति शा०

विषम ज्वरातक अर्क—जीख चर तथा न वरुणि ज्वर पर।

कीमत ३॥) प्रति बोतल।

दर्दहर तल—स्थानक र्णों की अचूक र्वा। का० १॥) प्र० शी०

मुग्धित दत मजन—शक्ति के समस्त रोगों को दूर कर र्णों

मनधूत करनेवाला दवा।

कीमत ॥) प्र० शी०

स्याद्वाद गृहणी रिपु—समस्त प्रकार के दस्तों का उद करने

में अचूक।

कीमत प्रति पकिट ४० गोली २॥)

न्देहर पाँडर—सभी प्रकार के शरीरक दवा पर।

कीमत ॥) प्र० शी०

विच्छू विषहर पाँडर—विच्छू रिपु दूर करने की अचूक दवा।

कीमत ॥) प्र० शी०

शुद्ध शोधित हरे—अत्यन्त स्वादिष्ट पाचक।

कीमत १०० गोली ॥)

नकसीरातक पाँडर—किन्ही भी कारण से लून का उद्धार र्णों

में हो शक्तिवा न् करनेवाली दवा।

कीमत ॥) प्र० शी०

श्यास कासांतक गीडी—श्वास का रोग र्णों में अचूक।

कीमत एक पकिट १२ का ॥)

राभलातक पाँडर—पीलिया रोग की र्वा।

कीमत ॥) प्र० तोला

स्वदेशी चाय—यह चाय के समस्त दुग्धों में र्णित होने पर

भी पुत्राम, खँला, स्थानक र्द, गले का र्द

हृदयन शक्ति में तत्काल  
कीमत प्रति पकिट ॥)

लाभ र्णों है।

## शास्त्रोक्त औषधियाँ

असीक भस्म ( हृत् रोग, प्रमेह, प्रत्र )	२।।) प्रति तोला
असीक पिडी ( हृदय रोग, प्रमेह, प्रत्र )	३) "
अभ्रक भस्म न० १ ( नत्र, कस, रजस, रसायन )	६।) प्र० तान मा०
अभ्रक भस्म न० २ " " "	१०) प्र० तो०
अभ्रक भस्म न० ३ " " "	५) "
अग्निमुमार रस ( अर्णाण, सूक्ष्म, झाडा, अर्णामार )	।।।) "
अश्वकचुडी रस ( घोडाचोला रस ) रचक	१) "
अर्शातक पट्टी ( मगमार ने लिन )	१) "
अर्शातक लेप " "	।।) "
अद्भुत जुलाप ( इच्छानुमार रचक )	१) "
आनदभैरव रस न० १ ( अर्णामार, निरोप काम )	।।) "
आयला तैल न० १ स्थल ( अल्पन्त मुगधियुक्त )	।।।) प्र० शा०
आयला तैल न० २ " "	।।) "
इच्छाभेदी रस ( इच्छानुमार रचक )	१) प्र० तो०
उदर सफा चूर्ण ( रचक )	।।) "
एलादि गुटिका ( ज्वर रोग, मस )	।।।) "
रुफमुटार रस न० १ ( कस, रजस, कष )	२) "
रुफमुटार रस न० २ ( कष, रजस, चर )	।।।) "
रुफमेनु रस ( पीनस रजस, कस )	६) "
रुफरादि पट्टी ( स्तानी रोग )	२।) "

रम्भरी भरव रस (धार तन्निपात)	४) प्र० तीन माशा
रुर्षर रस (प्रतीकार)	७) प्रति ताला
रात वोट भस्म (साल्मता, शोध ताण्डु)	१०) "
रास्य भस्म (उत्तरेण क्रमि दुः)	१) "
किगोर गुल्गुलु	॥७) "
रुष्टातक लेप	१) "
रुमरुमादि वटी (स्त्री, रस)	८) "
रुमिमुद्गर रस (उत्तरेण क्रमि नाशक)	९) "
रुमुत्तर रस (चर, वान, शमान, यन्त्र)	५) "
गलित रुष्टातक रस	६) "
गण्डमालाकडम रस (गलगा, कर्ममाल)	११) "
गंधक वटी (न्यादिष्ट पाचक)	११) "
गामेट पण्डि भस्म (लय, पाण्डु, प्रल)	५॥८) तीन माशा
गोदती हरताल भस्म (काम, वध, पत्र)	॥१) प्रति तो०
गृष्णीरुपाट रस न० १ (गृष्णी, प्रतीकार)	१) "
गृष्णीरुपाट रस न० २ ( " " )	२) "
गृष्णी रिपु (सर्प रस रसक)	२॥१) पैकिट
चद्रप्रभाञ्जन (नेत्र दुः, जाला)	१॥१) प्र० ताला
चद्रप्रभागुटिका न० १ (सर्पमेह र शक्तिधर)	१॥१) "
चद्रप्रभा गुटिका न० २ ( " " )	१) "
चितामणि रस (सर्प रसाशक)	२॥१) "

च्यवनप्रास अक्लेन (अष्ट मा पुत्र)	२॥) पै० २० तोला
जहरमोहरा भस्म	५) प्रति तोला
जहरमोहरा पिष्टी (तृप्त, प्लनधर)	६) प्र० तोला
जयमगल रस (जापु नियमन्त्र)	४॥) ,, तीन माशा
जातिफलादिगुटिका (रुद्रशूल, अतीमार)	३) ,, तोला
ज्वरमुरारि रस (धन ज्वरनाशक)	१०) ,, ,,
ज्वरशेशरी पटी (ज्वरनाशक, रेचक)	१॥) ,, ,,
तालसिद्धर (रुद्रशाधक, कृमिघ्न)	८) ,, ,,
ताम्रसिद्धर (स्वाम, भुच्छा, मतिपतमे उपजागा)	८) ,, ,,
तृणकातमणि भस्म (शिरशूल, रूपागम)	१२) ,, ,,
तृणकातमणि पिष्टी ( ,, ,, )	१३) ,, ,,
ताम्रपर्पटी रस (श्याम, हिक्का)	८) ,, ,,
ताम्र भस्म (तामेश्वर रस) श्याम, क्षय, त्रिनेत्र	४) ,, ,,
त्रिभुवनकीर्ति रस (ज्वर, मतिपातम)	१) ,, ,,
त्रिवेग भस्म (प्रमेह, प्रन्ध, कास, श्वास)	४) ,, ,,
दुग्धवटी (शोथ, मन्नाग्नि)	॥॥) ,, ,,
नयनामृत अञ्जन	१॥) ,, ,,
नरुसीरातरु पौडर (नरुसीर की रसा)	॥॥) ,, ,,
नवायस लाह (पाण्ड, शोथ, रुद्राल्पता)	२) ,, ,,
नागेश्वर (नागभस्म) कीर्तिवाह, प्रन्ध,	३) ,, ,,
नाराच रस (रेचक, गुल्म, नाद्या, उपजागा)	१) ,, ,,

नीलम भस्म (द्वय, मन्तिष्कनिवार)	६।) प्रति तान माशा
पचामृतपर्पटी रस	४) प्रति तोला
पन्ना भस्म (सज्जपात)	७।) " "
पाण्ड भस्म (पाण्डिक, स्वयम्भुव)	१०) प्र० तोला
पुष्पराग भस्म (द्वय, मन्तिष्कनी-रुत्यानाशक)	१।) " "
पुनर्नयामहर (पाण्डु, शोथ, रक्ताल्पतानाशक)	२) " "
प्रतापलङ्केश्वर रस (प्रसूतयोग, सज्जपात)	२) " "
प्रमृतपल्लभ रस (प्रसूतयोग, घोर सज्जपात)	५) " "
पूर्णचन्द्रोदय रस (क्लन्ताय आयुवधन)	११।) " तीन माशा
प्रवाल भस्म न० १ (अजलीयोग) कास श्वास	५) " तोला
प्रवाल भस्म न० २ (लम्घयोग) कास श्वास	३) " "
प्रवाल भस्म न० ३ (वनपतियोग) " "	२) " "
प्रवाल पिष्टी (गहनिश्लता)	३) " "
प्रवालपंचामृत रस (श्रानाद, क्षीहा, कास, प्रमेह)	१३) " "
वराटिका भस्म (तीपन, पाचन, वगन्नाय)	१।) " "
उगेश्वर (रगभस्म) प्रमेहनाशक, पाण्डक	३) " "
त्रिजयादि वटी (उदरयोगोपर तथा पाण्डक)	१।) " "
शतविधरस रस (समस्त शत रोगाम लाभदायक)	३।।) " "
शतगजकेशरी (मन्त्रात् रुद्धन्ती)	२।।) " "
चन्द्रानार चूर्ण (गुल्मशूल, शोथनाशक)	१।) " "
वासादि अम्लेह (रक्तपित्त, कास, म्वरभग)	२।।) प्रति पेकिट



राधा वैल (लेख) नं० १	१
राधा वैल नं० २	२
मन्त्रमिदू (५, ६, ७, ८)	३
मन्त्र वस्तु (१, २, ३)	४
महाजगद्गुरु स्तुति (१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०)	५
महामृत्युञ्जय स्तुति (१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०)	६
मण्डूक्य भाष्य (१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०)	७
महाताञ्जाटि वैकुण्ठ (१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०)	८
महाताञ्जाटि वैकुण्ठ (१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०)	९
महाचन्द्रनाटि वैकुण्ठ (१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०)	१०
महाचन्द्रनाटि वैकुण्ठ (१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०)	११
महाविषण्वर्ष वैकुण्ठ (१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०)	१२
महाविषण्वर्ष वैकुण्ठ (१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०)	१३
महासंगणक (१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०)	१४
साहित्य (१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०)	१५
मयनांगण	१६
साहित्य (१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०)	१७
महाचक्र (१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०)	१८
मुक्तामय (१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०)	१९
मुक्तामय (१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०)	२०
मुक्तामय (१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०)	२१
मुक्तामय (१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०)	२२
मुक्तामय (१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०)	२३
मुक्तामय (१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०)	२४
मुक्तामय (१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०)	२५

मृतसञ्जीवनी रस (धार मन्त्रिपान)	२॥) प्रति तो वा
यवक्षार	॥॥) " "
यशदभस्म (जीर्णज्वर, नत्र, प्रमं)	७) प्रति तोला
यागराज गुग्गुलु (भोग ज्ञान साध)	१) " "
रससिद्ध न० १ (प्रमं धात्री मल्लिका)	१०) " "
रससिद्ध न० २ ( " " )	४) " "
रसमाणिक्य न० १ (यश्मा, ज्वर, काल)	२०) " "
रसमाणिक्य न० २	७) " "
रसपर्पटी (मन्त्राग्नी, ग्रामजात)	२) " "
रससागर (खनिपात, ज्वर, काल)	५) " "
रौप्य भस्म (सन्निवन्धक)	१०) " "
गण्यमाञ्जिक भस्म (प्रमं, तोष कुष्ठ)	१॥) " "
रामनाथ रस (मन्त्राग्नि, मन्त्रहन्त्री)	१) " "
महालक्ष्मीविलास रस (मन्त्रिपानर प्रसिद्ध)	७) " "
लवगादि वटी (मन्त्राग्नि)	॥॥) " "
लोहपर्पटी	५) " "
लोहभस्म नं० १ (पाण्डु, शोथ, रजाल्पता)	४) " "
लोहभस्म नं० २ ( " " )	२) " "
रसतन्मुमुक्षुर रस (निम्बला, प्रमह)	७॥) प्र० तीन म
वसन्तमालती (न्यण्युक्त) जाश्वर, क्षत्र	१) " "
वसन्तमालती लघु (जाश्वर)	२) प्रति तो

वीरभद्र रस (सन्निपात, ज्वर, काष्ठ, रक्त)	२॥॥	प्रति तोला
विषमज्वरातर लोह (जोषज्वर, रूपाल्पता)	४॥	" "
व्योपादिपट्टी (प्रतिशय, स्वप्ना, कर्म)	॥॥	प्रति तोला
भीमसेनी रूपूर न० १	५॥	" "
शखभस्म (उत्तर राग)	१॥	" "
शखवटी (सर्व अजीर्ण, भिखूची, शूल)	॥॥	" "
शुन्ना भस्म	१॥	" "
शम्भूर भस्म (पीपल, पाचन, घ्राह्य, ताक्ष्य)	॥॥	" "
शिलाजीत सत्प (नलानामवन, रमाया)	४॥	" "
शिलाजीत न० १	१॥	" "
शिलाजीत न० २	॥॥	" "
शौक्त भस्म	॥॥	" "
शूलगज केशरी (हर प्रकार न उत्तर शूल में)	२॥॥	" "
श्वास कुटार रस (नास, श्वास, कफ, श्वा)	१॥	" "
श्वास चितामणि रस (श्वास, काम, कर्मा)	१०॥	" "
श्रद्धागज भस्म (काष्ठ, श्वास, कफ, सात्रगत)	॥॥	" "
पड्मिदु तैल (धिरोगेणो म लाभप्रद)	१॥	२ आंस शीशी
सिद्ध मकरभयज	५॥	प्र० तीन माशा
समीरगज केशरी (कन्द, जल, मदनजल, उदगी)	३॥	प्रति तोला
सजीवनी पट्टी (सन्निपात, श्रद्धाण)	१५॥	" "
सगवस भस्म (हृदय राग)	४॥	" "

सगजराहत भस्म	१) प्रति तोला
सगयहूद भस्म ( प्रमद, अशमरी )	२॥) " "
सगयहूद पिष्टी ( प्रमद, अशमरी )	३) " "
सौभाग्य भस्म	॥) " "
श्वेत कुष्ठहर लेप	१॥) " "
स्तम्भन घटी ( पौष्टिक तथा उल गायवधक )	५) " "
स्वर्णमाक्षिक भस्म ( प्रमद, कण्टरोग )	२) " "
स्वर्ण भस्म ( शीतल, कारि व क्लृप्तक )	५०) ,, तीन माशा
स्वर्ण पर्पटी रस ( मद्रन्शी, शोध, दार )	१०) , "
स्वर्णराज वगेश्वर ( सप्त प्रमेह नाशक )	) प्रति तोला
मृत शोखर रस ( अम्लपित्त, निशूल नाशक )	१२) ,, "
क्षय केशरी रस ( यक्ष्मा, उदर, काल, रुक )	५॥) ,, तीन माशा

### वनस्पतिक तैल

तार्गपिन तल	४) पा०	कास्टान्ल	२॥२) पाड
दाल गीनी तैल	१॥) ओंस	यूकिलिष्टज तैल	१०॥) पाड
लॉग तैल	२॥) ओंस	साफ तैल	॥२) ओंस
अजवायन तैल	१॥) "	चदन तैल	२॥) "
इलायची तन	१॥) "	पिपरमिट तैल	५॥) "

## चिकित्सा-सम्बन्धी उपकरण

शरीर तापमापक ( थर्मामीटर )	गठना क्वालिटी	४॥॥
शरीर तापमापक ( थर्मामीटर )	घाटना क्वालिटी	३॥॥
दवाइ मिलान की छुरी	गठना ( स्पेटुला )	१॥॥
गर्म पानी की रबड की पातल ( होटवाटर सेतल )		५॥॥
रकार्ड सिंरिज उदिया क्वालिटी २ सा सा		९
” ” ” ५ सी सा		११
” ” ” १० सा सी		१४
नीडिल ( मृ )	गठना क्वालिटी	॥॥॥
प्रोप ( गलाफा )	मरग्न पटी मा	॥॥
ऑख में वृद्ध डालने की शीणी		१॥॥॥
मान तथा नास के भीतर देखने का यंत्र		२॥॥
मान की पिचकारी	काच की छोटी	१=)
” ” ”	” बड़ा	२=)
मान की पिचकारी	गामल की छोटी	८॥॥
मान की पिचकारी	” बड़ा	१०॥॥
द्रव आपथ मापक ग्लास	छोटी	१-)
” ” ”	बड़ा	-)
ऑख में अर्क डालने की पिचकारी		१॥॥
” ” ”	उदिया	३) ”
फेंची ( सीजर्स )	”	२)
चाक ( स्क्वायर )	उदिया	५॥॥
विन्दुर्ग	( फोदा कुछी चींगने को )	५॥॥
विन्दुरी न० २	”	२॥॥

## विशेष सूचनाये

- १—इनके अतिरिक्त सखा शरण के लाभार्थ रूम, भस्म, चूर्ण, गोलियाँ प्रक, अत्रले, मुगधित तेल, मलहम आदि सब प्रकार की दवाइयों विनयाप हमेशा तैयार रहना है।
- २—सब प्रकार के आयुनादक व अमेजा इजेक्शन और न्वाइया के मिलने का भी प्रबंध है।
- ३—आँखा की परीक्षा कर अन्त मूल्य पर चश्मा के मिलने का भी प्रबंध है।
- ४—शालग्रोप, सूमारोग, सप, मिच्छू तथा पागल स्थाल, कुत्ता आदि के भयकर प्राण हर निपास आयुधापचार एवं मन-तनोपचार द्वारा आनोम्य लाभ प्राप्त कराने का भी प्रबंध है।
- ५—ज्योतिष सम्बन्धी कार्यों (महर्त शोधन, वपफल, जमपत्रा-फल आदि) की भी व्यवस्था है।
- ६—प्रतिष्ठा सम्बन्धी समस्त काथा व कराने तथा धातु पर पुत्रे हुए सुन्दर स्त्रियों के मिलने का भी प्रबंध है।
- ७—नौ गंगोवन चहों आने में अत्यमथे हैं उनकी चिकित्सा डाक द्वारा करने का प्रबंध है।

—सचालक









- जैन -

व्रत-विधान संग्रह

---

पण्डित वारेलाल जैन राजवेद्य

---

“जैन व्रत विधान संग्रह”

पर

अभिमत

आपने यह संग्रह महान् परिश्रम से किया। एक ही पुस्तक से व्रत-विधान सरलता से मिल सकता है आपका परिश्रम प्रशसनीय है।

पौष वदि नवमा

सवत् २००८

आ० शु० चि०

गणेश वर्मा